विक्रम संवत् 2080 ▪ फाल्गुन/चैत्र मास(01) ▪ 01 मार्च 2024 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

युवाओं, बहनों-बेटियों, किसानों और गरीबों का सपना ही मोदी का संकल्प

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

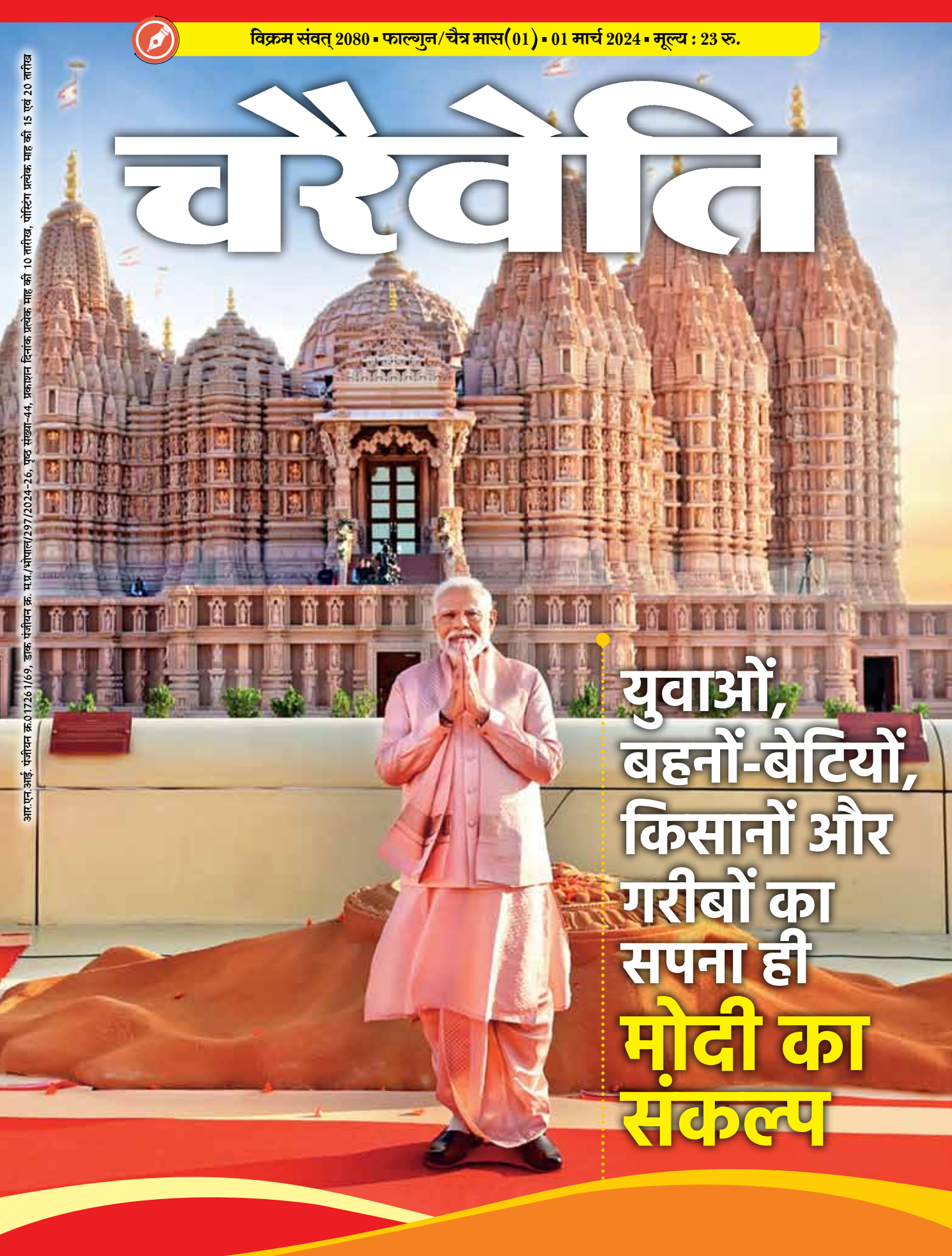

- भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जम्मू में गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

- केन्द्रिय मंत्री श्री अमित शाह जी ने मतंगेश्वर मंदिर, खजुराहो में पूजा-अर्चना की।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संसद में धार्मिक नेताओं के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री कल्कि धाम मंदिर की आधारशिला रखी।

- श्री जे. पी. नड्डा जी ने राष्ट्रव्यापी ''संकल्प पत्र सुझाव अभियान'' और ''विकसित भारत - मोदी की गारंटी रथ'' लॉन्च किया।

- केंद्रीय मंत्री श्री अमित शाह जी ने भोपाल में श्री कुशाभाऊ ठाकरे जी की प्रतिमा का अनावरण किया।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'विकसित भारत, विकसित मध्य प्रदेश' कार्यक्रम में कई विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी और राष्ट्र को समर्पित किया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय • संजय गोविन्द खोचे 04

- 2024 चुनाव- विकसित भारत के लिए

कवर स्टोरी 05

- युवाओं, बहनों-बेटियों, किसानों और गरीबों का सपना ही मोदी का संकल्प

05

16

- **देश का गौरव** 10
  - » देश के उज्जवल भविष्य की गारंटी है जनजातीय समाज...
- **तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था की गारंटी** 13
  - » तीसरे जनादेश से भारत तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था बनेगा...
- **लक्ष्य-तीसरे नं. की अर्थव्यवस्था :** 15
  - » विकसित भारत के संकल्प का बजट - विष्णुदत्त शर्मा...
- **विकसित भारत-निर्माण :** 16
  - » तीसरा कार्यकाल अगले हजार वर्षों की मजबूत नींव रखेगा...
- **विकसित भारत-निर्माण :** 23
  - » 2047 तक विकसित भारत-अमित शाह ...
- **समृद्ध भारत-सुरक्षित भविष्य :** 24
  - » भारत एक अभूतपूर्व इकोनॉमिक सक्सेस स्टोरी...
- **संकल्प से सिद्धि :** 27
  - » स्वामी नारायण मंदिर भारत-यूएई के रिश्तों का आध्यात्मिक प्रतिबिंब...
- **विजय का संकल्प :** 29
  - » आने वाला चुनाव भारत को महान बनाने का चुनाव है- अमित शाह
- **ऐतिहासिक 17वीं लोकसभा :** 31
  - » अधूरे सपने 17वीं लोकसभा के माध्यम से पूरे हुए ...
- **मन की बात :** 34
  - » देश की विकास यात्रा में नारी-शक्ति के योगदान को नमन...
- **पर्व विशेष :** 39
  - » समरसता का संदेश देता होली पर्व...
- **विचार प्रवाह : पं. दीनदयाल उपाध्याय** 40
  - » आत्मिक सुख की आवश्यकता...
- **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 42
  - » सत्ता

• मुख्य व्रत-त्यौहार

3. सीताष्टमी 6. विजया एकादशी व्रत 8. प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि व्रत 10. स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 11. चन्द्रदर्शन 12. फुलरिया दोज 13. विनायकी चतुर्थी व्रत 16. रोहिणी व्रत 17. अष्टान्हिका व्रत 25 तक 20. आमलकी, रंगभरी एकादशी 21. गोविन्द द्वादशी 22. प्रदोष व्रत 24. व्रत पूर्णिमा, होलिका दहन 25. होली उत्सव, स्नान दान पूर्णिमा 26. षोडषकारण व्रत प्रारम्भ 27. भाई दोज, भ. चित्रगुप्त पूजा 28. गणेश चतुर्थी व्रत 30. रंगपंचमी 31. एकनाथ छठ

• मुख्य जयंती-दिवस

8. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, लोधेश्वर दिवस, नटराज नटेश्वर महादेव जयंती, स्वामी दयानंद सरस्वती बोधोत्सव 12. स्वामी रामकृष्ण परमहंस जयंती 20. योगेश्वर दयाल जयंती, रानी अवंतीबाई लोधी बलि. दि. 21. राष्ट्रीय शक नववर्ष 1946 प्रारंभ, ओशो संबोधि दिवस 23. भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू श. दि. 24. विश्व क्षय रोग दिवस 25. श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु जयंती, गणेश शंकर विद्यार्थी बलिदान दिवस

वर्ष-55, अंक : 01, भोपाल, मार्च 2024

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

समृद्धि का आधार धर्म है। इस संबंध में हम पाते हैं कि हमारा आधार धर्म, अभावात्मक नहीं है। हमारे यहां अभाव का नहीं संयम का विचार किया गया है। सादा जीवन का विचार किया गया है, धन पैदा किया तो उसका उपयोग धर्मानुसार करना चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

2024 चुनाव- विकसित भारत के लिए

एक तरफ 11वीं अर्थव्यवस्था बनने में 70 वर्ष, दूसरी तरफ 11वीं से पांचवी अर्थव्यवस्था बनने में 10 वर्ष। तुलनात्मक अध्ययन करने में मतदाता को दुख: ही हाथ लगता है-की काश परिवर्तन पहले ही कर दिया होता तो आज देश कहीं और होता। पांचवी अर्थव्यवस्था बनने का ही परिणाम है 25 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से बाहर आ गए हैं। यही विकसित भारत का संकल्प है।

17 वीं लोकसभा का कार्यकाल समाप्त होने जा रहा है। 18वीं लोकसभा के चुनाव के लिए देश तैयार है। देश ने अपना मूड बना लिया है। जिसका संकेत मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ के चुनाव में जनता ने प्रकट भी कर दिया है। देश अब लंबी दौड़ के लिए तैयार है। देश की जनता के पास एक तरफ 70 साल का शासन तथा दूसरी तरफ 10 वर्षों के शासन का तुलनात्मक अध्ययन, अनुभव व ज्ञान उपलब्ध है। मतदाता अपने मत की कीमत समझ चुका है। मतदाता को मालूम है उसका एक मत, देश को दिशा देने में सहायक है। मतदाताओं के एक-एक वोट की ताकत के कारण ही देश की दशा व दिशा में बदलाव आया है। तभी तो पहली बार मतदाता बने युवा बढ़- चढ़कर देश के लिए वोट करने निकलते हैं। 70 साल का कार्यकाल व 10 वर्षों का कार्यकाल, कोई तुलना की जगह ही नहीं है। इन 10 वर्षों में देश ग्यारहवीं अर्थव्यवस्था से विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। अटलजी ने 11वीं अर्थव्यवस्था पर देश को छोड़ा था, फिर 10 वर्ष के मां-बेटे और महान अर्थशास्त्री के शासन के बाद भी देश 11वीं अर्थव्यवस्था पर ही रहा।

एक तरफ 11वीं अर्थव्यवस्था बनने में 70 वर्ष, दूसरी तरफ 11वीं से पांचवी अर्थव्यवस्था बनने में 10 वर्ष। तुलनात्मक अध्ययन करने में मतदाता को दुख: ही हाथ लगता है-की काश परिवर्तन पहले कर दिया होता तो आज देश कहीं और होता। पांचवी अर्थव्यवस्था बनने का ही परिणाम है 25 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से बाहर आ गए हैं। यही विकसित भारत का संकल्प है। 10 वर्षों में देश ने जिस उमंग, उत्साह व गति से विकास को अपनाया है वह स्वागत योग्य है। अब भारत छोटे-छोटे लक्ष्य नहीं, बड़े से बड़े लक्ष्य निर्धारित कर उसे समय से पहले हासिल कर लेता है। दुनिया का नजरिया भारत के प्रति एकदम बदल गया है। दुनिया मानने लगी है भारत के सपने भी विराट है। संकल्प भी विराट हैं। अब वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर और आगे दौड़ने के लिए अपना लक्ष्य घोषित करेगा। 10 वर्षों का बेदाग कार्यकाल, 11वीं से पांचवी अर्थव्यवस्था, 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर आना, करोना के संकट काल में जब सारे विश्व की अर्थव्यवस्था डूब रही थी तब भारत के दरवाजे पर विदेशी निवेश लाइन लगाकर खड़ा था- 10 वर्ष के कार्यकाल की शानदार उपलब्धियां है।

अब भारत ना आंखें झुका कर बात करता है, ना आंखें उठा कर बात करता है, आंखों में आंखें डाल कर बात करता है। अयोध्या में राम मंदिर का भव्य शुभारंभ करता है, तो यूएई में स्वामी नारायण मंदिर का स्वर्णिम अध्याय लिखता है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा फहराता है, तो समुद्र की गहराई में भी खोज करता है। इनोवेशन पर नए अध्याय लिखता है, तो महिलाओं के लिए प्रगति के सभी दरवाजे खोल देता है। 50 करोड़ नए बैंक खाता खोलता है, तो 30 लाख करोड़ की सहायता राशि बिना लीकेज के हितग्राहियों के खातों में पहुंचता है, जम्मू कश्मीर के प्रगति में बाधा बनी सभी बेड़ियो को तोड़कर जम्मू कश्मीर को मुख्य धारा में लाकर ऊंची उड़ान के लिए तैयार करता है, तो नॉर्थ ईस्ट में शांति व प्रगति को सुनिश्चित करता है। आतंकवाद को घर में घुसकर समाप्त करता है, तो नक्सलवाद को भी अंतिम सांस लेने के लिए मजबूर करता है। 80 करोड़ गरीबों को प्रतिमाह 5 किलो प्रति व्यक्ति मुफ्त अनाज 5 वर्षों तक देने की गारंटी लेता है, तो 12 करोड़ से ज्यादा शौचालय बनवाकर माता बहनों के सम्मान की रक्षा करता है। 2014 से पहले महिला सुरक्षा मुद्दा हुआ करता था, चिंता बनी रहती थी, अब 2024 में अपराधी अपराध करने में सरकार के कानून के खौफ से घबराया घूमता रहता है। 10 करोड़ परिवारों की महिलाओं को रसोई के धुएं से मुक्ति मिलती है तो चार करोड़ मकान में से 3 करोड़ मकान की रजिस्ट्री महिलाओं के नाम होती है। तीन तलाक इतिहास बन जाता है।

आज देश का एक भी गांव ऐसा नहीं है जहां बिजली ना हो, बिजली ना पहुंची हो, तो नल से जल गांव-गांव में हकीकत बन रहा है। राजपथ कर्तव्य पथ बनता है, गुलामी के चिन्ह समाप्त होते हैं, नेताजी की प्रतिमा का अनावरण होता है, सेंगोल आजादी के पवित्र क्षण का प्रतिबिंब बनता है तो विपक्ष के नेता चिल्लाते हैं, मानते हैं, बोलने लगते हैं- मोदी जी अबकी बार 400 पार। विपक्ष के नेता लोकसभा से राज्यसभा में शिफ्ट होने लगते हैं। लोकसभा का निर्वाचन क्षेत्र बदलते हैं। तो कुछ नेता पार्टी से ही पलटी मार जाते हैं। कुछ नेता दर्शक दीर्घा से सदन कैसा दिखेगा कल्पना करने लगते हैं। तो कुछ विपक्ष के नेता चुनाव में लड़ने से बचने का मार्ग खोजते हैं।

भारत को अब अटकाना, लटकाना, भटकना मंजूर नहीं। 10 वर्षों में जिस समर्पण व गति से कार्य हुए हैं, वही स्पीड व स्केल चाहिए। अब भारत आगे देख रहा है। भारत ''वसुधैव कुटुंबकम'' का पालन करता है पूरा विश्व भारत की प्रगति के प्रति उत्साहित व आशान्वित है और भारत की प्रगति में अपना भविष्य देख रहा है। तभी तो कहीं से भी 2024 के चुनाव के परिणाम के प्रति कोई संशय बाकी नहीं है। शायद यह पहला चुनाव है जिसमें जनता का मूड पूरी तरह स्पष्ट है। मोदी जी के प्रति भरोसा, जनता की आशाएं, 2024 के चुनाव को केवल एक औपचारिकता का रूप देती हैं। लोकतंत्र में जनता का निर्णय सर्वोपरि होता है। सरकार वही बनाएगा जिसको जनता का आशीर्वाद प्राप्त होता है। जनता अनुभव के आधार पर आशा, भरोसा व विश्वास के साथ अपने वोट के रूप में आशीर्वाद से झोली भरेगी। इतना भारी भरोसा, इतना भारी आशीर्वाद, इतना बड़ा आशीर्वाद मोदी जी की जिम्मेदारी को और बढ़ा देते हैं। भारत अपने भविष्य की गाथा लिख रहा है। इतिहास जनता के भरोसे व आशीर्वाद का कारण खोजेगा और भावी पीड़ियां आज के मतदाताओं के निर्णय की सराहना करेंगीं। और क्यों न हो - भारत लोकतंत्र की जननी भी है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

युवाओं, बहनों-बेटियों, किसानों और गरीबों का सपना ही मोदी का संकल्प

भाजपा का कार्यकर्ता, साल के हर दिन, चौबीसों घंटे देश की सेवा के लिए कुछ न कुछ करता ही रहता है। लेकिन अब अगले 100 दिन, नई ऊर्जा, नया उमंग, नया उत्साह, नया विश्वास, नए जोश के साथ काम करने का है। इस कालखंड में जो युवा 18 वर्ष के पड़ाव पर पहुंचे हैं वो देश की 18 वीं लोकसभा का चुनाव करने वाले हैं। अगले 100 दिन हम सबको जुट जाना है, हर नए वोटर तक पहुंचना है, हर लाभार्थी तक पहुंचना है, हर वर्ग, हर समाज, हर पंथ, परंपरा सब लोगों के पास पहुंचना है, हमें सबका विश्वास हासिल करना है। और जब सबका प्रयास होगा तो देश की सेवा के लिए सबसे ज्यादा सीटें भी बीजेपी को ही मिलेगी।

मुझे पदाधिकारियों के साथ बैठने का अवसर मिला। जब मैं पदाधिकारियों की बैठक में साल भर के काम का रिपोर्टिंग सुन रहा था। मैं इतना प्रभावित हुआ कि भाजपा के कार्यकर्ता सत्ता में रहने के बावजूद भी समाज के लिए इतना करते हैं। दिन-रात दौड़ते हैं। संकटों के बीच भी करते हैं। और सिर्फ और सिर्फ भारत मां की जय के लिए करते हैं। ये दो दिन भी जो चर्चा हुआ है, विमर्श हुआ है देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे संकल्प दृढ़ करने वाली बातें हुई है।

मैं समस्त देशवासियों की तरफ से संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज को श्रद्धापूर्वक आदरपूर्वक नमन करते हुए श्रद्धांजलि देता हूं। उनके संल्लेखन समाधिस्थ होने की सूचना मिलने के बाद उनके अनुयायी शोक में हैं, हम सभी शोक में हैं। मेरे लिए तो यह एक व्यक्तिगत क्षति जैसा है। वर्षों तक मुझे व्यक्तिगत रूप से अनेक बार उनसे मिलने का, उनके दर्शन करने का, उनके मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर मिला है। कुछ ही महीने पहले ऐसा ही मन कर गया था मेरे प्रवास कार्यक्रम को बदल करके बहुत सुबह-सुबह मैं उनके पास पहुंच गया था। तब पता नहीं था कि मैं दुबारा... उनके दर्शन नहीं कर पाऊंगा। ये मेरा सौभाग्य रहा है कि पिछले 50 से भी ज्यादा वर्षों से मुझे देश के गणमान्य आध्यात्मिक मूर्तियों के निकट रहने का, उनके आशीर्वाद पाने का अवसर रहा है। और इसीलिए मैं उस आध्यात्मिक जगत की उस शक्ति को भली-भांति जानता हूं, समझता हूं, अनुभव करता हूं। आपको सुनके आश्चर्य होगा कि वे तो दिगंबर परंपरा से थे उनका जीवन कैसा होता है हम जानते हैं। लेकिन शायद ही कोई महत्वपूर्ण घटना ऐसी नहीं होगी या मेरी तरफ से कुछ महत्वपूर्ण... किसी काम में मेरा संबंध आया हो, 24 घंटे के भीतर-भीतर उसका एनालिसिस करके मुझे उनका संदेश आता था। यानि कितने जागरूक थे। अपनी इतनी विराट आध्यात्मिक यात्रा के बाद भी वो हम सबको हमेशा प्रेरणा देते रहे हैं। जीवन भर इतनी सौम्यता के साथ लोगों से मिलते रहे। उन्होंने हमारे युवाओं को परंपराओं से जोड़ा, गरीबों तक शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाएं पहुंचाईं। उनका पूरा जीवन हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा जैसा है, जिसने गरीबों और वंचितों के लिए काम करने का संकल्प लिया है। आज जब भारत प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है, मुझे ये विश्वास है कि उनके सिद्धांत और उनका आशीर्वाद ऐसे ही भारत भूमि को प्रेरणा देते रहेंगे।

आज भाजपा, युवा शक्ति, नारी शक्ति, गरीब और किसान शक्ति को विकसित भारत के निर्माण की शक्ति बना रही है।

पहले लोगों को लगता था कि सरकारें बदलती हैं, व्यवस्था नहीं बदलती। हमने सच्चे अर्थ में सामाजिक न्याय की भावना से हर व्यवस्था को पुरानी सोच, पुरानी अप्रोच से बाहर निकाला।

पिछले 10 वर्षों में भारत ने जो गति हासिल की है, बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करने का जो हौसला पाया है, वो अभूतपूर्व है। इसलिए नहीं कि मैं कह रहा हूं, दुनिया गाजे-बाजे के साथ बोल रही है। भारत ने आज हर क्षेत्र में जो ऊंचाई हासिल की है, उसने हर देशवासी को एक बड़े संकल्प से जोड़ दिया है। और ये संकल्प है- विकसित भारत का। अब देश न छोटे सपने देख सकता है और देश न अब छोटे संकल्प ले सकता है। सपने भी विराट होंगे, संकल्प भी विराट होंगे। और ये हमारा सपना

भी है, हम सबका संकल्प भी है कि हमें भारत को विकसित बनाना है। और इसमें अगले 5 वर्षों की बहुत बड़ी भूमिका होने जा रही है। अगले 5 साल में भारत को पहले से भी कई गुना तेजी से काम करना है। अगले 5 साल में हमें विकसित भारत की तरफ एक लंबी छलांग लगानी है। लेकिन सारे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए, पहली शर्त है- सरकार में भाजपा की जोरदार वापसी। आज विपक्ष के नेता भी NDA सरकार 400 पार के नारे लगा रहे हैं। और NDA को 400 पार कराने के लिए भाजपा को 370 का माइलस्टोन पार करना ही होगा।

कई बार लोग मुझसे कहते हैं... अरे मोदी जी आपने इतना तो सब कुछ कर लिया। जो बड़े-बड़े संकल्प आपने लिए वो तो पूरे कर लिए। अब क्यों इतनी भागदौड़ करनी...?

पूरा देश मानता है...10 साल का बेदाग कार्यकाल और 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालना ये सामान्य उपलब्धि नहीं है।

पूरा देश मानता है... हमने देश को महाघोटालों और आतंकी हमलों के खौफ से मुक्ति दिलाई है।

पूरा देश मानता है... हमने गरीब और मिडिल क्लास का जीवन बेहतर करने का प्रयास किया है। लेकिन जो लोग सोचते हैं कि अब बहुत हो गया, ऐसा सोचने वालों को मैं एक पुरानी घटना जरूर बताना चाहूंगा। एक बार एक नेता मुझे मिले। मेरे प्रधानमंत्री पद के दूसरे कार्यकाल में। बोले मोदी जी प्रधानमंत्री बनना बहुत बड़ी बात है, आप बन गए। आपने इतने दशकों तक संगठन में काम किया। फिर मुख्यमंत्री के रूप में सेवा की। आप प्रधानमंत्री के रूप में भी दुबारा आ गए। अब जरा बैठो, आराम करो, बहुत कर लिया। ये उन्होंने मुझे कहा था। उनकी वो भावना राजनीति के पुराने अनुभवों से थी। लेकिन हम राजनीति के लिए नहीं राष्ट्रनीति के लिए निकले हैं। हम तो छत्रपति शिवाजी महाराज को मानने वाले लोग हैं। जब छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ तो उन्होंने ये नहीं किया कि अब तो छत्रपति बन गए, सत्ता मिल गई तो चलो उसका आनंद लो। उन्होंने अपना मिशन जारी रखा। ऐसे ही, उनसे प्रेरणा लेकर के मैं अपने सुख वैभव के लिए जीने वाला व्यक्ति नहीं हूं। मैं बीजेपी सरकार का तीसरा टर्म, सत्ता भोग के लिए नहीं मांग रहा हूं। मैं राष्ट्र का संकल्प लेकर निकला हुआ व्यक्ति हूं।

अगर मैं अपने घर की ही चिंता करता तो आज करोड़ों गरीबों के घर नहीं बना पाता। मैं देश के करोड़ों बच्चों के भविष्य के लिए जीता हूं, जागता हूं जूझता रहता हूं। देश के करोड़ों युवाओं, करोड़ों बहनों-बेटियों, करोड़ों गरीबों का सपना ही मोदी का संकल्प है। और इस संकल्प की पूर्ति के लिए ही हम सब सेवा-भाव से दिन-रात एक कर रहे हैं।

10 वर्षों में हमने जो हासिल किया, वो तो एक पड़ाव मात्र है, मंजिल तक पहुंचने का एक नया विश्वास है, अभी हमें अपने देश के लिए, कोटि-कोटि भारतीयों के लिए, हर भारतीय के जीवन को बदलने के लिए बहुत कुछ हासिल करने के सपने हैं, संकल्प है। इसके लिए बहुत से निर्णय बाकी हैं। आज भाजपा, युवा शक्ति, नारी शक्ति, गरीब और किसान शक्ति को विकसित भारत के निर्माण की शक्ति बना रही है। पहले लोगों को लगता था कि सरकारें बदलती हैं, व्यवस्था नहीं बदलती। हमने सच्चे अर्थ में सामाजिक न्याय की भावना से हर व्यवस्था को पुरानी सोच, पुरानी अप्रोच से बाहर निकाला। जिनको किसी ने नहीं पूछा, हमने उन्हें पूछा है, इतना ही नहीं हमने उनको पूजा है। आदिवासियों में भी सबसे पिछड़ी जनजातियों को पहले किसी ने नहीं पूछा। हमने उनके लिए पीएम जनमन योजना बनाई। लाखों विश्वकर्मा परिवारों को किसी ने नहीं पूछा। हमने उनके लिए पीएम विश्वकर्मा योजना बनाई। रेहड़ी-ठेले-फुटपाथ पर काम करने वाले लाखों साथियों के बारे में किसी ने नहीं सोचा। हमने उनके लिए पीएम स्वनिधि योजना बनाई।

पहले की सरकारों ने महिलाओं के हितों की, उनके जीवन में आ रही परेशानियों की भी कभी चिंता नहीं की। हमारे यहां बेटियों को गर्भ में ही मार डालने की कितनी विराट समस्या थी। इसके लिए हमने सामाजिक चेतना और कड़े कानून, दोनों का सहारा लिया। पहली बार देश में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसा एक जनआंदोलन चला, जिसका एक बहुत ही सार्थक प्रभाव हुआ। हमने बालिकाओं के, महिलाओं के पोषण पर विशेष बल दिया। हमने पोषण अभियान चलाया ताकि गर्भवती महिलाओं को उचित मदद मिल सके। स्वस्थ महिला ही स्वस्थ संतान को जन्म दे सकती है। गर्भ के समय महिलाओं को उचित पोषण मिले, इसके लिए मातृवंदना योजना के तहत सवा 3 करोड़ से अधिक बहनों को सीधी मदद दी। हमने सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत लगभग 5 करोड़ गर्भवती महिलाओं का हेल्थ चेकअप किया। प्रयास यही था कि माता और शिशु, दोनों के जीवन पर पहले जो खतरे रहते थे, उन्हें कम किया जा सके। 2014 से पहले महिला सुरक्षा को लेकर कितनी चिंताएं होती थीं। हर कोई चिंतित रहता था। हमने रेप जैसे संगीन अपराधों में फांसी की सजा सुनिश्चित की। ऐसे मामलों का तेजी से निपटारा हो इसके लिए भी विशेष व्यवस्थाएं बनाईं।

मैं देश का पहला प्रधानमंत्री हूं जिसने शौचालय जैसे विषय को लाल किले से उठाया। मैं देश का पहला प्रधानमंत्री हूं जिसने महिलाओं के खिलाफ अपशब्दों पर लाल किले से नाराजगी व्यक्त की थी। नारी गरिमा, नारी सम्मान हमारे लिए सर्वोपरि है। मुझे गर्व है कि बीते 10 वर्षों में भाजपा सरकार ने महिलाओं का जीवन आसान बनाने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। हमने 10 करोड़ उज्जवला गैस कनेक्शन दिया। हमने 4 करोड़ घर बनाए, जिनमें से 3 करोड़ से ज्यादा घर महिलाओं के नाम रजिस्टर में है। हमने महिलाओं के नाम 3 करोड़ ज्यादा घर रजिस्टर करवाकर उनको घर का मालकिन बनवाया। हमने 10 करोड़ परिवारों की बहनों को पहली बार नल से जल दिया। हमने 12 करोड़ परिवारों की बहनों को टॉयलेट दिया। ये चार दीवारी नहीं इज्जत घर है। हमने 1 रुपए में सुविधा सेनिटेरी पैड्स की योजना शुरु की। हमने 25 करोड़ से ज्यादा महिलाओं के बैंक अकाउंट खोले। हमने 30 करोड़ से अधिक मुद्रा लोन, महिला लाभार्थियो को दिए।

बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए, बेटियों को नौकरी करने में आसानी हो, इसके लिए भी हमने अनेक कदम उठाए हैं। हमने सेल्फ हेल्प ग्रुप्स से 10 करोड़ बहनों को जोड़ा। हमने 1 करोड़ बहनों को लखपति दीदी बनाया। खादी को जो फिर से नया जीवन मिला है, उसका फायदा भी सबसे अधिक गांव की बहनों को ही हुआ है। हमने प्रेग्नेंसी लीव को बढ़ाकर 26 हफ्ते किया। पहले फैक्ट्रियों में या दूसरी जगहों पर महिलाओं को नाइट शिफ्ट में काम करने के लिए अनेक अड़चनें थीं। हमने श्रम कानूनों में सुधार करके, इनको भी दूर किया। हमने पैरामिलिट्री फोर्स में महिलाओं की भर्ती दोगुने से अधिक की। हमने सेनाओं के अग्रणी मोर्चों में महिलाओं की तैनाती को सुनिश्चित किया। हमने सैनिक स्कूलों और मिलिट्री अकेडेमी के दरवाजे बेटियों के लिए खोल दिए।

26 जनवरी को कर्तव्य पथ नारी शक्ति से पूरे देश को प्रेरणा दे रहा था। आने वाले समय में हमारी माताओं-बहनों-बेटियों के लिए अवसर ही अवसर आने वाले हैं। 'मिशन शक्ति' से देश में नारी शक्ति की सुरक्षा और सशक्तिकरण का संपूर्ण इकोसिस्टम बनेगा। अब 15 हजार महिला सेल्फ हेल्प ग्रुप्स को ड्रोन मिलेंगे। ड्रोन दीदी खेती में वैज्ञानिकता और आधुनिकता लाएगी। अब देश में 3 करोड़ महिलाएं लखपति दीदी बनाई जाएंगी। पीएम विश्वकर्मा योजना से परंपरागत कला और शिल्प से जुड़ी बहनें सशक्त होंगी। नई नेशनल एजुकेशन पॉलिसी से बेटियों को शिक्षा और स्किल के मामले में सबसे अधिक फायदा होगा। गांव के पास ही बेहतर स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर बनने से बेटियां स्पोर्ट्स में कमाल करेंगी।

जब मैं बीते 10 वर्षों पर नजर डालता हूं, तो कितना ही कुछ याद आता है। ये 10 वर्ष साहसिक फैसलों, दूरगामी निर्णयों के नाम रहे। जो काम

सदियों से लटके थे... हमने उनका समाधान करने का साहस करके दिखाया है। अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण करके हमने 5 सदियों का इंतजार खत्म किया है। गुजरात के पावागढ़ में भी 500 साल बाद धर्म-ध्वजा फहराई गई है। 7 दशक बाद हमने करतारपुर साहब राहदारी खोली। 7 दशक के इंतजार के बाद देश को आर्टिकल-370 से मुक्ति मिली। लगभग 6 दशक बाद राजपथ, कर्तव्य पथ के नए स्वरूप में सामने आया। 4 दशक बाद आखिरकार, वन रैंक वन पेंशन की मांग पूरी हुई। 3 दशक बाद आखिरकार, देश को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मिली। 3 दशक बाद आखिरकार, लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं को आरक्षण मिला। तीन तलाक की बुराई के विरुद्ध कड़ा कानून बनाने का साहस भी हमने ही दिखाया। दशकों से नए संसद भवन की जरूरत महसूस हो रही थी, उसे हमने ही पूरा किया। ये प्रत्येक भाजपा कार्यकर्ता का सौभाग्य है कि वो ऐसी अनेक सिद्धियों का निमित्त बन सके।

कोई भी देश हो, वो अपना भविष्य तभी संवार सकता है, जब वो अपने इतिहास को सहेजकर रखता है। बीते वर्षों में भारत ने अपने इतिहास को सहेजा भी है, संवारा भी है। हमने नेशनल वॉर मेमोरियल का निर्माण किया। हमने राष्ट्रीय पुलिस स्मारक बनाई। हमने अंडमान में नेताजी सुभाष और परमवीर चक्र विजेताओं के नाम पर द्वीपों का नामकरण किया। हमने दांडी में नमक सत्याग्रह स्मारक का निर्माण किया। हमने बाबा साहेब आंबेडकर से जुड़े पंचतीर्थ को विकसित किया। हमने रांची में भगवान बिरसा मुंडा की स्मृति में म्यूजियम बनवाया। सरदार पटेल को समर्पित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, हमारे कार्यकाल में बनी। 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस हमारी सरकार ने घोषित किया। 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित करने का अवसर हमें मिला। 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका दिवस के रूप में याद करने का निर्णय हमारी सरकार ने लिया। 26 दिसंबर को हमने साहिबजादों की स्मृति में वीर बाल दिवस घोषित किया। 26 नवंबर को संविधान दिवस घोषित करने का फैसला भी हमारी ही सरकार ने किया। और 21 जून को संयुक्त राष्ट्र ने इंटरनेशन योगा डे भी हमारी ही सरकार के प्रयासों से घोषित किया।

विपक्ष के हमारे दल भले ही योजनाओं को पूरा करना ना जानते हों, लेकिन झूठे वादे करने में इनका कोई जवाब नहीं रहा है। बावजूद इसके आज एक वायदा करने से ये सारे राजनीतिक दल घबराते हैं। एक भी राजनीतिक दल के मुंह से नहीं सुना होगा आपने, जो वादा हम कर रहे हैं उसका जिक्र भी करने का सामर्थ्य उनके पास नहीं है। वो वायदा है- विकसित भारत का। इन लोगों ने स्वीकार कर लिया है कि ये लोग भारत को विकसित नहीं बना सकते। सिर्फ और सिर्फ बीजेपी ही ऐसी पार्टी है, जिसने इसका सपना देखा है। हम मिशन मोड पर भारत को 2047 तक, देश जब आजादी का 100 साल मनाएगा, हम भारत को विकसित देश बनाने के लिए काम कर रहे हैं। हमने तीसरे टर्म में भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक ताकत बनाने का संकल्प लिया है। ये मोदी की गारंटी है। और जब मैं भारत को तीसरी आर्थिक ताकत बनाने की बात करता हूं...तो उसका मतलब भी बहुत गहरा है। इसका मतलब है, भारत के आर्थिक, सामरिक और सांस्कृतिक सामर्थ्य का कई गुना विस्तार। चहुं दिशा में विस्तार।

हम इसके लिए कितनी तेजी से काम कर रहे हैं, इसका हिसाब लगाना भी जरूरी है। भारत को (ये आंकड़ा याद रखिए) वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने में लगभग 60 साल लगे। 2014 में जब देश ने हमें अवसर दिया तो, 2 ट्रिलियन मार्क भी बहुत बड़ा लग रहा था। लेकिन 10 वर्षों में हमने अपनी अर्थव्यवस्था में 2 ट्रिलियन डॉलर और जोड़ लिए हैं। 1 के लिए 60 साल,10 साल में 2 और जोड़ दिया। जब भारत दुनिया की 11वें नंबर की अर्थव्यवस्था था, 11 से 10 पर आने में दम उखड़ गया उनका, हम 11 से पांच पर ले आए। जब 11वें नंबर की अर्थव्यवस्था थी। तब इंफ्रास्ट्रक्चर का बजट 2 लाख करोड़ रुपए भी नहीं बना पाते थे। आज भारत पांचवे नंबर की अर्थव्यवस्था है तो भारत का इंफ्रास्ट्रक्चर बजट 11 लाख करोड़ को पार कर रहा है। इसी वजह से, आज गरीबों के करोड़ों घर बन रहे हैं। आज गरीबों के घर तक पानी पहुंच रहा है। आज देश में रिकॉर्ड मेडिकल कॉलेज, अस्पताल, कॉलेज-यूनीवर्सिटीज बन रहे हैं। गांव तक सड़कें बन रही हैं। जब भारत दुनिया की टॉप तीन अर्थव्यवस्थाओं में आएगा, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि विकास कार्यों के लिए हमारे पास कितनी ज्यादा पूंजी होगी। इसलिए, भारत के टॉप तीन इकॉनॉमी में आने का मतलब है... भारत के हर परिवार का जीवन स्तर सुधरेगा, भारत के हर परिवार की आय, बहुत अधिक बढ़ जाएगी। भारत का पब्लिक ट्रांसपोर्ट, और आधुनिक बनेगा... भारत में रोजगार के लिए नए सेक्टर खुलेंगे, रोजगार के और ज्यादा मौके बनेंगे। भारत के युवा को भारत में ही फंडिंग के ज्यादा से ज्यादा अवसर आएंगे। भारत की महिलाओं को हर मोर्चे पर आगे बढ़कर नेतृत्व करने का मौका मिलेगा। हमारे किसान Latest Technology से जुड़कर काम करेंगे। कृषि उत्पाद में वैल्यू एडीशन करेंगे। लोगों का जीवन बेहतर बनाने के लिए देश में पर्याप्त संसाधन और व्यवस्थाएं मौजूद होंगी।

मुझे खुशी है कि आज विकसित भारत अभियान की बागडोर भी भारत के युवाओं ने संभाल ली है। पिछले डेढ़ साल में विकसित भारत के संकल्प से जुड़े सुझावों के लिए (और लोगों को ऐसा लगता होगा कि हम बात...लेकिन ऐसा नहीं है, इस पर हम डेढ़ साल से चुपचाप काम कर रहे हैं, सरकार की मशीनरी को लगाया है) और आपको जानकर खुशी होगी अब तक 15 लाख से ज्यादा लोगों ने विकसित भारत कैसा हो, रोडमैप कैसा हो इनीशिएटिव कैसा हो, नीतियां कैसी हो इस पर विचार विमर्श हुआ है। लोगों ने अपने आइडिया दिए हैं। और आपको जानकर और खुशी होगी कि इन 15 लाख में से आधे, 35 वर्ष से कम आयु के हैं। पूरी युवा सोच के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। इन लाखों युवाओं ने विकसित भारत का रोडमैप सुझाया है।

युवा ऊर्जा से भरा हुआ भारत आज अपने लिए बड़े लक्ष्य तय कर रहा है, जो लक्ष्य तय करता है, उन्हें अपनी आंखों के सामने प्राप्त भी करता है। हम 2029 में भारत में यूथ ओलंपिक और 2036 में ओलंपिक खेलों का आयोजन कराने के लिए काम कर रहे हैं। हम 2030 तक हमारी रेलवे को नेट जीरो के टारगेट पर लाकर कार्बन मुक्त करने की दिशा में काम कर रहे हैं। हम 2030 के बजाय अपनी टारगेट डेट से 5 साल पहले ही पेट्रोल में 20 प्रतिशत Ethanol Blending का लक्ष्य भी हासिल कर लेंगे। भारत 2070 तक नेट जीरो के लक्ष्य को हासिल करने के लिए भी नीतियां बना रहा है। इसका अर्थ है कि आने वाले समय में हमारे देश में अनगनित ग्रीन जॉब्स बनेंगी।

विकसित भारत वो नहीं होगा जिसका भविष्य भाग्य के भरोसे हो। इसलिए दूसरे देशों पर भारत की निर्भरता को हम तेजी से कम कर रहे हैं। इसलिए हम देश के लिए बड़े लक्ष्य बना रहे हैं और उनके लिए योजनाबद्ध तरीके से काम भी कर रहे हैं। भविष्य में हम एक ऐसा भारत देखेंगे, जिसे लाखों करोड़ रुपये का खाद्य तेल बाहर से लाने की जरूरत नहीं होगी। हमारे पाम ऑयल मिशन की मदद से हमारे किसान ही इतने सशक्त हो जाएंगे, कि वो देश के पैसों की बचत कर सकें । बीते कुछ वर्षों में दलहन, तिलहन और श्री अन्न के लिए विशेष नीतियां बनाई गई हैं। जिससे छोटे-छोटे किसानों को मदद हो रही है। भविष्य में भी हमारे किसानों को इनसे और लाभ मिलेगा।

किसानों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए हमने देश के कोने-कोने में अमृत सरोवर अभियान भी शुरू किया है। आजादी का अमृत महोत्सव हम बहुत कुछ कर सकते थे। हम दिल्ली के अंदर कोई बड़ा ताबूत खड़ा करके नाम लिखवा सकते थे कि

आजादी के अमृत काल में मोदी जी ये बनाकर गए। हमने आजादी के अमृत वर्ष को जनांदोलन बनाया। और काम क्या किया... तालाब बनाए। हर गांव में जब तालाब बनते हैं न तो वो किसान को सुरक्षित करते हैं, शुद्ध पानी की गारंटी देते हैं, जमीन उर्वरक बना देते हैं। हमने भविष्य को सोच करके ऐसे काम हम करते हैं। इस अभियान के तहत देश में 60 हजार से ज्यादा नए सरोवर बनाए जा चुके हैं। 60 हजार तालाब...शायद ही किसी सरकार के नसीब में ये काम करने का सौभाग्य आया होगा। ये सरोवर जल सुरक्षा सुनिश्चित करने में किसानों की मदद करेंगे।

आज ग्रीन हाइड्रोजन से जुड़े अभियान और सोलर रूफटॉप मिशन के कारण देश Renewable Energy के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। बहुत जल्द भारत, दुनिया का सेमीकंडक्टर हब बनेगा और इससे पूरी दुनिया में नई Computing Revolution को भी भारत गति देने का निमित्त बनने वाला है। पोर्ट लेड ग्रोथ से पब्लिक ट्रांसपोर्ट तक, आने वाले समय में हर क्षेत्र को नई ऊंचाई मिल सकेगी।

भाजपा, आज देश का एकमात्र दल है जो एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना के प्रति इतना आग्रही भी है और इतना समर्पित भी है। मैं पिछले महीने के अपने अनुभवों को कभी भूल नहीं सकता। इस दौरान मुझे भगवान श्री राम से जुड़े कई स्थलों के भ्रमण करने का अवसर मिला। मेरा 11 दिनों का अनुष्ठान चल रहा था। उस अनुष्ठान के दरम्यान मैं नासिक, लेपाक्षी, त्रिप्रयार, श्रीरंगम, रामेश्वरम धनुषकोडी...मैं इन जगहों पर एक सामान्य साधक के तौर पर गया था। इस दौरान मुझे दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों से जो स्नेह मिला, आशीर्वाद मिले, इसका मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता हूं, ये पॉलिटिकल पंडितों के पैरामीटर वो कभी आ नहीं सकता है। जब मैं सड़कों से गुजर रहा था, लोग अपने वचन से, अपने भावों से मुझ पर अपना आशीर्वाद बरसा रहे थे। इस दौरान मुझे कंब रामायण का पाठ सुनने का अवसर मिला। ये ठीक उसी जगह पर हुआ जहां महान कवि कंबन ने 800 वर्ष पूर्व अपने रामायण की रचना की थी। आप कल्पना कर सकते है उसी स्थान पर बैठ कर मैं कंब रामायण को सुन रहा था ...उस भाव विश्व को मैं ही अनुभव कर सकता हूं। ये एक ऐसा अद्भुत क्षण था, जिसमें एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना पूरी तरह समाहित थी। मुझे विश्वास है कि आप सभी ने कम-अधिक मात्रा में इसे महसूस किया होगा। हम हमेशा विभिन्न तरीके से देशवासियों को करीब लाने का निरंतर प्रयास करते हैं। एकता सूत्र में बांधने के लिए हमारी कोशिश रहती है चाहे संयुक्त राष्ट्र में जाकर के पहली बार कोई तमिल में बोलता है। जगद्गुरु बश्वेश्वरा का संदेश दूर-दूर तक पहुंचाने के लिए हम लेकर जाते हैं। काशी तमिल संगमम का आयोजन हो, काशी तेलुगु संगमम का आयोजन हो, या फिर बीएचयू में सुब्रह्मण्यम भारती के नाम पर चेयर की स्थापना हो, हम जी-20 करते हैं तो देश के कोने कोने में जाकर करते हैं, विदेश से मेहमान आते हैं तो दिल्ली को ही देश नहीं मानते हम हर राज्य में लेकर जाते हैं। हम राजभवनों में हर राज्य के स्थापना दिवस मनाए जाते हैं। कोई राजभवन होगा नागालैंड भी वहां स्थापना दिवस मनाया जाएगा और गुजरात का भी मनाया जाएगा, महाराष्ट्र का भी मनाया जाएगा, गोवा का भी मनाया जाएगा। हर राजभवन में राष्ट्रीय एकता का उत्सव बना दिया जाता है। हम अपनी विविधता को सेलिब्रेट करते हैं। एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना हमारे दिल के बहुत करीब है, इसे मजबूत बनाने के लिए हम काम करते रहेंगे।

एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना हमारी गवर्नेंस में भी दिखती है। हर क्षेत्र के विकास पर हमारा पूरा फोकस है। नॉर्थ ईस्ट का उदाहरण आपके सामने है। पहले की सरकारों में नॉर्थ ईस्ट को पूरी तरह अनदेखा कर दिया गया था। क्योंकि पार्लियामेंट की सीटें कम है, उनका इंटरेस्ट ही नहीं था। हम वोट और सीटों के हिसाब से काम नहीं करते, हमारे लिए देश का हर कोना समृद्ध हो, विकसित हो यही हमारा भाव है। आज चाहे सियाचिन हो, या फिर देश के आकांक्षी जिले हों, कोई हमसे दूर नहीं है। वो गांव, जिन्हें पहले आखिरी गांव कहा जाता था, हमारे लिए देश के पहले गांव बन गए हैं। मेरे सारे कैबिनेट के मंत्री उन गावों में रात बिता कर आए कुछ को तो माइनस 15 डिग्री में रूकना पड़ा। क्योंकि आत्मसात करना चाहते हैं। हमारे लिए देश का हर हिस्सा महत्वपूर्ण है, हर हिस्से पर हमारा फोकस है।

जो भी राजनीति में दिलचस्पी रखता है, और जिसके लिए लोकतांत्रिक मूल्य महत्व रखते हैं, वो भी अगर न्यूट्रल है तो पब्लिकली हमारी प्रशंसा करते हैं, न्यूट्रल नहीं है तो खानगी में तो कर ही देते हैं। इसकी एक बड़ी वजह है, हमने समय के साथ खुद को सकारात्मकता के साथ बदलने का प्रयास किया है। हमने अपनी राजनीतिक व्यवस्था को नए और आधुनिक विचारों के लिए खुला रखा है। आजादी के बाद वर्षों तक, जिन्होंने हमारे देश पर शासन किया, उन्होंने एक व्यवस्था बना दी थी। उस व्यवस्था में कुछ बड़े परिवारों के लोग ही सत्ता के केंद्र में रहे। उनके आसपास रहने वाले लोगों को ही राजनीतिक ताकत मिलती रही। अहम पदों पर परिवार के करीबियों को ही आगे बढ़ाया गया। हमने इस व्यवस्था को भी बदल दिया। हमने नए लोगों को मौका दिया कि वो हमारी व्यवस्था का हिस्सा बनें और परिणाम लाकर दिखाएं। इससे व्यवस्था में नयापन आया और इसका लोकतांत्रिक स्वरूप कायम रहा। हमारी कैबिनेट में रिकॉर्ड संख्या में नॉर्थ ईस्ट के मंत्री हैं। नागालैंड से पहली महिला सांसद राज्यसभा में सांसद बनी हैं। हमें गर्व है कि हमने पहली बार त्रिपुरा के मंत्री को काउंसिल ऑफ मिनिस्टर्स में शामिल किया। पहली बार हमारी सरकार में अरुणाचल प्रदेश को कैबिनेट मिनिस्टर मिला। पहली बार, गुर्जर मुस्लिम को राज्यसभा के लिए नॉमिनेट किया गया। हमारी सरकार में ही, गोवा से एक कैबिनेट मंत्री बनाया गया। हमें गर्व है कि हम बीजेपी की एक ऐसी संस्कृति का हिस्सा हैं, जहां मंत्रालय में रिकॉर्ड ओबीसी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाता है।

हमारी सरकार सबके लिए है। सबका साथ, सबका विकास हमारे काम से ही झलकता है। हमें गर्व होता है जब करतारपुर साहिब कॉरिडोर के द्वारा लाखों सिख श्रद्धालुओं की आध्यात्मिक इच्छाएं पूरी होती हैं। आप कल्पना कीजिए 70 साल तक भारत की सीमा में रह कर सिख अनुयायी दूरबीन से करतारपुर साहिब के दर्शन करते थे। हमने स्थिति बदली है। हमने लंगर की वस्तुओं से GST भी हटाया। हमने स्वर्ण मंदिर के लिए FCRA रजिस्ट्रेशन सुनिश्चित किया, जिससे विदेशियों को सेवा करने का अवसर मिला। पहली बार, वीर बाल दिवस मनाकर हमने सत्य और न्याय के लिए बलिदान देने वाले साहेबजादों के शौर्य को सम्मान दिया। आज केरल का बच्चा भी जानता है कि साहिबजादे का बलिदान कैसा था। नागालैंड का बच्चा भी जानता है कि साहिबजादों ने कितना बड़ा बलिदान दिया था। अफगानिस्तान से गुरुग्रंथ साहब के स्वरूपों को पूरे सम्मान से वापस लाए। इसके साथ ही, हमारी सरकार ने हज की प्रक्रिया में सुधार करके यात्रा को सुविधाजनक बनाया। आज बिना मेहरम के हज करना भी संभव हुआ है। इससे महिलाओं के लिए भी हज करना आसान हो गया है। और हजारों महिलाएं गई।

2014 में जब मैंने शपथ ली, तो हमारे कई आलोचक कहते थे, मोदी जी एक राज्य के बाहर उनका क्या अनुभव है, इतना बड़ा देश, इतनी बड़ी दुनिया... मोदी क्या करेगा। लेकिन वो सब देख लें... विदेश नीति को लेकर बड़ी-बड़ी बातें कही जाती थीं। मैं कुछ दिनों पहले ही UAE और कतर से वापस आया हूं। तमाम देशों से हमारे रिश्ते कैसे मजबूत हुए हैं, ये आज दुनिया देख रही है। आज पश्चिमी एशिया के देशों से हमारे संबंध अब तक की सबसे मजबूत स्थिति में हैं। 2015 में जब मैं UAE गया था, आप हैरान हो जाएंगे,

मेरे से पहले उसके 34 साल पहले तक कोई भी पीएम वहां नहीं पहुंचा था। सोचिए कि किस तरह हमने उस पूरे क्षेत्र को छोड़ रखा था। कांग्रेस की सरकारें, पूरे वेस्ट एशिया को सिर्फ पाकिस्तान के संदर्भ में देखा करती थीं। उन्हें भारतीयों की शक्ति और उनके विश्वास पर भरोसा ही नहीं था। लेकिन आज भारत इस क्षेत्र से संबंधों का नया अध्याय लिख रहा है। पहले लोग सोचते थे कि बस तेल का इंपोर्ट कर लेते हैं और यहां से सस्ते लेबर भेज देते हैं। ताकि उनको रोजी रोटी मिल जाए। लेकिन अब ऐसा नहीं है। आज ट्रेड, टेक्नॉलाजी, टूरिज्म और ऐसे अनेक क्षेत्रों में हमारे संबंध बेहतर हो रहे हैं। और हम निरंतर विकास कर रहे हैं। यहां तक कि अरब के 5 देशों ने मुझे अपना सर्वोच्च सम्मान तक दिया है। ये सम्मान मोदी का नहीं, 140 करोड़ भारतीयों के सामर्थ्य का सम्मान है।

विदेश नीति के जो भी जानकार हैं, वो विदेश से मिल रहे संकेत भी पकड़ रहे होंगे। आज अलग-अलग देशों में सत्ता और विपक्ष के दल ये खुलकर मानते हैं कि भारत के सशक्त होने से पूरी दुनिया का हित होने वाला है। ये पूरी दुनिया मानने लगी है। आज हर महाद्वीप में भारत का सम्मान, भारत की ताकत बढ़ रही है। हर देश भारत से गहरे संबंध बनाने पर जोर दे रहा है। और इन सबके बीच कोई देश हमारी सरकार से बातचीत के लिए... आप जानकर हैरान होंगे... अभी तो चुनाव बाकी है लेकिन मेरे पास जुलाई, अगस्त, सितंबर के डेट पड़े हुए हैं, निमंत्रण देकर के। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ ये है कि दुनिया के विभिन्न देश भी बीजेपी सरकार की वापसी को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त है, वो भी जानते हैं, दुनिया का हर देश जानता है, दुनिया की हर शक्ति जानती है। आएगा तो मोदी ही। आएगा तो मोदी ही।

कांग्रेस से देश को बचाना, देश के हर नागरिक को बचाना, बीजेपी के हर प्रत्येक कार्यकर्ता का दायित्व है। कांग्रेस का ट्रैक रिकॉर्ड हम सभी के सामने है। कांग्रेस, अस्थिरता की जननी है। कांग्रेस... परिवारवाद की जननी है। कांग्रेस... भ्रष्टाचार की जननी है। और कांग्रेस, तुष्टिकरण की भी जननी है। 70 के दशक में जब देश में कांग्रेस के विरुद्ध गुस्सा बढ़ना शुरु हुआ, तो खुद को बचाने के लिए इसने अस्थिरता का सहारा लिया। हर नेता की सरकार, कांग्रेस ने अस्थिर की। आज यहां प्रस्ताव के समय इसकी चर्चा आई है, मैं ज्यादा उसके लिए कहता नहीं हूं। आज भी ये लोग अस्थिरता पैदा करने के लिए नई-नई साजिशें कर रहे हैं। इन लोगों ने मिलकर जो गठबंधन बनाया है, उसकी भी यही पहचान है। कांग्रेस के पास विकास का एजेंडा नहीं है, फ्यूचर का रोडमैप नहीं है। ये देश को कभी भाषा के आधार पर, तो कभी क्षेत्र के आधार पर बांटने में जुटे हुए हैं।

कांग्रेस का एक सबसे बड़ा पाप ये रहा है कि वो देश की सेनाओं का मनोबल तोड़ने से भी पीछे नहीं रही है। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक शक्ति को नुकसान पहुंचाने में कांग्रेस ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। जब भी देश के रक्षा क्षेत्र में कोई बड़ा काम हुआ, जब हमारी सेनाओं ने कोई उपलब्धि हासिल की कांग्रेस ने हर बार उन पर सवाल उठाए। आप सिर्फ सोचिए कि पांच साल पहले इन लोगों ने क्या क्या कहा था। इन लोगों ने हर कोशिश की कि हमारी वायुसेना को राफेल जैसे एडवांस एयरक्राफ्ट ना मिल पाएं। इन्होंने अपप्रचार किया कि हिंदुस्तान एरोनॉटिकल लिमिटेड को खत्म किया जा रहा है। ये लोग तो एचएएल के बाहर, फोटो तक खिंचाने चले गए। लेकिन देखिए कि एचएएल आज कैसे धूमधाम से आगे बढ़ रहा है। आज देखिए कितने सारे ऑर्डर उनके यहां बुक किए गए हैं। देखिए कि उसकी मार्केट वैल्यू कितना बढ़ गया है। ये वही लोग हैं, जिन्होंने हमारी सेनाओं के सर्जिकल स्ट्राइक करने पर उनके पराक्रम पर सवाल खड़ा कर दिया। जब एयरस्ट्राइक हुई तो उसकी सफलता के प्रमाण मांगे जाने लगे। कांग्रेस, भारतीय सेनाओं के अपमान का कोई मौका नहीं छोड़ती।

कांग्रेस कितनी कन्फ्यूज है, इसका उदाहरण मैं आपको देता हूं। कांग्रेस में लड़ाई चल रही है और बड़ी तगड़ी लड़ाई चल रही है, सिद्धांतों और योजनाओं को लेकर नहीं चल रही है। कांग्रेस में एक वर्ग है जो कहता है मोदी से तीखी नफरत करो। मोदी पर व्यक्तिगत आरोप लगाओ। मोदी की छवि खराब करने के लिए हर हथकंडे अपनाओ। वहीं कांग्रेस में एक और वर्ग है। जो कहता है कि मोदी पर व्यक्तिगत आरोप, नफरत से कांग्रस को बाहर निकलो। इससे कांग्रेस को और ज्यादा नुकसान होता है। यानि कांग्रेस हमसे सैद्धांतिक मुद्दों पर लड़ाई नहीं लड़ रही है। कांग्रेस, इतनी हताश है कि उसमें सैद्धांतिक विरोध, वैचारिक विरोध का साहस भी नहीं बचा। इसलिए, गाली-गलौज और मोदी पर झूठे आरोप ही उनका एकमात्र एजेंडा बन गया है। लाल किले से मैंने कहा था- यही समय है, सही समय है। भारत के इतिहास में आज वो समय आ गया है, जब हमें अपने देश का भाग्य बदल देना है। मैंने देशवासियों को लाल किले से कहा था कि अगर आप 10 घंटे काम करेंगे तो मोदी 11 घंटे काम करेगा, अगर आप 12 घंटे काम करेंगे तो मैं 13 घंटे काम करूंगा, अगर आप 14 घंटा काम करेंगे तो मैं 15 घंटे काम करूंगा। देशभर के मेरे कार्यकर्ताओं, देश के उज्जवल भविष्य की आशा लगाए लोगों से मैं कहना चाहूंगा। आने वाले 100 दिनों तक बीजेपी के हर कार्यकर्ता को अपने लिए नए लक्ष्य बनाने होंगे, उन्हें प्राप्त करना होगा। बीते वर्षों में भाजपा सरकार की योजनाओं का लाभ करोड़ों लाभार्थियों को मिला है। आपको हर लाभार्थी तक पहुंचना है। मेरी एक व्यक्तिगत प्रार्थना है। हर लाभार्थी के पास जाइए, उनको कहना कि प्रधान सेवक नरेंद्र मोदी ने उन्हें प्रणाम कहा है। और इसमें आपको नमो एप से भी बड़ी मदद मिलेगी। आप नमो एप के जरिए मेरा प्रणाम और मेरी चिट्ठी उन लाभार्थी तक जरूर पहुंचाएं। किसी भी बूथ में एक भी फर्स्ट टाइम वोटर ऐसा ना हो, जिस तक बीजेपी का कार्यकर्ता पहुंचा ना हो। आपको उन्हें पिछले 10 वर्षों के काम और आने वाले 5 वर्षों के प्लान के बारे में बताना है। आपको उन्हें नमो एप पर विकसित भारत का ब्रांड एंबेसेडर बनाना है। मतदान के दिन, इन सभी मतदाताओं को बूथ पर लाकर हमें कमल निशान पर मतदान करवाना है। जहां एनडीए के साथी हों उनके निशान पर मतदान करवाना है। आपको याद रखना है, हमें सिर्फ सरकार बनाने के लिए ही लोगों को नहीं जोड़ना बल्कि देश बनाने के लिए भी लोगों को जोड़ना है। जो किसी भी कारण से अभी भी भाजपा से दूर है, उन तक हमें पहुंचना है। सबका साथ-सबका विकास ही हमारा मंत्र है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने जो सपने देखे थे, अब उन्हें पूरा करने का समय आ गया है। और इसके लिए भाजपा जरूरी है, भाजपा सरकार जरूरी है।

- आज देश की जनता कह रही है...
- भ्रष्टाचार पर सख्त कार्रवाई होती रहे... इसलिए भाजपा जरूरी है।
- महंगाई पर लगाम लगी रहे... इसलिए भाजपा जरूरी है।
- देश के दुश्मनों में डर बना रहे... इसलिए भाजपा जरूरी है।
- निवेश और नौकरी के अवसर बढ़ते रहें... इसलिए भाजपा जरूरी है।
- भारत तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक ताकत बने... इसलिए भाजपा जरूरी है।
- भारत में तेजी से आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण हो... इसलिए भाजपा जरूरी है।
- आत्मनिर्भर भारत अभियान सफल हो... इसलिए भाजपा जरूरी है।
- करोड़ों भारतीयों को मुफ्त राशन मिलता रहे... इसलिए भाजपा जरूरी है।
- किसानों को सम्मान निधि मिलती रहे... इसलिए भाजपा जरूरी है।
- शत-प्रतिशत लाभार्थी तक तेजी से हर लाभ पहुंचे- इसलिए भाजपा जरूरी है।
- आप यहां से एक नए संकल्प के साथ अपने क्षेत्र में जाएं। अबकी बार...400 पार...इस मिशन पर हमें जुट जाना है। ▪

देश के उज्जवल भविष्य की गारंटी है **जनजातीय समाज**

मध्य प्रदेश में विधानसभा के नतीजे पहले ही बता चुके हैं लोकसभा के लिए जनता का मूड क्या रहने वाला है।

एमपी ने ये भी बता दिया है कि भाजपा सरकार की डबल इंजन सरकारों के प्रति जन समर्थन लगातार बढ़ रहा है।

इसीलिए, इस बार विपक्ष के बड़े-बड़े नेता पहले से ही संसद में बोलने लगे हैं- 24 में 400 पार!

कनेक्टिविटी को बेहतर करने के लिए मध्य प्रदेश में कई बड़ी रेल परियोजनाओं को भी शुरू किया गया है।

जनजातीय समाज की करीब 2 लाख बहनों-बेटियों के खातों में 15-15 सौ रुपए भी भेजे गए हैं। एक साथ विकास के इतने सारे काम ये बता रहे हैं मध्य प्रदेश में फिर से एक बार बनाई हुई, डबल इंजन की सरकार डबल तेजी से काम कर रही है।

विकास के इस महाअभियान का श्रेय मध्यप्रदेश की जनता को जाता है। मध्य प्रदेश में विधानसभा के नतीजे पहले ही बता चुके हैं लोकसभा के लिए जनता का मूड क्या रहने वाला है। एमपी ने ये भी बता दिया है कि भाजपा सरकार की डबल इंजन सरकारों के प्रति जन समर्थन लगातार बढ़ रहा है। इसीलिए, इस बार विपक्ष के बड़े-बड़े नेता पहले से ही संसद में बोलने लगे हैं- 24 में 400 पार!

24 में फिर एक बार- मोदी सरकार

370 पार करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए, 370 से ज्यादा सीट आनी चाहिए की नहीं आनी चाहिए, लेकिन लाओगे कैसे मैं आपको एक जड़ी-बूटी दे रहा हूं, आपको एक ही काम करना है।

पिछले तीन चुनाव में आपके यहां पोलिंग बूथ में क्या रिजल्ट आया था, वो निकालो, पोलिंग बूथ में कमल पर कितने वोट पड़े थे, उसका हिसाब निकालो, फिर उसमें जिस समय सबसे ज्यादा वोट मिले हैं, उसको लिख लो कि इस पोलिंग बूथ में पिछले चुनाव में इतने वोट मिले थे। फिर आप तय करना कि अब जो ज्यादा से ज्यादा वोट बूथ में मिले थे, उसमें इस बार 370 नए वोट जुड़ने चाहिए, यानि आपके पोलिंग बूथ में जितने ज्यादा वोट मिले थे, उसमें 370 वोट और ज्यादा लाना है। एक-एक मतदाता की सूची बनाएंगे, सरकार के काम उसको बताएंगे। कौन-कौन सी योजना का लाभ उसको मिला है, बताएंगे उसको और जिसको पहुंचा नहीं है, उसको विश्वास देंगे कि मोदी जी फिर से आकर इस काम को पूरा करेंगे।

एक पोलिंग बूथ में नए 370 वोट अतिरिक्त होने चाहिए, अगर ये हर बूथ में हो गया तो 370 पार पक्का करेंगे।

विपक्ष के लोगों को जमीनी हकीकत का ये आईना, मध्य प्रदेश ने पिछले चुनाव में जनता का मिजाज क्या है, वो दिखा दिया है। मध्य प्रदेश के लोगों को मौका मिला तो उन्होंने दिखा दिया की ऐसा ही मिजाज देश के कोने-कोने में है।

23 में काँग्रेस की छुट्टी हुई थी, विधानसभा चुनाव में, 24 में पूरा सफाया होना तय है।

डबल इंजन की सरकार कैसे काम करती है, मध्य प्रदेश एक उत्तम उदाहरण आज पूरे देश के सामने है।

बीते वर्षों में मध्य प्रदेश ने दो अलग-अलग दौर देखे हैं।

एक डबल इंजन सरकार का ये दौर,

और दूसरा, काँग्रेस के जमाने का काला काल!

आज विकास के रास्ते पर तेजी से दौड़ रहा मध्य प्रदेश, भाजपा सरकार से पहले देश के सबसे बीमारू राज्यों में गिना जाता था।

मध्य प्रदेश को बीमारू बनाने के पीछे सबसे बड़ी वजह थी- गाँव, गरीब और आदिवासी इलाकों को लेकर काँग्रेस का नफरत भरा रवैया!

इन लोगों ने न कभी आदिवासी समाज के

विकास की चिंता की, न उसके सम्मान के बारे में सोचा।

इनके लिए तो जनजातीय लोगों का मतलब केवल कुछ वोट होता था। सिर्फ वोट होता था।

इन्हें गाँव, गरीब, पिछड़ा की याद तब आती थी जब चुनाव की घोषणा होती थी।

ये अटल जी की बीजेपी सरकार थी जिसने पहली बार आदिवासी हितों के लिए नया मंत्रालय बनाया, अलग मंत्रालय बनाया, अलग बजट निकाला और आदिवासी इलाकों का विकास, आदिवासी लोगों का विकास और आदिवासी बेटे-बेटियों के लिए पूरी व्यवस्था की।

ये हमारी बीजेपी की सरकार है जिसने वन उपज पर MSP में रिकॉर्ड वृद्धि की।

ये बीजेपी की सरकार है जिसने MSP में दायरे में वन उपज की संख्या को करीब 10 से बढ़ाकर 90 के आसपास पहुंचा दिया।

ये बीजेपी की सरकार है जिसने देश के आदिवासी इलाकों में वन धन केंद्र खोले हैं ताकि आदिवासी उत्पादों को नए हाट-बाजार मिलें।

हमारे लिए जनजातीय समाज वोट बैंक नहीं है, हमारे लिए तो जनजातीय समाज देश का गौरव है। हमारे देश के उज्जवल भविष्य की गारंटी जनजातीय समाज है।

जनजातीय समाज का सम्मान भी, और जनजातीय समाज का विकास भी, ये मोदी की गारंटी है। जनजातीय समाज के सपने, जनजातीय समाज के बच्चों के सपने, नौजवानों के सपने ये मोदी का संकल्प है।

भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के तौर पर मनाने का फैसला मोदी सरकार ने किया।

टंट्या मामा के बलिदान को याद कर बलिदान दिवस मनाया जाता है।

उन्हीं के नाम पर युवाओं के लिए क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय की घोषणा कर रहा हूं।

आदिवासी बच्चों के लिए देश भर में एकलव्य आवासीय स्कूल खुल रहे हैं।

कांग्रेस ने इतने वर्षों में, इतने साल उनको काम करने का अवसर मिला था, सिर्फ 100 एकलव्य स्कूल खोले थे। वो भी वहां जहां उनके बड़े-बड़े बाबू बैठे थे।

जबकि भाजपा की सरकार ने अपने 10 साल में ही इससे चार गुना ज्यादा एकलव्य स्कूल खोल दिए हैं।

एक भी आदिवासी बच्चा शिक्षा के अभाव में पीछे रह जाए, ये मोदी को मंजूर नहीं है।

आदिवासी समाज हजारों वर्षों से वन सम्पदा से अपनी रोजी रोटी चलाता है।

कांग्रेस के समय आदिवासियों के उस अधिकार पर कानूनी पहरे लगा दिये गए थे।

वन संपदा कानून में बदलाव करके सरकार द्वारा आदिवासी समाज को वन भूमि से जुड़े अधिकार लौटाए गए हैं।

इतने वर्षों से आदिवासी परिवारों में सिकल सेल एनीमिया हर वर्ष सैकड़ों लोगों की जान ले रही थी।

केंद्र और राज्यों में, दोनों जगह काँग्रेस ने इतने वर्ष सरकार चलाई।

लेकिन, उन्होंने असमय मृत्यु को प्राप्त होते जनजातीय युवाओं की, बच्चों की चिंता नहीं की।

उन्हें पता था कि भोले-भाले आदिवासी लोग बीमारी के लिए उनकी सरकार को जिम्मेदार नहीं मानेंगे।

ये चुनाव का मुद्दा नहीं होता था।

हमारे लिए वोट नहीं आपकी जिंदगी मायने रखती है।

हमने वोट बैंक के लिए नहीं, आदिवासी समाज के स्वास्थ्य के लिए सिकल सेल एनीमिया के खिलाफ अभियान शुरू किया।

ये कांग्रेस और हमारी नीयत में फर्क बताता है।

ये नीयत का फर्क ही है कि आज हमारा आदिवासी समाज सम्मान के साथ विकास की दौड़ में आगे बढ़ रहा है।

ये नीयत का ही फर्क है कि हमने मध्य प्रदेश को बीमारू राज्य से विकासशील राज्य बना दिया है।

आज स्वामित्व योजना के माध्यम से लोगों को उनकी जमीन के कागजात दिए जा रहे हैं।

ये अधिकार पत्र नहीं, ये जिंदगी में सुरक्षा पत्र हैं। ये सिक्योरिटी की गारंटी का पर्चा है।

वो सुरक्षा पत्र जिनसे हमारे परिवारों को भूमि विवादों से सुरक्षा मिलती है।

वो सुरक्षा पत्र जो हमारे परिवारों को सूदखोरों के कर्ज से सुरक्षा देते हैं।

आप पहले की उस स्थिति की परिकल्पना करिए,

जब किसी व्यक्ति को अपनी ही संपत्ति के किसी विवाद के लिए कोर्ट के चक्कर काटने पड़ते थे।

जब किसी लोन के लिए सूदखोरों से मिन्नत करनी पड़ती थी।

जब पढ़ाई के लिए किसान को जमीन बेचनी पड़ती थी।

आज एक स्वामित्व योजना गांव-गरीब को इन सब मुश्किलों से बचाती है।

जो सबसे वंचित है, सबसे पिछड़ा है, हमारी सरकार में वो सबसे पहली प्राथमिकता है।

समाज में जो सबसे आखिरी वर्ग होता था, हमने विकास में उसे सबसे पहला दर्जा दिया है।

जो सबसे गरीब थे, आज सबसे पहले सरकार उनके लिए योजनाएँ बनाती है।

सबसे आखिरी गाँव, सबसे आखिरी वर्ग, ये कौन लोग थे?

इनमें से ज्यादातर हमारे दलित, आदिवासी, पिछड़ा ऐसे वंचित समाज के लोग थे।

इसीलिए, सबसे पिछड़े जनजातीय समूहों के लिए हमने पीएम-जनमन योजना शुरू की।

जो जनजातीय समाज अब तक विकास की मुख्य धारा से कटा हुआ था, जनमन योजना के तहत उनका तेज विकास शुरू किया गया है।

इसका लाभ यहां इस क्षेत्र की बैरा, भारिया और सहरिया जैसे जनजातीय समूहों को होने वाला है।

मध्य प्रदेश के आदिवासी बहुल जिलों में हजारों करोड़ रुपए के कार्य पीएम-जनमन योजना के तहत कराये जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना के जरिए झाबुआ के भी साढ़े 5 सौ गाँवों में विकास के काम हो रहे हैं।

हमारी सरकार, एमपी में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी उतना ही ध्यान दे रही है।

काँग्रेस सरकार के दस वर्षों में एमपी को रेलवे के विकास के लिए जितना पैसा मिला, आज हम उससे 24 गुना ज्यादा पैसा एमपी के लिए भेज रहे हैं।

वो कौन से इलाके थे जहां रेल की, सड़क की, बिजली की, रोजगार की सुविधाएं नहीं पहुँचती थीं?

इनमें से अधिकांश जनजातीय और ग्रामीण इलाके ही थे।

क्योंकि, काँग्रेस को आपके गाँव की नहीं, उनको तो अपने महलों की चिंता थी।

काँग्रेस ने इन इलाकों की जो उपेक्षा की, उनके बनाए गड्ढे भरने के लिए आज हम पूरी मेहनत से काम कर रहे हैं।

इसीलिए, काँग्रेस के लोकल नेता भी अपने आलाकमान से कहने लगे हैं कि हम मोदी के खिलाफ वोट मांगने जाएँ तो किस मुंह से जाएँ!

जो नेता पार्टी में बचे हैं, उनमें भी कोई जिम्मेदारी नहीं उठाना चाहता।

जनता की उपेक्षा करने वालों का यही हश्र होता है।

काँग्रेस अब अपने पापों के दलदल में फंस चुकी है।

वो उससे निकलने की जितनी कोशिश करेगी उतना ही और धँसेगी।

काँग्रेस और उसके दोस्तों की दो ही ताकत हैं।

जब ये सत्ता में रहते हैं- तब लूटते हैं।

जब सत्ता से बाहर जाते हैं, तो लोगों को

लड़वाते हैं।

यानी, लूट और फूट-यही काँग्रेस की ऑक्सीजन हैं।

इनको बंद करते ही काँग्रेस पार्टी का सियासी दम टूटने लगता है।

ज्यादातर राज्यों में सरकार से बेदखल करके जनता जनार्दन ने इनकी लूट के रास्ते बंद कर दिये हैं।

अब ये वापस कुर्सी पाने के लिए जाति के नाम पर, भाषा के नाम पर, इलाके के नाम पर टूट करवाने पर, फूट करवाने में लग गए हैं।

लेकिन देश इनकी हरकतें देख रहा है।

देश इनके मंसूबे सफल नहीं होने देगा।

कांग्रेस के भीतर आदिवासी समाज के लिए नफरत कूट-कूट कर भरी पड़ी है।

ये लोग आदिवासी समाज के वोट मांगने तो आते हैं।

लेकिन जब आदिवासी समाज से पहली बार एक महिला राष्ट्रपति का चुनाव लड़ती है, तो कांग्रेस उन्हें रोकने के लिए दीवार बनकर खड़ी हो जाती है।

देश को कांग्रेस की वो करतूत याद है।

चुनाव आने पर ये लोग बड़ी-बड़ी घोषणाएँ तो करते हैं।

लेकिन, मोदी जब हर गरीब के लिए, दलित, पिछड़ा, आदिवासी के लिए पक्के घर बनवाता है तो ये मोदी को गालियां देते हैं।

मध्य प्रदेश में डबल इंजन सरकार ने करीब 45 लाख परिवारों को पक्का घर दिया है।

65 लाख से ज्यादा परिवारों को पानी के लिए नल के कनेक्शन मिले हैं।

बीच में जितने दिन इनकी सरकार रही, इन्होंने गरीबों तक ये लाभ पहुँचने से रोकने के लिए हर संभव कोशिश की थी।

एमपी के लोग उनके वो पाप भूले नहीं हैं।

लोग ये बातें भूलते नहीं है, कांग्रेस के लोग समझ लें, ये मेरे आदिवासी भाई-बहन समय आने पर हिसाब चुकता कर देते हैं और पक्का चुकता कर देते हैं। जनता ने कांग्रेस को जो जवाब अब तक दिया है, वो अभी केवल ब्याज का जवाब है।

कांग्रेस का पूरा हिसाब तो अभी बाकी है।

डबल इंजन सरकार की मेहनत से एमपी के युवाओं की, किसानों की, महिलाओं की अपनी एक पहचान बन रही है।

यहाँ की पिथोरा पेंटिंग, गल्शन माला, बाग प्रिंट साड़ी-सूट और जैकेट इन सबके लिए बड़ा बाजार तैयार होने लगा है।

यहाँ की बहनों ने स्वयं सहायता समूह बनाकर शहद, पापड़, अचार और श्रीअन्न का अपना ब्रांड भी शुरू किया है।

सब जगह यहाँ के उत्पादों को खूब पसंद किया जा रहा है।

इस बजट में हमारी सरकार ने लखपति दीदी बनाने के लक्ष्य को बढ़ाकर 3 करोड़ कर दिया है। गावों में स्वयं सहायता समूह में काम करने वाली तीन करोड़ लखपति दीदी बनेगी, ये मोदी की गारंटी है।

लखपति दीदी अभियान का बहुत बड़ा फायदा महिला स्वयं सहायता समूह की बहनों को भी हो रहा है।

केंद्र सरकार नमो ड्रोन दीदी अभियान के तहत देश के 15 हजार स्वयं सहायता समूहों को आधुनिक ड्रोन भी देने जा रही है।

आदिवासी शिल्प, कला और उत्पादों की तो अब देश और दुनिया में पहचान बन गई है।

आदिवासी समाज के पारंपरिक हुनर को रोजगार के अवसरों में बदलने के लिए हमने जो प्रयास किए हैं, उनके परिणाम भी आने लगे हैं।

जिस समाज को पिछली सरकारों ने पिछड़ा बताकर जंगल तक सीमित कर दिया था, आज उसका गौरव पूरा विश्व जान रहा है।

आप सबके आशीर्वाद से ये मध्यप्रदेश के विकास की जो संकल्प यात्रा शुरू हुई है, वो और गति से आगे बढ़ेगी। ▪

अंतरिम बजट अभिनव और समावेशी- प्रधानमंत्री

ये बजट, interim budget तो है, ही लेकिन ये बजट inclusive और innovative बजट है। इस बजट में कॉन्टीन्यूटी का कॉन्फिडेंस है। ये बजट विकसित भारत के 4 स्तंभ- युवा, गरीब, महिला और किसान, सभी को Empower करेगा। ये बजट, देश के भविष्य के निर्माण का बजट है। इस बजट में 2047 के विकसित भारत की नींव को मजबूत करने की गारंटी है।

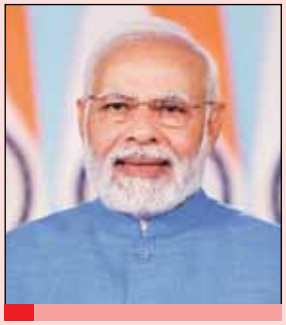

इस बजट में, युवा भारत की युवा आकांक्षाओं का, भारत की Young Aspirations का प्रतिबिंब है। बजट में दो महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। रिसर्च और इनोवेशन पर 1 लाख करोड़ रुपए का फंड बनाने की घोषणा की गई है। बजट में स्टार्टअप्स को मिलने वाली टैक्स छूट के विस्तार का ऐलान भी किया गया है। इस बजट में फिस्कल डेफिसिट को नियंत्रण में रखते हुए कैपिटल एक्सपेंडीचर को 11 लाख 11 हजार 111 करोड़ रुपए की ऐतिहासिक ऊंचाई दी गई है। अर्थशास्त्रियों की भाषा में कहें तो ये एक प्रकार से sweet spot है। इससे भारत में 21वीं सदी के आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण के साथ ही युवाओं के लिए अनगिनत रोजगार के नए अवसर तैयार होंगे। बजट में वंदे भारत स्टैंडर्ड की 40 हजार आधुनिक बोगियां बनाकर, उन्हें सामान्य यात्री ट्रेनों में लगाने का ऐलान किया गया है। इससे देश के अलग-अलग रेल रूट पर करोड़ों यात्रियों में आरामदायक यात्रा का अनुभव बढ़ेगा।

हम एक बड़ा लक्ष्य तय करते हैं, उसे प्राप्त करते हैं और फिर उससे भी बड़ा लक्ष्य अपने लिए तय करते हैं। गरीबों के लिए हमने गांवों और शहरों में 4 करोड़ से अधिक घर बनाए हैं। अब हमने 2 करोड़ और नए घर बनाने का लक्ष्य रखा है। हमने 2 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा था। अब इस लक्ष्य को बढ़ाकर 3 करोड़ लखपति दीदी बनाने का कर दिया गया है। आयुष्मान भारत योजना ने गरीबों की बहुत मदद की है। अब आंगनवाड़ी और आशा वर्कर, उन सबको इस योजना का लाभ मिलेगा।

इस बजट में गरीब और मध्यम वर्ग को Empower करने, उनके लिए आय के नए अवसर बनाने पर भी बहुत जोर दिया गया है। Rooftop Solar अभियान में 1 करोड़ परिवारों को सोलर रूफ टॉप के माध्यम से मुफ्त बिजली प्राप्त होगी। इतना ही नहीं, सरकार को अतिरिक्त बिजली बेचकर लोगों को 15 से 20 हजार प्रतिवर्ष की आय भी होगी और ये हर परिवार को होगी।

बजट में income tax remission scheme की घोषणा की गई है, उससे मध्यम वर्ग के करीब एक करोड़ लोगों को बड़ी राहत मिलेगी। पिछली सरकारों ने सामान्य मानवी के सिर पर दशकों से ये बहुत बड़ी तलवार लटका कर रखी थी। आज इस बजट में किसानों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण और बड़े निर्णय लिए गए हैं। नैनो DAP का उपयोग हो, पशुओं के लिए नई योजना हो, पीएम मत्स्य संपदा योजना का विस्तार हो, और आत्मनिर्भर ऑयल सीड अभियान हो, इससे किसानों की आय बढ़ेगी और खर्च कम होगा। ▪

तीसरे जनादेश से भारत तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था बनेगा - अमित शाह

लोकतंत्र के अंदर अगर मत निर्माण की प्रक्रिया ना हो तो लोकतंत्र में आत्मा ही नहीं रहती। दुर्भाग्य से हमारे देश में आजादी के बाद जितने भी चुनाव हुए, वे सारे चुनाव जातिवाद, परिवारवाद, तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार से प्रेरित रहे।

वर्ष 2024 सारी दुनिया में लोकतंत्र के पर्व का वर्ष है। दुनिया की 40 प्रतिशत आबादी चुनाव करने जा रही है। भारत भी चुनाव की प्रक्रिया से गुजरने वाला है और देश के 100 करोड़ मतदाता यह तय करेंगे कि देश के शासन की धुरी किस व्यक्ति के हाथ में रहेगी, किस पार्टी और विचारधारा के हाथ में रहेगी। जब जनसंघ के रूप में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई, तब से लेकर अब तक हमने कभी चुनाव को सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं माना। हमने इसे लोकतंत्र के उत्सव के रूप में स्वीकार किया है, माना है और मनाया है। हमने चुनाव को जनसंपर्क का जरिया माना है। अपने सिद्धांतों और विचारधारा को जनता के पास ले जाने का जरिया माना है। हमने चुनाव को जनता को अपनी उपलब्धियों और काम का हिसाब-किताब देने का जरिया माना है और इसीलिए देश के हर लोकसभा क्षेत्र में पार्टी का कोई न कोई नेता जाकर संपर्क कर रहा है।

लोकतंत्र के अंदर अगर मत निर्माण की प्रक्रिया ना हो तो लोकतंत्र में आत्मा ही नहीं रहती। दुर्भाग्य से हमारे देश में आजादी के बाद जितने भी चुनाव हुए, वे सारे चुनाव जातिवाद, परिवारवाद, तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार से प्रेरित रहे। कहीं जातिवाद से जनमत को प्रभावित किया गया, कभी परिवारवाद से जनमत को प्रभावित किया गया, कहीं तुष्टिकरण से जनमत को प्रभावित और संग्रहित किया गया और कहीं भ्रष्टाचार के पैसों से जनमत को कलर्ड करने का प्रयास किया गया। हमारे देश का लोकतंत्र इन चार नासूरों के बीच में पलता रहा। लेकिन नरेंद्र मोदी जी ने 10 ही साल के अंदर चारों नासूरों को समाप्त कर इनकी जगह 'पॉलिटिक्स ऑफ परफारमेंस' की स्थापना की। आज देश सच्चे लोकतंत्र की दिशा में जा रहा है।

महाभारत युद्ध की तरह इस चुनाव में भी दो धड़े आमने-सामने हैं। एक तरफ देशभक्तों की टोली जैसी भारतीय जनता पार्टी है, दूसरी तरफ सात परिवारवादी पार्टियों का गठबंधन है। कौन है ये इंडिया गठबंधन? घमंडिया गठबंधन में वही लोग शामिल हैं, जिनको अपने परिवार पर घमंड है। जो यह नहीं मानते कि देश में एक गरीब, चाय बेचने वाले का बेटा प्रधानमंत्री, प्रधानसेवक बन सकता है। वो यह मानते हैं कि प्रधानमंत्री पद उन लोगों की थाती है, जो एक बड़े परिवार में जन्म लेते हैं। अगर इन सातों पार्टियों का एनालिसिस करें, तो ये सभी परिवारवादी हैं। सोनिया गांधी अपने बेटे को प्रधानमंत्री बनाना चाहती हैं। शरद पवार जी अपनी बेटी को मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं। ममता बनर्जी अपने भतीजे को मुख्यमंत्री बनाना चाहती हैं। लालू जी अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं। स्टालिन भी अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं और मुलायम सिंह के बेटे फिर से मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं। जो अपने बेटे-बेटियों, भतीजे-भतीजियों को मुख्यमंत्री-प्रधानमंत्री बनाना चाहते हैं, वह भारत के गरीबों की चिंता नहीं कर सकते, भारत को दुनिया में सम्मान नहीं दिला सकते। भारत को विश्व में सम्मान वही व्यक्ति दिला सकता है, जिसके जीवन का क्षण-क्षण और शरीर का कण-कण मां भारती को समर्पित हो।

आपको जिन लोगों के बीच चुनाव करना है, उसमें एक वो लोग हैं, जो परिवार के लिए जीते हैं और दूसरे वो लोग हैं जो देश के लिए जीते हैं। ये पारदर्शिता का जमाना है और आप स्वयं यूपीए सरकार के 10 साल और एनडीए सरकार के 10 सालों की तुलना कर सकते हैं। कांग्रेस ने 10 साल में 12 लाख करोड़ के घपले-घोटाले किए। नरेंद्र मोदी जी पर 10 साल में चार आने के भ्रष्टाचार का भी कोई आरोप नहीं लगा सकता। कांग्रेस के दस सालों में माता-बहनों का सम्मान असुरक्षित था, देश की सीमाएं असुरक्षित थीं। हजारों करोड़ के घोटालों से देश का अर्थतंत्र रसातल में चला गया था। देश का सम्मान पाताल तक पहुंच गया था। मोदी सरकार के 10 सालों के बाद आज

किसी की हिम्मत नहीं कि देश की सीमाओं की तरफ देख सके। देश का अर्थतंत्र आजादी के बाद सबसे ज्यादा ऊंचाई पर है। अटल जी की सरकार अर्थव्यवस्था को 11वें नंबर पर छोड़कर गई थी। कांग्रेस के 10 सालों में यह 11 वें नंबर पर ही रही। मोदी जी की सरकार ने 10 साल के अंदर अर्थतंत्र को 11 नंबर से पांचवें नंबर पर लाने का काम किया। यह मोदी जी की गारंटी है कि आप तीसरा जनादेश दीजिए और देश दुनिया में तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने भ्रष्टाचार और आतंकवाद का सफाया कर देश को तेज गति से विकास के रास्ते पर ले जाने का काम किया है। लद्दाख से लक्षद्वीप तक, पूर्वोत्तर से पंजाब तक, किसान से विज्ञान तक, सेल्फ हेल्प ग्रुप से लेकर स्टार्टअप तक और सहकारिता से स्पेस तक हर क्षेत्र में नए आयाम गढ़े। डॉ. मनमोहन सिंह जी की सरकार के बारे में कहा जाता था कि देश को पॉलिसी पैरालिसिस हो गया है, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 40 प्रकार की नीतियां बनाई। 30 साल के बाद इस देश को नई शिक्षा नीति दी। हर नीति को उठाकर देखिए, उसमें देश की मिट्टी, देश का ढंग, देश की हवा और देश का रंग, ये चारों मिलेंगे। मोदी जी ने इस देश को गुलामी की निशानियों से मुक्त करने का काम किया है। देश के मन से हीनता का भाव दूर करने का काम किया है। भारत सब कुछ कर सकता है, भारत विश्व में सर्वप्रथम बनने के लिए है और इस स्थान पर अधिकार अगर किसी एक देश का है, तो वह भारत का है, ये आत्मविश्वास देश के मन में पैदा करने का काम मोदी जी ने किया है।

हम दुनिया के सबसे पुराने और सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। हम सभी का दायित्व है कि लोकतंत्र के इस महान पर्व के अंदर हम जनादेश को पूरी सूझबूझ के साथ बनाएं, हम किसी नेता या किसी पार्टी के खोखले वादों के आधार पर न जाएं। ऐसी पार्टी को चुनें, जिसने वादे पूरे किए हों। पार्टी ऐसी चुनें, जिसने जो कहा था वह किया भी है। ऐसी पार्टी चुनें जिसमें भविष्य देखने का, भविष्य की कल्पना करने का माद्दा हो। भविष्य का लक्ष्य तय करने की सोच हो। हमारी नीतियों में मानवीय संवेदना है। हमारी नीतियों में सर्वस्पर्शी और सर्व समावेशी विकास का दृष्टिकोण है। हमारी नीतियों में महान भारत के निर्माण का संकल्प है। हमारी नीतियों में भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण को समाप्त करने की दृढ़ता है और हमारी नीतियों में अभेद्य सुरक्षा वाले महान भारत की रचना का संकल्प भी है।

हम नई पार्लियामेंट बनाते हैं तो कांग्रेस कहती है क्या जरूरत है। किंग पंचम जॉर्ज का बनाया हुआ राजमार्ग जो अंग्रेजों की गुलामी का प्रतीक था, जब उसे कर्तव्य पथ बनाया जाता है और किंग जॉर्ज पंचम की जगह पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा लगाई जाती है, तो उसका भी विरोध करते हैं। 2014 से 24 के बीच के 10 साल साहसिक फैसलों, दुर्गम निर्णयों और उज्जवल भविष्य के सपनों के 10 साल रहे हैं। हमने संकल्प ले रखा था कि हम धारा 370 को हटाकर समाप्त कर देंगे। कांग्रेस ने इसे तुष्टिकरण के चलते दशकों तक बनाए रखा, मोदी जी ने एक झटके में हटा दिया। आज हमारा कश्मीर भारत माता का मुकुटमणि बनकर समग्र विश्व के सामने तिरंगे के साथ खड़ा है। 30 साल के बाद वहां थिएटर चालू हुए, 30 साल के बाद लाल चौक पर जन्माष्टमी मनाई जाती है, 30 साल के बाद वहां मोहर्रम का जुलूस निकलता है और 30 साल के बाद देश-विदेश के दो करोड़ पर्यटक वहां पहुंचते हैं। पड़ोसी देशों से आए हुए नागरिक जो अपनी बहन-बेटियों का सम्मान और धर्म बचाने के लिए भारत आए हैं, उनसे आजादी के बाद ही नागरिकता देने का वादा किया गया था। लेकिन उसे 70 सालों में पूरा नहीं किया गया। मोदी जी ने कानून लाकर एक करोड़ लोगों को नागरिकता देकर आजादी के समय का वादा पूरा किया। मुस्लिम बहनों को उनका अधिकार नहीं मिलता था। कभी भी उन्हें अपमानित करके आधी रात को घर से बाहर निकाल दिया जाता था। मोदी जी ने ट्रिपल तलाक को भी समाप्त कर दिया। किसानों के लिए स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को हमने माना और 150 प्रतिशत एमएसपी का रेट तय किया। वन रैंक वन पेंशन का मसला भी हमने समाप्त कर दिया।

देश में आतंकवाद के तीन हॉटस्पॉट थे, जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर और वामपंथी उग्रवाद। मध्यप्रदेश भी वामपंथी उग्रवाद से पीड़ित था। आज मैं बड़े आनंद के साथ कह सकता हूं कि तीनों हॉटस्पॉट में हिंसक घटनाओं में 70 प्रतिशत की कमी और मृत्यु में 72 प्रतिशत की कमी आई है। नक्सलवाद, आतंकवाद और उग्रवाद इस देश में अंतिम सांसें ले रहे हैं। एक बार जनादेश दे दीजिए, ये समाप्त हो जाएंगे। कोविड संकट के दौरान जिस तरह से मोदी जी ने पूरे देश को एकजुट किया और उस आपदा का सामना किया, उसकी कायल सारी दुनिया है। मोदी जी की प्रेरणा से बनी वैक्सीन ने देशवासियों की जान तो बचाई ही, 100 देशों के लोगों को भी सुरक्षा दी। सारी दुनिया की तुलना में भारत में नुकसान सबसे कम हुआ, क्योंकि यहां पर सिर्फ सरकार ने नहीं बल्कि सरकार और जनता ने मिलकर इस महामारी का मुकाबला किया। ▪

मोदी जी के नेतृत्व में आदर्श शासन - डॉ. मोहन यादव

जिस धरती से हम बात कर रहे हैं, इस धरती पर एक हजार साल पहले राजा भोज का शासन था। हमने एक हजार साल पहले के राजा भोज को नहीं देखा, लेकिन राजा भोज के हाथों से लिखे भोजपत्र व ताम्रपत्र व उसके प्रमाण हमारे पांडुलिपियों

में प्राप्त होते हैं। भोजपत्र में अपनी समस्त शक्ति, ताकत, बुद्धि, युक्ति लगाकर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में एक शासक कितने प्रकार से सोचता है, उसके प्रमाण हमारी पांडुलिपियों में प्राप्त होते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में निश्चित तौर पर राजा भोज के समय का आदर्श शासन दोहराया जायेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत का दुनिया के हर क्षेत्र में मान, सम्मान और प्रतिष्ठा बढ़ी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जनतंत्र को गौरवान्वित करने वाला विश्व के सबसे बड़े जनतंत्र का सबसे सशक्त मंत्रिमंडल है।

भारत हर क्षेत्र में आगे बढ़ा - श्री विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 2014 के बाद भारत राजनीतिक क्षेत्र के

साथ हर क्षेत्र में आगे बढ़ा है और दुनिया के अंदर अपना स्थान बनाया है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत गरीब कल्याण, विकास, सुशासन के साथ 5 ट्रिलियन इकोनॉमी के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आज भारत विश्व में जिस स्थान पर पहुंचा है वह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में ही संभव हो सका है। समाज के विकास में प्रबुद्धजनों की महती भूमिका है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में जिस प्रकार देश का विकास किया गया है और हर वर्ग के कल्याण के कार्य हुए हैं, यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार ही कर सकती है। ▪

विकसित भारत के संकल्प का बजट - विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सोच यह है कि युवा, किसान, गरीब, महिला आदि सभी वर्गों को मजबूती कैसे दी जा सकती है। भारतीय जनता पार्टी सिर्फ चुनाव जीतने और सरकार में आने के लिए नहीं है, अयोध्या में श्रीराम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा था कि यह देश के अमृतकाल की शुरुआत है। उनका संकल्प है कि आजादी के अमृतकाल में 2047 तक विकसित भारत कैसे बनाया जाए। देश के अन्य नेता जो सोचते हैं, प्रधानमंत्री जी का विजन उससे 100 साल आगे का होता है। अंतरिम बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 11 लाख 11 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान करना, रक्षा के क्षेत्र में 11.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी करना इसी दिशा में उठाए गए कदम हैं। भारत का लक्ष्य अगले तीन साल में 5 ट्रिलियन और 2030 तक 7 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का है, जिसे हासिल करने में यह बजट काफी मददगार सिद्ध होगा।

प्रधानमंत्री जी का फोकस गरीब, युवा, किसान, महिला आदि सभी वर्गों के उत्थान पर है। इसीलिए इस बजट के अंदर भी दो करोड़ लोगों को प्रधानमंत्री आवास देने, स्व-सहायता समूहों के माध्यम हमारी बहनों को सक्षम बनाने के प्रावधान किए गए हैं। हमारे लिए महिला सशक्तीकरण केवल नारा नहीं है, इसीलिए बजट में तीन करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा गया है। आंगनवाड़ी वर्कर को 5 लाख तक का फ्री में इलाज कराने का अधिकार आयुष्मान योजना में दिया जा रहा है। कोरोना काल में प्रधानमंत्री जी ने 80 करोड़ परिवारों को पांच किलो अनाज मुफ्त देना शुरू किया था, जिसे पांच साल के लिए और बढ़ा दिया गया है। यही वजह है कि हमारे प्रधानमंत्री जी की छवि गरीबों के मसीहा के रूप में बन गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने जो काम किए हैं, चाहे वो रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा हो, या गरीबों का जीवन बदलने तथा

प्रधानमंत्री जी का फोकस गरीब, युवा, किसान, महिला आदि सभी वर्गों के उत्थान पर है। इसीलिए इस बजट के अंदर भी दो करोड़ लोगों को प्रधानमंत्री आवास देने, स्व-सहायता समूहों के माध्यम हमारी बहनों को सक्षम बनाने के प्रावधान किए गए हैं।

उन्हें सशक्त और सबल बनाने का अभियान हो, यही काम हमारी ताकत हैं। प्रधानमंत्री जी ने भारत की संस्कृति और उसके सम्मान को सारी दुनिया में स्थापित किया है। चाहे वह अंतरराष्ट्रीय योगा डे हो, या फिर रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हो, इनके साथ पूरी दुनिया खड़ी दिखाई दी। आज सारी दुनिया यह महसूस कर रही है कि यह नव भारत का नवोत्कर्ष है। यही हमारे आत्मविश्वास का आधार है। हमारी केंद्रीय वित्त मंत्री अगर यह कहती हैं कि जुलाई माह में हम बजट प्रस्तुत करेंगे, जिसमें बाकी चीजें आएंगी, तो यही हमारा कान्फिडेंस है। हम कहते हैं कि 'मोदी के मन में एमपी' तो अब एमपी के मन में भी मोदी जी हैं। हमारा हर बूथ मोदी बूथ बनेगा और आगामी लोकसभा चुनाव में हम सभी 29 सीटों पर जीत हासिल करेंगे। मोदी जी के नेतृत्व में राम रीत से नए भारत का निर्माण हो रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में राजनीति का कल्चर बदल गया है। राजनीति में एक वर्क कल्चर शुरू हुआ है, जिसका अर्थ है काम के आधार पर आगे बढ़ना। हर व्यक्ति, जो मिनिस्टर हो या कोई पार्टी पदाधिकारी हो, उसे शुचिता की राजनीति का दिखावा नहीं करना है, बल्कि इसे करके दिखाना है। यही प्रधानमंत्री जी की सोच है।

प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि जो काम मैं नहीं करने के लिए दूसरों को कहता हूं, वो काम मैं स्वयं भी नहीं करता हूं। इसी में मेरा आत्मबल और आत्मविश्वास है। मध्यप्रदेश में हाल ही में हमारी नई सरकार बनी है और उस सरकार के मंत्रियों का भी एक प्रशिक्षण वर्ग गुड गवर्नेंस को लेकर होने जा रहा है। उसमें मंत्रियों को यह बताया जाएगा कि हमारे लिए गुड गवर्नेंस एक शब्द मात्र नहीं है, बल्कि हमें उसे साकार करके दिखाना है। ▪

तीसरा कार्यकाल अगले हजार वर्षों की मजबूत नींव रखेगा

संसद के इस नए भवन में जब आदरणीय राष्ट्रपति जी हम सबको संबोधित करने के लिए आईं, और जिस गौरव और सम्मान के साथ सेंगोल पूरे procession का नेतृत्व कर रहा था, और हम सब उसके पीछे पीछे चल रहे थे। नए सदन में ये नई परंपरा भारत की आजादी के उस पवित्र पल का प्रतिबिंब, जब साक्षी बनता है तो लोकतंत्र की गरिमा कई गुना ऊपर चली जाती है। ये 75वां गणतंत्र दिवस, इसके बाद संसद का नया भवन, सेंगोल की अगुआई, ये सारा दृश्य अपने आप में बहुत ही प्रभावी था। मैं जब वहां से पूरे कार्यक्रम में भागीदारी कर रहा था। यहां से तो उतना हमें भव्यता नजर नहीं आती है। लेकिन वहां से जब मैंने देखा कि वाकई नए सदन में इस गरिमामयी उपस्थिति में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति द्वारा, हम सबके मन को प्रभावित करने वाला वो दृश्य हमेशा-हमेशा याद रहेगा। विपक्ष ने जो संकल्प लिया है उसकी सराहना करता हूं। उनके भाषण की एक-एक बात से मेरा और देश का विश्वास पक्का हो गया है, कि इन्होंने लंबे अर्से तक वहां रहने का संकल्प ले लिया है। आप कई दशक तक जैसे यहां बैठे थे, वैसे ही कई दशक तक वहां बैठने का आपका संकल्प और जनता जनार्दन तो ईश्वर का रूप होती है। और आप लोग जिस प्रकार से इन दिनों मेहनत कर रहे हैं। मैं पक्का मानता हूं कि ईश्वर रूपी जनता जनार्दन आपको जरूर आशीर्वाद देगी। और आप जिस ऊंचाई पर हैं उससे भी अधिक ऊंचाई पर जरूर पहुंचेंगे और अगले चुनाव में दर्शक दीर्घा में दिखेंगे।

बहुत लोग चुनाव लड़ने का हौसला भी खो चुके हैं। और बहुत लोग पिछली बार भी सीट बदली, इस बार भी सीट बदलने की फिराक में हैं। और बहुत से लोग अब लोकसभा की बजाय राज्यसभा में जाना चाहते हैं तो स्थितियों का आकलन करके वो अपना-अपना रास्ता ढूंढ रहे हैं।

राष्ट्रपति जी का भाषण एक प्रकार से तथ्यों के आधार पर, हकीकतों के आधार पर एक बहुत बड़ा दस्तावेज है, जो देश के सामने राष्ट्रपति जी ने रखा है। और इस पूरे दस्तावेज को आप देखेंगे तो उन हकीकतों को समेटने का प्रयास किया है,

राष्ट्रपति जी का भाषण एक प्रकार से तथ्यों के आधार पर, हकीकतों के आधार पर एक बहुत बड़ा दस्तावेज है, जो देश के सामने राष्ट्रपति जी ने रखा है।

और इस पूरे दस्तावेज को आप देखेंगे तो उन हकीकतों को समेटने का प्रयास किया है, जिससे देश किस स्पीड से प्रगति कर रहा है, किस स्केल के साथ गतिविधियों का विस्तार हो रहा है, उसका लेखा-जोखा राष्ट्रपति जी ने प्रस्तुत किया है।

जिससे देश किस स्पीड से प्रगति कर रहा है, किस स्केल के साथ गतिविधियों का विस्तार हो रहा है, उसका लेखा-जोखा राष्ट्रपति जी ने प्रस्तुत किया है। आदरणीय राष्ट्रपति जी ने भारत के उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखते हुए चार मजबूत स्तंभों पर हम सबका ध्यान केंद्रित किया है, और उनका सही-सही आकलन है कि देश के चार स्तम्भ जितने ज्यादा मजबूत होंगे, जितने ज्यादा विकसित होंगे, जितने ज्यादा समृद्ध होंगे, हमारा देश उतना ही समृद्ध होगा, उतना ही तेजी से समृद्ध होगा। और उन्होंने इन 4 स्तंभों का उल्लेख करते हुए देश की नारी शक्ति, देश की युवा शक्ति, देश के हमारे गरीब भाई-बहन, और देश के हमारे किसान, हमारे मछुआरे, हमारे पशुपालक उनकी चर्चा की है। इनके सशक्तिकरण के माध्यम से राष्ट्र के विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के जो राह हैं उसका स्पष्ट दिशा निर्देश आदरणीय राष्ट्रपति जी ने कहा है अच्छा होता, हो सकता है आपके यहां fisherman minority के न हों, हो सकता है आपके यहां पशुपालक minority के न हों, हो सकता है किसान आपके यहां minority के न हों, हो सकता है महिलाएं आपके यहां minority

में न हों, हो सकता है कि आपके यहां युवा में minority. क्या हो गया है दादा? ये क्या इस देश के युवा की बात होती है। समाज के सब वर्ग नहीं होते हैं। क्या देश की नारी की बात होती है। देश की सभी नारी नहीं होती हैं। कब तक टुकड़ों में सोचते रहोगे, कब तक समाज को बांटते रहोगे। शब्द सीमा करो, सीमा करो, बहुत तोड़ा देश को।

अच्छा होता कि जाते-जाते तो कम से कम इस चर्चा के दरमियान कुछ सकारात्मक बातें होती। कुछ सकारात्मक सुझाव आते, लेकिन हर बार की तरह आप सब साथियों ने देश को बहुत निराश किया है। क्योंकि आपकी सोच की मर्यादा देश समझता रहा है। उसको बार बार दर्द होता है कि ये दशा है इनकी। इनकी सोचने की मर्यादा इतनी है।

नेता तो बदल गए, लेकिन टैप रिकॉर्डर वही बज रही है। वही बातें, कोई नयी बात आती नहीं। और पुरानी ढपली और पुराना राग, वही चलता रहता है आपका। चुनाव का वर्ष था थोड़ी मेहनत करते, कुछ नया निकालकर के लाते जनता को जरा संदेश दे पाते, उसमें भी फैल गए आप। चलिए ये भी मैं सिखाता हूं।

आज विपक्ष की जो हालत हुई है ना, इसकी सबसे दोषी कांग्रेस पार्टी है। कांग्रेस को एक अच्छा विपक्ष बनने का बहुत बड़ा अवसर मिला और 10 साल कम नहीं होते हैं। लेकिन 10 साल में उस दायित्व को निभाने में भी वे पूरी तरह विफल रहे। और जब खुद विफल हो गए तो विपक्ष में और भी होनहार लोग हैं, उनको भी उभरने नहीं दिया, क्योंकि फिर मामला और गड़बड़ हो जाए, इसलिए हर बार यही करते रहे कि और भी विपक्ष के जो तेजस्वी लोग हैं उनको दबा दिया जाए। हाउस में कई यंग हमारे माननीय सांसद गण हैं। उत्साह भी, उमंग भी है। लेकिन अगर वो बोलें, उनकी छवि उभर जाए तो शायद किसी की छवि बहुत दब जाए। उस चिंता में इस young generation को मौका न मिले, हाउस को चलने नहीं दिए गए। यानि एक प्रकार से इतना बड़ा नुकसान कर दिया है। खुद का भी, विपक्ष का भी, संसद का भी और देश का भी। और इसलिए और मैं हमेशा चाहता हूं कि देश को एक स्वस्थ अच्छे विपक्ष की बहुत जरूरत है। देश ने जितना परिवारवाद का खामियाजा उठाया है। और उसका खामियाजा खुद कांग्रेस ने भी उठाया है।

अब हालत देखिए खड़गे जी इस सदन से उस सदन शिफ्ट हो गए, और गुलाम नबी जी तो पार्टी से ही शिफ्ट कर गए। ये सब परिवारवाद की भेंट चढ़ गए। एक ही प्रोडक्ट बार-बार लॉन्च करने के चक्कर में कांग्रेस की दुकान पर ताला लगने की नौबत आ गई है। और ये दुकान हम नहीं कह रहे आप लोग कह रहे हैं। आप लोग कहते हैं दुकान खोली है, सब जगह पर बोलते हैं। दुकान पर ताला लगने की बात आ गई है। यहां हमारे दादा अपनी आदत छोड़ नहीं पाते हैं वो वहां से बैठे-बैठे कमेंट कर रहे हैं परिवारवाद की।

हम किस परिवार वाद की चर्चा करते हैं। अगर किसी परिवार में अपने बलबुते पर जनसमर्थन से एक से अधिक अनेक लोग अगर राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रगति करते हैं। उसको हमने कभी परिवारवाद नहीं कहा है। हम परिवारवाद की चर्चा वो करते हैं जो पार्टी परिवार चलाता है, जो पार्टी परिवार के लोगों को प्राथमिकता देती है। जो पार्टी के सारे निर्णय परिवार के लोग ही करते हैं। वो परिवारवाद है। ना राजनाथ जी की कोई political party है, ना अमित शाह की कोई political party है। और इसलिए जहां एक परिवार की दो पार्टियां लिखी जाती है, वो लोकतंत्र में उचित नहीं है। लोकतंत्र में पार्टी पद, अनेक एक परिवार के दस लोग राजनीति में आए कुछ बुरा नहीं है। हम तो चाहते हैं, नौजवान लोग आएं। हम भी चाहते हैं, इसकी चर्चा करिए, हमारे साथ आपके साथ मेरा विषय नहीं है। देश के लोकतंत्र के लिए परिवारवादी राजनीति, परिवारिक पार्टियों की राजनीति, ये हम सबकी चिंता का विषय होना चाहिए। और इसलिए मैं किसी परिवार के 2 लोग अगर प्रगति करते हैं, उसका तो मैं स्वागत करूंगा, 10 लोग प्रगति करें, मैं स्वागत करूंगा। देश में जितनी नई पीढ़ी, अच्छे लोग आए, स्वागत योग्य है। सवाल ये है कि परिवार ही पार्टियां चलाती हैं। पक्का है, ये अध्यक्ष नहीं होगा तो उसका बेटा होगा, ये नहीं है होगा तो उसका बेटा होगा। ये लोकतंत्र का खतरा है।

एक ही प्रोडक्ट को बार-बार launch करने का भरपूर प्रयास हो रहा है।

कांग्रेस एक परिवार में उलझ गई है, देश के करोड़ों परिवारों की आकांक्षाएं और उपलब्धियां वो देख पा ही नहीं रहे हैं, देख सकते नहीं, अपने परिवार के बाहर देखने की तैयारी नहीं है। और कांग्रेस में एक कैंसिल कल्चर डेवलप हुआ है, कुछ भी है- कैंसिल, कुछ भी है - कैंसिल। एक ऐसे कैंसिल कल्चर में कांग्रेस फंस गई है। अगर हम कहते हैं कि मेक इन इंडिया तो कांग्रेस कहती है- कैंसिल, हम कहते हैं- आत्मनिर्भर भारत कांग्रेस कहती है- कैंसिल, हम कहते हैं वोकल फॉर लोकल, कांग्रेस कहती है- कैंसिल, हम कहते हैं- वंदे भारत ट्रेन, कांग्रेस कहती है- कैंसिल, हम कहते हैं संसद की नई इमारत कांग्रेस कहती है- कैंसिल। यानि मैं हैरान हूँ, ये कोई मोदी की उपलब्धियां नहीं हैं, ये देश की उपलब्धियां हैं। इतनी नफरत, कब तक पाले रखोगे, और उसके कारण देश की सफलताएं, देश के achievement उसको भी कैंसिल करके आप बैठ गए हो।

राष्ट्रपति जी ने विकसित भारत के रोडमैप पर चर्चा करते हुए आर्थिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। अर्थव्यवस्था के मूलभूत जो आधार हैं, उस पर बारीकी से चर्चा की। और भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था को आज पूरी दुनिया सराह रही है, पूरी दुनिया उससे प्रभावित है, और जब विश्व संकट से गुजर रहा है, तब तो उनको और ज्यादा अच्छा लगता है। जी-20 समिट के अंदर सारे देश ने देखा है कि पूरा विश्व भारत के लिए क्या सोचता है, क्या कहता है, क्या करता है। और इन सारे 10 साल के कार्यकाल के अनुभव के आधार पर आज की मजबूत अर्थव्यवस्था को देखते हुए जिस तेज गति से भारत विकास कर रहा है, उसकी बारीकियों को जानते हुए मैं विश्वास से कहता हूं, और इसीलिए मैंने कहा है कि हमारे तीसरे टर्म में भारत दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक ताकत बनेगा, और ये मोदी की गारंटी है।

जब हम दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बनकर के उभरेंगे, कहते हैं, तो हमारे विपक्ष में बैठे कुछ साथी कैसा कुतर्क देते हैं, वो कहते हैं - इसमें क्या है ये तो अपने आप हो जाएगा। क्या कमाल है आप लोगों का, मोदी का क्या है, ये तो अपने आप हो जाएगी। मैं जरा सरकार की भूमिका क्या होती है, इस सदन के माध्यम से देश को और विशेषकर के देश के युवा मन को बताना चाहता हूं, देश की युवा शक्तियों को बताना चाहता हूं कि होता कैसे है, और सरकार की भूमिका क्या होती है।

10 साल पहले 2014 में फरवरी महीने में जो Interim Budget आया था, उस समय कौन लोग बैठे थे, आपको तो मालूम ही है, देश को भी मालूम है। जो 10 साल पहले Interim Budget आया था, उसे पेश करते समय उस समय के वित्त मंत्री ने जो कहा था, मैं उसको कोट कर रहा हूं, और एक-एक शब्द बड़ा मूल्यवान है जी। जब आप लोग कहते हैं ना कि ये तो अपने आप तीसरे नंबर पर चला ही जाएगा, ऐसा कहते हैं उनको जरा समझना चाहिए। ये उन्होंने क्या कहा था – I now wish to look forward and outline a vision for the future, vision for the future. पूरे ब्रह्मांड के सबसे बड़े अर्थशास्त्री बोल रहे थे - I now wish to look forward and outline a vision for the future. आगे कहते हैं – I wonder how many have noted the fact that India's economy in terms of size of its GDP is the 11th largest in the world. यानि 2014 में 11 नंबर पहुंचने पर क्या गौरवगान होता था। आज 5 पर पहुंच गए और आपको क्या हो रहा है।

मैं आगे पढ़ रहा हूं ध्यान से सुनिए, उन्होंने

कहा था – it is 11th largest in the world, बड़ी गौरव की बात थी। There are great things in the stone फिर आगे कहते हैं – there is a well argued view that in the next three decades, India's nominal GDP will take the country to the 3rd rank after the US and China. उस समय ये ब्रह्मांड के बड़े अर्थशास्त्री कह रहे थे कि तीसरे नंबर पर तीस साल में हम पहुंच जाएंगे, 30 साल और फिर कहा था ये मेरा vision जो मैं. बहुत लोग हैं जो ये ख्यालों में रहते हैं, वो ब्रह्मांड के सबसे बड़े अर्थशास्त्री है। ये लोग 2014 में कह रहे हैं और vision क्या देखते हैं कि अरे 2044 यानि 2044 तक तीसरी अर्थव्यवस्था की बात ये इनकी सोच, ये इनकी मर्यादा। सपना ही देखने का सामर्थ्य खो चुके थे ये लोग, संकल्प तो दूर की बात थी। तीस साल का इंतजार करने के लिए मेरे देश की युवा पीढ़ी को ये कहकर गए थे। लेकिन हम आज आपके सामने विश्वास से खड़े हैं, इस पवित्र सदन में खड़े हैं। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि 30 साल हम नहीं लगने देंगे- ये मोदी की गारंटी है, मेरे तीसरे कार्यकाल में देश-दुनिया की तीसरी आर्थिक शक्ति बन जाएगा। कैसे लक्ष्य रखते थे, इनकी सोच कहां तक जाती थी, दया आती है। और आप लोग 11 नंबर पर बड़ा गर्व कर रहे थे, हम 5 नंबर पर पहुंचा दिए जी। लेकिन अगर 11 पर पहुंचने से आपको खुशी होती थी, तो 5 नंबर पहुंचने पर भी खुशी होनी चाहिए, देश 5 नंबर पर पहुंचा है, आपको खुशी होनी चाहिए, किस बीमारी में फंसे पड़े हो आप।

भाजपा सरकार की काम करने की स्पीड, हमारे लक्ष्य कितने बड़े होते हैं, हमारा हौसला कितना बड़ा होता है, वो आज पूरी दुनिया देख रही है।

एक कहावत, हमारे उत्तर प्रदेश में खास ये कहावत कही जाती है -

नौ दिन चले अढ़ाई कोस,

और मुझे लगता है कि ये कहावत पूरी तरह कांग्रेस को परिभाषित कर देती है। ये कांग्रेस की सुस्त रफ्तार का कोई मुकाबला नहीं है। आज देश में जिस रफ्तार से काम हो रहा है, कांग्रेस सरकार इस रफ्तार की कल्पना भी नहीं कर सकती है।

शहरी गरीबों के लिए, हमने गरीबों के लिए 4 करोड़ घर बनाए। और शहरी गरीबों के लिए 80 लाख पक्के मकान बने। अगर कांग्रेस की रफ्तार से ये घर बने होते तो क्या हुआ होता मैं इसका हिसाब लगाता हूं, अगर कांग्रेस की जो रफ्तार थी, उस प्रकार चला होता तो 100 साल लगते इतना काम करने में, 100 साल लगते। पांच पीढ़ियां गुजर जातीं।

10 वर्ष में 40 हजार किलोमीटर रेलवे ट्रैक का electrification हुआ। अगर कांग्रेस की रफ्तार से देश चलता, इस काम को करने में 80 साल लग जाते, एक प्रकार से 4 पीढ़ियां गुजर जातीं।

हमने 17 करोड़ से अधिक गैस कनेक्शन दिए, ये मैं 10 साल का हिसाब दे रहा हूं। अगर कांग्रेस की चाल से चलते तो ये कनेक्शन देने में और 60 साल लग जाते, 3 पीढ़ियां धुएं में खाना पकाते-पकाते गुजर जाती।

हमारी सरकार में सेनिटेशन कवरेज 40 परसेंट से 100 पर्सेंट तक पहुंची है। अगर कांग्रेस की रफ्तार होती तो ये काम होते-होते 60-70 साल और लगते और कम से कम तीन पीढ़ियां गुजर जातीं, लेकिन गारंटी नहीं होता कि नहीं होता।

कांग्रेस की जो मानसिकता है, जिसका देश को बहुत नुकसान हुआ है। कांग्रेस ने देश के सामर्थ्य पर कभी भी विश्वास नहीं किया है, वे अपने-आपको शासक मानते रहे और जनता-जनार्दन को हमेशा कमतर आंकते गए, छोटा आंकते गए।

देश के नागरिकों के लिए कैसा सोचते थे, मैं जानता हूं, मैं नाम बोलूंगा तो उनको जरा चुभन होगी। लेकिन 15 अगस्त, लाल किले से प्रधानमंत्री नेहरू ने जो कहा था, वो मैं जरा पढ़ता हूं- लाल किले से भारत के प्रथम प्रधानमंत्री ने जो कहा था, वो पढ़ रहा हूं नेहरू जी ने, उन्होंने कहा था-

हिन्दुस्तान में काफी मेहनत करने की आदत आमतौर से नहीं है। हम इतना काम नहीं करते थे, जितना कि यूरोप वाले या जापान वाले, या चीन वाले, या रूस वाले, या अमेरिका वाले करते हैं।

ये नेहरू जी लाल किले से बोल रहे हैं। ये न समझिए कि वो कौमें कोई जादू से खुशहाल हो गईं, वो मेहनत से हुई हैं और अक्ल से हुई हैं।

ये उनको सर्टिफिकेट दे रहे हैं, भारत के लोगों को नीचा दिखा रहे हैं। यानी नेहरू जी की भारतीयों के प्रति सोच थी कि भारतीय आलसी हैं। नेहरू जी की भारतीयों के लिए सोच थी कि भारतीय कम अक्ल के लोग होते हैं।

इंदिरा जी की सोच भी उससे ज्यादा अलग नहीं थी। इंदिरा जी ने जो लाल किले से 15 अगस्त को कहा था- लाल किले से 15 अगस्त को इंदिरा जी ने कहा था-

दुर्भाग्यवश हमारी आदत ये है कि जब कोई शुभ काम पूरा होने को होता है तो हम आत्मतुष्टि की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं और जब कोई कठिनाई आ जाती है तो हम ना उम्मीद हो जाते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगने लगता है कि पूरे राष्ट्र ने ही पराजय भावना को अपना लिया है।

आज कांग्रेस के लोगों को देख करके लगता है कि इंदिरा जी भले देश के लोगों का आकलन सही न कर पाईं, लेकिन कांग्रेस का एकदम सटीक आकलन उन्होंने किया था। कांग्रेस के शाही परिवार के लोग मेरे देश के लोगों को ऐसा ही समझते थे, क्योंकि वे सब ऐसे ही थे। और आज भी वही सोच देखने को मिलती है।

कांग्रेस का विश्वास हमेशा सिर्फ एक परिवार पर रहा है। एक परिवार के आगे वो न कुछ सोच सकते हैं, न कुछ देख सकते हैं। कुछ दिन पहले भानुमति का कुनबा जोड़ा, लेकिन फिर एकला चलो रे करने लग गए। कांग्रेस के लोगों ने नया-नया मोटर-मैकनिक का काम सीखा है और इसलिए alignment क्या होता है उसका ध्यान तो हो गया होगा। लेकिन मैं देख रहा हूं Alliance का ही alignment बिगड़ गया। इनको अपने इस कुनबे में अगर एक-दूसरे पर विश्वास नहीं है, तो ये लोग देश पर विश्वास कैसे करेंगे।

हमें देश के सामर्थ्य पर भरोसा है, हमें लोगों की शक्ति पर भरोसा है।

देश की जनता ने हमें जब पहली बार सेवा करने का अवसर दिया तो हमने पहले कार्यकाल में यूपीए के समय के जो गड्ढे थे, वो गड्ढे भरने में हमारा काफी समय और शक्ति लगी। हम पहले कार्यकाल में वो गड्ढे भरते रहे। हमने दूसरे कार्यकाल में नए भारत की नींव रखी और तीसरे कार्यकाल में हम विकसित भारत के निर्माण को नई गति देंगे।

पहले कार्यकाल में हमने स्वच्छ भारत, उज्ज्वला, आयुष्मान भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ... उसी प्रकार से सुगम्य भारत, डिजिटल इंडिया... ऐसे कितने ही जनहित के कामों को अभियान का स्वरूप दे करके आगे बढ़ाया। टैक्स व्यवस्था आसान हो, इसके लिए जीएसटी जैसे निर्णय लिए। और हमारे इन कामों को देख करके जनता ने भरपूर समर्थन दिया। जनता ने बहुत आशीर्वाद दिए। पहले से भी ज्यादा आशीर्वाद दिए। और हमारा दूसरा कार्यकाल प्रारंभ हुआ। दूसरा कार्यकाल संकल्पों और वचनों की पूर्ति का कार्यकाल रहा। जिन उपलब्धियों का देश लम्बे समय से इंतजार कर रहा था वो सारे काम हमने दूसरे कार्यकाल में पूरे होते देखे हैं। हम सबने 370 खत्म होते हुए देखा है, नारी शक्ति वंदन अधिनियम, ये दूसरे कार्यकाल में कानून बना।

अंतरिक्ष से ले करके ओलंपिक तक, सशक्त बलों से संसद तक नारी शक्ति के सामर्थ्य की गूंज उठ रही है। ये नारी शक्ति के सशक्तिकरण को देश ने देखा है।

उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक लोगों ने दशकों से अटकी, भटकी, लटकी योजनाओं को समयबद्ध तरीके से पूरे होते हुए देखा है।

अंग्रेजी शासन के पुराने कानून जो दंड प्रधान थे, उन दंड प्रधान कानूनों से हट करके हमने

न्याय संहिता तक प्रगति की है। हमारी सरकार ने सैकड़ों ऐसे कानूनों को समाप्त किया, जो अप्रासंगिक हो गए थे। सरकार ने 40 हजार से ज्यादा compliances खत्म कर दिए।

भारत ने अमृत भारत और नमो भारत ट्रेनों से भविष्य की उन्नति के सपने देखे हैं।

देश के गांव-गांव ने, देश के कोटि-कोटि जनों ने विकसित भारत की संकल्प यात्रा देखी है और saturation के पीछे कितनी मेहनत की जाती है, उसके हक की चीज उसको मिले, उसके दरवाजे पर दस्तक देकर करके देने का प्रयास देश पहली बार देख रहा है।

भगवान राम न सिर्फ अपने घर लौटे, बल्कि एक ऐसे मंदिर का निर्माण हुआ, जो भारत की महान सांस्कृतिक परंपरा को नई ऊर्जा देता रहेगा।

अबकी बार मोदी सरकार, पूरा देश कह रहा है अबकी बार मोदी सरकार, खड़गे जी भी कह रहे हैं अबकी बार मोदी सरकार।

देश का मिजाज, एनडीए को 400 पार करवाकर ही रहेगा। लेकिन भारतीय जनता पार्टी को 370 सीट अवश्य देगा। बीजेपी को 370 सीट और एनडीए को 400 पार।

हमारा तीसरा कार्यकाल बहुत बड़े फैसलों का होगा। मैंने लाल किले से कहा था और राम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा के समय भी मैंने उसको दोहराया था। मैंने कहा था- देश को अगले हजार वर्षों तक समृद्ध और सिद्धि के शिखर पर देखना चाहता हूँ। तीसरा कार्यकाल अगले एक हजार वर्षों के लिए एक मजबूत नींव रखने का कार्यकाल बनेगा।

मैं भारतवासियों के लिए, उनके भविष्य के लिए बहुत ही विश्वास से भरा हुआ हूँ। मेरा देश के 140 करोड़ नागरिकों के सामर्थ्य पर अपार भरोसा है, मेरा बहुत विश्वास है। 10 वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं, ये सामर्थ्य दिखाता है।

मैंने हमेशा कहा है कि गरीब को अगर साधन मिले, गरीब को अगर संसाधन मिले, गरीब को अगर स्वाभिमान मिले तो हमारा गरीब गरीबी को परास्त करने का सामर्थ्य रखता है। और हमने वो रास्ता चुना और मेरे गरीब भाइयों ने गरीबी को परास्त करके दिखाया है। और इसी सोच के साथ हमने गरीब को साधन दिये, संसाधन दिये, सम्मान दिया, स्वाभिमान दिया। 50 करोड़ गरीबों के पास आज बैंक खाता है। कभी वो बैंक से गुजर भी नहीं पाते थे। 4 करोड़ गरीबों के पास पक्का घर है और वो घर उसके स्वाभिमान को एक नया सामर्थ्य देता है। 11 करोड़ से अधिक परिवारों को पीने का शुद्ध जल पानी नल से मिल रहा है। 55 करोड़ से अधिक गरीबों को आयुष्मान भारत कार्ड मिला है। घर में कोई भी बीमारी आ जाए, उस बीमारी के कारण फिर से गरीबी की तरफ लुढ़क न जाए, उसको भरोसा है कितनी भी बीमारी क्यों न आ जाए, मोदी बैठा है। 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज की सुविधा दी गई है।

मोदी ने उनको पूछा जिनको पहले कोई पूछता तक नहीं था। देश में पहली बार रेहड़ी-पटरी वाले साथियों के बारे में सोचा गया। पीएम स्वनिधि योजना से आज वो ब्याज के चक्कर से बाहर निकले, बैंक से पैसे लेकर के अपने कारोबार को बढ़ा रहे हैं। देश में पहली बार हाथ का हुनर जिनका सामर्थ्य है, जो राष्ट्र का निर्माण भी करते हैं, ऐसे मेरे विश्वकर्मा साथियों के बारे में सोचा गया। उनको आधुनिक टूल, आधुनिक ट्रेनिंग, पैसों की मदद, विश्व मार्किट उनके लिए खुल जाए, ये मेरे विश्वकर्मा भाइयों के लिए हमने किया है। देश में पहली बार PVTG यानि जनजातियों में भी अति पिछड़े जो हमारे जो भाई-बहन हैं, संख्या बहुत कम है, वोट के हिसाब से किसी को नजर नहीं जाती, हम वोट से परे हैं, हम दिलों से जुड़े हैं। और इसलिए PVTG जातियों के लिए पीएम जनमन योजना बनाकर के उनके कल्याण का मिशन मोड में काम उठाया है। इतना ही नहीं, सरहद के जो गांव थे, जिनको आखिरी गांव करके छोड़ दिया गया था, हमने वो आखिरी गांव को पहला गांव बनाकर के विकास की पूरी दिशा बदल दी।

मैं जब बार-बार मिलेट्स की वकालत करता हूँ, मिलेट्स की दुनिया के अंदर जा करके चर्चा करता हूँ। जी-20 के देशों के लोगों के सामने गर्व के साथ मिलेट्स परोसता हूँ, उसके पीछे मेरे दिल में 3 करोड़ से ज्यादा मेरे छोटे किसान हैं जो मिलेट्स की खेती करते हैं, इनका कल्याण इससे हम जुड़े हुए हैं।

जब मैं वोकल फॉर लोकल करता हूँ, जब मैं मेक इन इंडिया की बात करता हूँ, तब मैं करोड़ों गृह उद्योग, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग उससे जुड़े हुए मेरे लाखों परिवारों के साथ उनके कल्याण के लिए सोचता हूँ।

खादी, कांग्रेस पार्टी ने उसको भुला दिया, सरकारों ने भुला दिया। आज मैं खादी को ताकत देने में सफलता पूर्वक आगे बढ़ा हूँ क्योंकि खादी के साथ, हैंडलूम के साथ करोड़ों बुनकरों की जिंदगी लगी हुई है, मैं उनके कल्याण को देखता हूँ।

हमारी सरकार हर कोने में गरीबी को निकालने के लिए, गरीब को समृद्ध बनाने के लिए अनेक विविध प्रयासों को कर रही है। जिनके लिए वोट बैंक ही था, उनके लिए उनका कल्याण संभव नहीं था। हमारे लिए उनका कल्याण राष्ट्र का कल्याण है और इसलिए हम उसी रास्ते पर चल पड़े हैं।

कांग्रेस पार्टी ने, यूपीए सरकार ने ओबीसी समुदाय के साथ भी कोई न्याय नहीं किया है, अन्याय किया है। इन लोगों ने ओबीसी नेताओं का अपमान करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। कुछ दिन पहले जब कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न दिया, हमने वो सम्मान दिया। लेकिन याद करिये, उस कर्पूरी ठाकुर अति पिछड़े समाज से ओबीसी समाज के उस महापुरुष के साथ क्या व्यवहार हुआ था। किस प्रकार से उनके साथ जुल्म किया। 1970 में बिहार के मुख्यमंत्री बने हैं, तो उनको पद से हटाने के लिए कैसे-कैसे खेल खेले गए थे। उनकी सरकार अस्थिर करने के लिए क्या कुछ नहीं किया गया था।

कांग्रेस को अति पिछड़ा वर्ग का व्यक्ति बर्दाश्त नहीं हुआ था। 1987 में, जब कांग्रेस के पास पूरे देश में उनका झंडा फेहरता था, सत्ता ही सत्ता ही थी। तब उन्होंने कर्पूरी ठाकुर को प्रतिपक्ष के नेता के रूप में स्वीकार करने से मना कर दिया और कारण क्या दिया वो संविधान का सम्मान नहीं कर सकते। जिस कर्पूरी ठाकुर ने पूरा जीवन लोकतंत्र के सिद्धांतों के लिए, संविधान की मर्यादाओं के लिए खपा दिया, उनको अपमान करने का काम कांग्रेस पार्टी ने किया था।

कांग्रेस के हमारे साथियों को, आजकल इस पर बहुत चिंता जताते हैं कि सरकार में ओबीसी कितने लोग हैं, कितने पद पर कहां हैं, उसका हिसाब-किताब करते रहते हैं। लेकिन मैं हैरान हूँ, उनको इतना सबसे बड़ा ओबीसी नजर नहीं आता। कहां आंखें बंद करके बैठ जाते हैं।

जरा मैं, वो ये दुनिया भर की चीजें करते हैं, मैं उनको कहना चाहता हूँ। ये यूपीए के समय एक extra constitutional body बनाई गई थी, जिसके सामने सरकार की कुछ नहीं चलती थी। National Advisory Council, जरा कोई निकाल करके देखे इसमें क्या कोई ओबीसी था क्या? जरा निकाल कर देखिए। इतनी बड़ी पावरफुल बॉडी बनाई थी और उधर appoint कर रहे थे।

पिछले 10 वर्षों में नारी शक्ति के सशक्तिकरण को लेकर के अनेक कदम उठाए गए हैं। नारी के नेतृत्व में समाज के सशक्तिकरण पर काम किया गया है।

अब देश की बेटी, हिन्दुस्तान में कोई ऐसा सेक्टर नहीं है, जहां देश की बेटियों के लिए दरवाजे बंद हों। आज हमारे देश की बेटियां फाइटर जेट भी उड़ा रही हैं और हमारे देश की सीमाओं को भी सुरक्षित रख रही हैं।

ग्रामीण व्यवस्था, अर्थव्यवस्था हमारी Women Self Help Group 10 करोड़ बहनें जुड़ी हैं और आर्थिक गतिविधि करती हैं। और

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को वो नई ताकत दे रही हैं और मुझे आज खुशी है कि इन प्रयासों का परिणाम हैं कि आज करीब-करीब 1 करोड़ लखपति दीदी आज देश में बनी हैं। और मेरी जब उनसे बात होती हैं, उनका जो आत्मविश्वास देखता हूँ, मेरा पक्का विश्वास है हम जिस तरह आगे बढ़ रहे हैं, आने वाले हमारे कार्यकाल में 3 करोड़ लखपति दीदी हमारे देश के अंदर देखेंगे। आप कल्पना कर सकते हैं कि गांव की अर्थव्यवस्था में कितना बड़ा बदलाव हो जाएगा।

हमारे देश में बेटियों के संबंध में जो पहले सोच थी, समाज के घर में घुस गई थी, दिमाग में भी घुस गई थी। आज वो सोच कितनी तेजी से बदल रही है। थोड़े से बारीकी से देखेंगे तो हमें पता चलेगा कितना बड़ा सुखद बदलाव आ रहा है। पहले अगर बेटी का जन्म होता था, तो चर्चा होती थी अरे खर्चा कैसे उठाएंगे। उसको कैसे पढ़ाऐंगे, उसके आगे की जिंदगी का, एक प्रकार से कोई बोझ है, ऐसी चर्चाएं हुआ करती थी। आज बेटी पैदा होती है तो पूछा जाता है अरे सुकन्या समृद्धि अकाउंट खुला है कि नहीं खुला। बदलाव आया है।

पहले सवाल होता था, प्रेग्नेंट होने पर नौकरी नहीं कर पाओगी। पहले ये बात होती थी, प्रेग्नेंट होने पर नौकरी नहीं कर पाओगी। आज कहा जाता है 26 हफ्ते की पेड लीव और बाद में भी अगर छुट्टी चाहिए तो मिलेगी, ये बदलाव होता है। पहले समाज में सवाल होते थे कि महिला होकर नौकरी क्यों करना चाहती हो। क्या पति की सैलरी कम पड़ रही है, ऐसे ऐसे सवाल होते थे। आज लोग पूछ रहे हैं मैडम आपका जो स्टार्टअप है न बहुत प्रगति कर रहा है, क्या मुझे नौकरी मिलेगी। ये बदलाव आया है।

एक समय था, जब सवाल पूछा जाता था, कि बेटी की उम्र बढ़ रही है, शादी कब करोगी। आज पूछा जाता है बेटी पर्सनल और प्रोफेशनल दोनों कामों को संतुलित कितना बढ़िया करती हो, कैसे करती हो?

एक समय था घर में कहा जाता था कि घर के मालिक घर पर है कि नहीं है, ऐसा पूछा जाता था। घर के मुखिया को बुलाइये, ऐसा कहते थे। आज किसी के घर जाते हैं तो घर महिला के नाम पर, बिजली का बिल उसके नाम पर आता है। पानी, गैस सब उसके नाम पर, उस परिवार के मुखिया की जगह आज मेरी माताएं-बहनों ने ले ली है। ये बदलाव आया है। ये बदलाव अमृतकाल में विकसित भारत का हमारा जो संकल्प है न, इसकी एक बहुत बड़ी शक्ति के रूप में ये उभरने वाला है और मैं उस शक्ति के दर्शन कर पा रहा हूँ।

किसानों के लिए आंसू बहाने की आदत मैंने बहुत देखी है। किसानों के साथ कैसा-कैसा विश्वासघात किया गया है, ये देश ने देखा है। कांग्रेस के समय कृषि के लिए कुल वार्षिक बजट होता था- 25 हजार करोड़ रुपये। हमारी सरकार का बजट है सवा लाख करोड़ रुपये।

कांग्रेस ने अपने 10 साल के कार्यकाल में 7 लाख करोड़ रुपये का धान और गेहूं किसानों से खरीदा था। हमने 10 वर्षों में करीब 18 लाख करोड़ का धान, गेहूं खरीदा है। कांग्रेस सरकार ने दलहन और तिलहन की खरीदी नाम मात्र कभी कहीं की हो तो की हो। हमने सवा लाख करोड़ रुपये से भी अधिक का दलहन और तिलहन खरीद लिया है। हमारे कांग्रेस के साथियों ने पीएम किसान सम्मान निधि का मजाक उड़ाया और जब मैंने मेरी पहली टर्म में ये योजना शुरू की थी तो मुझे याद है कि झूठा नेरेटिव की जो फैशन चल पड़ी है, गांव में जा के कहा जाता था कि देखिये ये मोदी के पैसे मत लेना। ये चुनाव एक बार जीत गया, तो सारे पैसे ब्याज समेत तुमसे वापस मांगेगा, ऐसा झूठ फैलाया गया था। किसानों को इतना मूर्ख बनाने की कोशिश की गई थी।

पीएम किसान सम्मान निधि- 2 लाख 80 हजार करोड़ रुपये हमने भेजे। पीएम फसल बीमा योजना- 30 हजार रुपये का प्रीमियम और उसके सामने 1.5 लाख करोड़ रुपया मेरे किसान भाई-बहनों को दिया है। कांग्रेस के अपने शासन काल में कभी भी मछुआरे, पशुपालक की तो कभी नामोनिशान नहीं था उनके काम में। पहली बार इस देश में मछुआरों के लिए अलग मंत्रालय बना, पशुपालन के लिए अलग मंत्रालय बना। पहली बार पशुपालक को, मछुआरों को किसान क्रेडिट कार्ड दिया गया, ताकि कम ब्याज से उसको बैंक से पैसा मिल सके वो अपना कारोबार बढ़ा सके। किसानों और मछुआरों, ये चिंता सिर्फ जानवरों की ही नहीं होती है, जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आर्थिक चक्र को चलाने में इन पशुओं की भी बहुत बड़ी भूमिका होती है। हमने फुट एंड माउथ disease, उससे हमारे पशुओं को बचाने के लिए 50 करोड़ से ज्यादा टीके लगाए हैं, पहले कभी सोचा नहीं था किसी ने।

आज भारत में युवाओं के लिए जितने नए अवसर बने हैं, ये पहले कभी नहीं बने हैं। आज पूरी vocabulary बदल गई है, शब्द जो पहले कभी सुनने को नहीं मिलते थे, वो बोलचाल के साथ दुनिया में आ चुके हैं। आज चारों तरफ स्टार्टअप्स की गूंज है, यूनिकॉर्न्स चर्चा में है। आज Digital Creators एक बहुत बड़ा वर्ग हमारे सामने है। आज ग्रीन इकोनॉमी की चर्चा हो रही है। ये युवाओं की जुबान पर ये नए भारत की नई vocabulary है। ये नई आर्थिक साम्राज्य के नए परिवेश हैं, नई पहचान है। ये सेक्टर युवाओं के लिए रोजगार के लाखों नए अवसर बना रहे हैं। 2014 से पहले Digital Economy का साइज न के बराबर था, बहुत ज्यादा उसकी चर्चा भी नहीं थी। आज भारत दुनिया की Digital Economy में अग्रणी है। लाखों युवा इससे जुड़े हैं और आने वाले समय में ये Digital India Movement जो है, वो देश के नौजवानों के लिए अनेक-अनेक अवसर, अनेक-अनेक रोजगार, अनेक-अनेक प्रोफेशनल्स के लिए अवसर लेकर के आने वाला है।

आज भारत मेड इन इंडिया फोन दुनिया में पहुंच रहे हैं। दुनिया में हम नंबर 2 बन गए हैं। और एक तरफ सस्ता मोबाइल प्राप्त हुआ है और दूसरी तरफ सस्ता डेटा, इन दोनों की वजह से एक बहुत बड़ा revolution आया है देश में और दुनिया में हम जिस कीमत पर आज हमारे नौजवानों को ये प्राप्त करवा रहे हैं, सबसे कम कीमत पर करवा रहे हैं और वो एक कारण बना है। आज मेड इन इंडिया अभियान, रिकॉर्ड मैन्युफैक्चरिंग, रिकॉर्ड एक्सपोर्ट ये आज देश देख रहा है।

ये सारे काम हमारे नौजवानों के लिए सबसे ज्यादा रोजगार लाने वाले काम हैं, सबसे ज्यादा रोजगार के अवसर पैदा करने वाले हैं।

10 वर्ष में टूरिज्म सेक्टर में अभूतपूर्व उछाल आया है। हमारे देश में ये ग्रोथ और टूरिज्म सेक्टर ऐसा है कि इसमें कम से कम पूंजी निवेश में अधिक से अधिक लोगों को रोजगार देने वाला अवसर है। और सामान्य से सामान्य व्यक्ति को भी ये रोजगार देने वाला अवसर है। स्वरोजगार की सबसे ज्यादा संभावनाओं वाला टूरिज्म क्षेत्र है। 10 वर्ष में एयरपोर्ट 2 गुने बने। भारत सिर्फ एयरपोर्ट बने ऐसा नहीं है, भारत दुनिया का तीसरा बड़ा डोमेस्टिक एविएशन सेक्टर बना है, दुनिया का तीसरा बड़ा। हम सबको खुशी होनी चाहिए, भारत की जो एयरलाइंस कंपनियां हैं, उन्होंने 1 हजार नए एयरक्राफ्ट के आर्डर दिए हैं, देश में 1 हजार नए एयरक्राफ्ट। और जब इतने सारे हवाई जहाज ऑपरेट होंगे, सारे एयरपोर्ट कितने चमकते होंगे। कितने पायलट्स की जरूरत पड़ेगी, कितने हमें क्रू मेंबर चाहिए, कितने इंजीनियर्स चाहिए, कितने ग्राउंड सर्विस के लोग चाहिए यानी रोजगार के नए-नए क्षेत्र खुलते जा रहे हैं। एविएशन सेक्टर भारत के लिए एक बहुत बड़ा नया अवसर बनकर के आया है।

हमारी कोशिश रही है कि इकोनॉमी को हम thermolise करने की दिशा में मजबूती से कदम उठाएं। युवाओं को नौकरी भी मिले, सोशल सिक्योरिटी भी मिले। इन दोनों को लेकर के और अपनी जिन बातों के आधार पर हम निर्णय

करते हैं और देश में भी माना जाता है वो एक होता है डेटा ईपीएफओ का। ईपीएफओ में जो रजिस्ट्रेशन होता है 10 साल में करीब 18 करोड़ नए सब्सक्राइबर आए हैं और वो तो सीधा पैसों से जुड़ा खेल होता है, उसमें फर्जी नाम नहीं होते हैं। मुद्रा लोन पाने वालों में 8 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिन्होंने जीवन में पहली बार कारोबार अपना शुरू किया है, बिजनेस शुरू किया है। और जब मुद्रा लोन लेता है तो खुद तो रोजगार पाता है, एक या दो और लोगों को भी रोजगार देता है, क्योंकि उसका काम ऐसा होता है। हमने लाखों स्ट्रीट वेंडर्स को सपोर्ट किया है। 10 करोड़ महिलाएं ऐसे ही चीजों से जुड़ी, जैसा मैंने कहा है एक लाख लखपति दीदी, एक करोड़ ये अपने आप में बहुत है। ... और मैंने जैसा कहा हम 3 करोड़ लखपति दीदी हमारे देश के अंदर देखेंगे। कुछ आंकड़े हैं, जो अर्थशास्त्री समझते हैं ऐसा नहीं है, सामान्य मानवी भी समझता है। 2014 से पहले के 10 वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में करीब-करीब 12 लाख करोड़ का बजट था, 10 साल में 12 लाख करोड़। बीते 10 वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण के अंदर बजट 44 लाख करोड़, रोजगार कैसे बढ़ते हैं, इससे समझ आता है।

इस राशि से जितनी भी मात्रा में काम हुआ है, उसके कारण इतने लोगों को रोजी-रोटी मिली है, इसका आप अंदाजा कर सकते हैं। हम भारत को मैन्युफैक्चरिंग का, रिसर्च का, इनोवेशन का हब बने, उस दिशा में देश की युवा शक्ति को प्रोत्साहित कर रहे हैं। व्यवस्थाएं विकसित कर रहे हैं। आर्थिक मदद की योजनाएं बना रहे हैं।

एनर्जी के क्षेत्र में हम हमेशा डिपेंडेंट रहे हैं। एनर्जी के सेक्टर में हमें आत्मनिर्भर होने की दिशा में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। और हमारी कोशिश है ग्रीन एनर्जी की तरफ, हाइड्रोजन को लेकर के हम बहुत बड़ी मात्रा में आगे बढ़ रहे हैं, उसमें अभूतपूर्व निवेश। उसी प्रकार से दूसरा क्षेत्र है, जिसमें भारत को लीड लेने होगी वो है सेमीकंडक्टर, पिछली सरकार ने जितने प्रयास किये, प्रयास किये, लेकिन सफलता नहीं मिली। अब हम जिस स्थिति में पहुंचे हैं, मैं विश्वास से कहता हूँ कि हमारे 3 दशक खराब भले हो गए लेकिन आने वाला समय हमारा है, हम सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में अभूतपूर्व निवेश मैं देख रहा हूँ और भारत दुनिया को एक बहुत बड़ा contribution करेगा। इन सारे कारणों से Quality Job संभावनाएं बहुत बढ़ने वाली हैं और जिसके कारण समाज में जैसे-जैसे हमने एक अलग Skill Ministry बनाई है उसके पीछे ही तो ये है कि देश के नौजवानों को हुनर मिले और ऐसे अवसर मिलें और हम Industry 4.0 उसके लिए मैन पावर को तैयार करते हुए आगे बढ़ने की दिशा में काम कर रहे हैं।

यहां महंगाई को लेकर के काफी कुछ बातें की गई हैं। मैं जरूर चाहूंगा कि देश के सामने कुछ सच्चाई आनी चाहिए। इतिहास गवाह है, जब भी कांग्रेस आती है, महंगाई लाती है। कहा गया था कभी और किसने कहा था वो मैं बाद में कहूंगा। 'हर चीज की कीमत बढ़ जाने की वजह से मुसीबत फैली है, आम जनता उनमें फंसी है'। ये statement of fact किसका है ये कहा था, हमारे पंडित नेहरू जी ने लाल किले से कहा था उस समय। 'हर चीज की कीमत बढ़ जाने की वजह से मुसीबत फैली है आम जनता उनमें फंसी है', ये उस समय की बात है। उन्होंने माना था लाल किले से, चारों तरफ महंगाई बढ़ी है। अब इस वक्तव्य के 10 साल के बाद, नेहरू जी के इस वक्तव्य के 10 साल के बाद एक और वक्तव्य का quote आपके सामने रखता हूं। आप लोग, मैं quote बता रहा हूं, 'आप लोग आजकल भी कुछ दिक्कतों में हैं, परेशानियों में हैं, महंगाई की वजह से, कुछ तो लाचारी है, पूरी तौर से काबू की बात नहीं हो पा रही है, हमारे इस समय में हालांकि वो काबू में आएगी।' 10 साल के बाद भी महंगाई के यही गीत कहे गए थे और ये किसने कहा थे फिर से ये नेहरू जी ने कहा था उन्हीं के कार्यकाल में। तब देश का पीएम रहते उन्होंने, 12 साल हो चुके थे, लेकिन हर बार महंगाई कंट्रोल में नहीं आ रही है, महंगाई के कारण आपको मुसीबत हो रही है, इसी के गीत गाते रहे थे।

अब मैं एक और भाषण का हिस्सा पढ़ रहा हूं। 'जब देश आगे बढ़ता है तो कुछ हद तक कीमतें भी बढ़ती है, हमको ये भी देखना है कि जो भी आवश्यक वस्तु है उनकी कीमत को कैसे थामे।' ये किसने कहा था इंदिरा गांधी जी ने कहा था। 1974 में जब सारे देश में उन्होंने सारे दरवाजें पर ताले लगा दिए थे, लोगों को जेल में बंद कर दिया था। 30 पर्सेंट महंगाई थी, 30 पर्सेंट।

अपने भाषण में यहां तक कहा गया था, क्या कहा था- आप चौंक जाएंगे। उन्होंने कहा था 'अगर जमीन न हो यानि कुछ पैदावार के लिए जमीन न हो तो अपने गमले और कनस्तर में सब्जी उगा लें।' ये ऐसी सलाहें उच्च पद पर बैठे हुए लोग दिया करते थे। जब देश में महंगाई को लेकर के 2 गाने सुपरहिट हुए थे, हमारे देश में। घर-घर गाए जाते थे। 'एक महंगाई मार गई और दूसरा महंगाई डायन खाय जात है।' और ये दोनों गाने कांग्रेस के शासनकाल में आए।

यूपीए के शासनकाल में महंगाई डबल डिजिट में थी, डबल डिजिट में महंगाई थी, इसको नकार नहीं सकते हैं। और यूपीए सरकार का तर्क क्या था- असंवेदनशीलता। ये कहा गया था कि 'महंगी आइसक्रीम खा सकते हो तो महंगाई का रोना क्यों रो रहे हो,' ये कहा गया था। जब भी कांग्रेस आई है, उसने महंगाई को ही मजबूत किया है।

हमारी सरकार ने महंगाई को लगातार नियंत्रण में रखा है। दो-दो युद्ध के बावजूद और 100 साल में आए सबसे बड़े संकट के बावजूद महंगाई नियंत्रण में है, और हम कर पाए हैं।

यहां पर बहुत गुस्सा व्यक्त किया गया, जितना हो सका उतने कठोर शब्द में गुस्सा व्यक्त किया गया। उनका दर्द मैं समझता हूं। उनकी मुसीबत और ये गुस्सा मैं समझता हूं क्योंकि तीर निशाने पर लगा है। भ्रष्टाचार पर एजेंसियां एक्शन ले रही हैं। उसको लेकर भी इतना गुस्सा, किन-किन शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है।

10 साल पहले हमारे सदन में पार्लियामेंट में क्या चर्चा होती थी। सदन का पूरा समय घोटालों की चर्चा पर जाता था। भ्रष्टाचार की चर्चा पर जाता था। लगातार एक्शन की डिमांड होती थी। सदन ये ही मांग करता रहता था, एक्शन लो, एक्शन लो, एक्शन लो। वो कालखंड देश ने देखा है। चारों तरफ भ्रष्टाचार की खबरें, रोजमर्रा थी। और आज जब भ्रष्टाचारियों पर एक्शन लिया जा रहा है, तो लोग उनके समर्थन में हंगामा करते हैं।

इनके समय में एजेंसियों का सिर्फ और सिर्फ राजनीतिक उपयोग के लिए उपयोग किया जाता था। बाकी उनको कोई काम करने नहीं दिया जाता था। अब आप देखिए उनके कालखंड में क्या हुआ- PMLA Act तहत हमने पहले के मुकाबले दो गुने से अधिक केस दर्ज किए हैं। कांग्रेस के समय में ईडी ने 5 हजार करोड़ रूपये की संपत्ति जब्त की थी। हमारे कार्यकाल में ईडी ने 1 लाख करोड़ रूपये की संपत्ति, ये देश का लूटा हुआ माल देना ही पड़ेगा। और जिनका इतना सारा माल पकड़ा जाता हो, नोटों के ढेर पकड़े जाते हो। किस-किस के घर में से पकड़े जाते हैं, किस-किस राज्यों में पकड़े जाते थे। देश ये नोटों के ढेर देख-देखकर के चौंक गया है। लेकिन अब जनता को आप मूर्ख नहीं बना सकते, जनता देख रही है कि किस प्रकार से यूपीए सरकार में जो भ्रष्टाचार की बातें होती थी, उसका टोटल 10-15 लाख करोड़ का रहा है, चर्चा होती थी।

हमने लाखों-करोड़ के घोटाले तो अटकाए, लेकिन उन सारे पैसों को गरीबों के काम लगा दिया, गरीबों के कल्याण के लिए। अब बिचौलियों के लिए गरीबों को लूटना बहुत मुश्किल हो गया है। Direct Benefit Transfer, जनधन अकाउंट, आधार, मोबाइल उसकी ताकत हमने पहचानी है। 30 लाख करोड़ रूपये से ज्यादा रकम हमने लोगों के खाते में सीधी पहुंचाई है।

और अगर कांग्रेस के एक प्रधानमंत्री ने कहा था कि अगर एक रुपया भेजते हैं, 15 पैसे पहुंचते हैं, अगर उस हिसाब से मैं देखूं तो हमने जो 30 लाख करोड़ भेजे हैं, अगर उनका जमाना होता तो कितना रुपया कहां चला जाता इसका हिसाब लगाइए। 15 पर्सेंट मुश्किल से लोगों के पास पहुंचता, बाकी सब कहां चला जाता।

हमने 10 करोड़ फर्जी नाम हटाए हैं, अभी लोग पूछते हैं ना कि पहले इतना आंकड़ा था क्यों कम हुआ, आपने ऐसी व्यवस्था बनाई थी, जिस बेटी का जन्म नहीं हुआ, उसको आपके यहां से विधवा पेंशन जाती थी। और ऐसे सरकारी योजनाओं को मारने के जो रास्ते थे ना 10 करोड़ फर्जी नाम बंद किए, ये जो परेशानी है ना, इन चीजों की है। क्योंकि रोजमर्रा की आय इनकी बंद हो गई है।

हमने ये फर्जी नामों को हटाने से करीब-करीब 3 लाख करोड़ रूपया फर्जी हाथों में जाने से बचाया है, गलत हाथों में जाने से बचाया है। देश के taxpayer का पाई-पाई बचाना और सही काम में लगाना इसके लिए हमने जीवन खपा रखे हैं। सभी राजनीतिक दलों को भी सोचने की जरूरत है, और समाज में भी जो लोग बैठे हैं, उनको देखने की जरूरत है। आज देश का दुर्भाग्य है, पहले तो क्लासरूम में भी कोई अगर चोरी करता था, किसी की कॉपी करता था, तो वो भी 10 दिन तक अपना मुंह किसी को दिखाता नहीं था। आज जो भ्रष्टाचार के आरोप, जिन पर सिद्ध हो चुके हैं, जो जेलों में समय निकालकर के पेरोल पर आए हैं, आज washing machine से भी बड़ा कंधे पर लेकर के महिमामंडन कर रहे हैं ऐसे चोरों का सार्वजनिक जीवन में। कहां ले जाना चाहते हो देश को तुम, जो सजा हो चुकी है, मैं ये तो समझता हूं कि आरोप जो हैं उनके लिए तो आप सोच सकते हैं लेकिन जो गुनाह सिद्ध हो चुका है, जो सजा काट चुके हैं, जो सजा काट रहे हैं, ऐसे लोगों का महिमामंडन करते हो आप। कौन सा कल्चर और देश की भावी पीढ़ी को क्या प्रेरणा देना चाहते हो आप, कौन से रास्ते और ऐसी कौन-सी आपकी मजबूरी है। और ऐसे लोगों का महिमामंडन किया जा रहा है, उनको महान बताया जा रहा है। जहां संविधान का राज है, जहां लोकतंत्र है, ऐसी बातें लंबी नहीं चल सकती हैं, ये लोग लिखकर के रखें। ये जो महिमामंडन का काम चल रहा है उनका वो अपने, अपने ही खात्मे की चिट्ठी पर सिग्नेचर कर रहे हैं ये लोग।

जांच करना ये एजेंसियों का काम है। एजेंसियां स्वतंत्र होती हैं और संविधान ने उनको स्वतंत्र रखा हुआ है। और जज करने का काम न्यायाधीश का है और वो अपना काम कर रहे हैं। और, मैं इस पवित्र सदन में फिर से दोहराना चाहूंगा, जिसको जितना जुल्म मुझ पर करना है कर लें, मेरी भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई चलती रहेगी। जिसने देश को लूटा है उनको लौटाना पड़ेगा, जिन्होंने देश को लूटा है, उनको लौटाना पड़ेगा। ये मैं देश को इस सदन की पवित्र जगह से वादा करता हूं। जिसको जो आरोप लगाना है, लगा लें, लेकिन देश को लुटने नहीं दिया जाएगा और जो लूटा है वो लौटाना पड़ेगा।

देश सुरक्षा और शांति का एहसास कर रहा है। पिछले दस वर्ष की तुलना में सुरक्षा के क्षेत्र में देश आज वाकई सशक्त हुआ है। आतंकवाद, नक्सलवाद एक छोटे दायरे में अब सिमटा हुआ है। लेकिन भारत की जो टेररिज्म के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति है, आज पूरे विश्व को भी भारत की इस नीति की तरफ चलने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। भारत की सेनाएं सीमाओं से ले करके समंदर तक अपने सामर्थ्य को ले करके आज उनकी धाक है। हमें हमारी सेना के पराक्रम पर गर्व होना चाहिए। हम कितना ही उनका मनोबल तोड़ने की कोशिश करें, मुझे मेरी सेना पर भरोसा है, मैंने उनके सामर्थ्य को देखा है। कुछ राजनेता सेना के लिए हल्के-फुल्के शब्द बोल दें, इससे मेरे देश की सेना demoralised होगी, इन सपनों में कोई रहते हैं तो निकल जाएं। देश के मूड को वो खत्म नहीं कर सकते और किसी के एजेंट बन करके इस प्रकार की भाषा अगर कहीं से भी उठती है, देश कभी स्वीकार नहीं कर सकता है। और जो खुलेआम देश में अलग देश बनाने की वकालत करते हैं, जोड़ने की बातें छोड़ो, तोड़ने की कोशिश की जा रही है, आपके अंदर क्या पड़ा हुआ है, क्या इतने टुकड़े करके अभी भी आपके मन को संतोष नहीं हुआ है? देश के इतने टुकड़े कर चुके हो आप, और टुकड़े करना चाहते हों, कब तक करते रहोगे?

इसी सदन में अगर कश्मीर की बात होती थी, तो हमेशा चिंता का स्वर निकलता था, छींटाकशी होती थी, आरोप-प्रत्यारोप होते थे। आज जम्मू-कश्मीर में अभूतपूर्व विकास की चर्चा हो रही है और गर्व के साथ हो रही है। पर्यटन लगातार बढ़ रहा है। जी-20 समिट होती है वहां, पूरा विश्व आज उसकी सराहना करता है। आर्टिकल 370 को ले करके कैसा हौआ बनाकर रखा था। कश्मीर के लोगों ने जिस प्रकार से उसको गले लगाया है, कश्मीरी जनता ने जिस प्रकार से गले लगाया है, और आखिरकार ये समस्या किसकी देन थी, किसने देश के माथे पर मारा था, किसने भारत के संविधान के अंदर इस प्रकार की दरार करके रखी हुई थी?

अगर नेहरू जी का नाम लेते हैं तो उनको बुरा लगता है, लेकिन कश्मीर को जो समस्याएं झेलनी पड़ीं, उसके मूल में उनकी ये सोच थी और उसी का परिणाम इस देश को भुगतना पड़ा है। जम्मू-कश्मीर के लोगों को, देश के लोगों को नेहरू जी की गलतियों की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है।

वो भले गलतियां करके गए, लेकिन हम मुसीबतें झेल करके भी गलतियां सुधारने के लिए हमारी कोशिश जारी रहेगी, हम रुकने वाले नहीं हैं। हम देश के लिए काम करने के लिए निकले हुए लोग हैं। हमारे लिए नेशन फर्स्ट है।

भारत के जीवन में बहुत बड़ा अवसर आया है। वैश्विक परिवेश में भारत के लिए बड़ा अवसर आया है, एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का अवसर आया है। राजनीति अपनी जगह पर होती है, आरोप-प्रत्यारोप अपनी जगह पर होता है, लेकिन देश से बढ़कर कुछ नहीं होता है। और इसलिए कंधे से कंधा मिला करके हम देश के निर्माण के लिए आगे बढ़ें। राजनीति में किसी भी जगह पर रहते हुए भी राष्ट्र निर्माण में आगे बढ़ने में कोई रुकावट नहीं आती है। आप इस राह को मत छोड़िए। मैं आपका साथ मांग रहा हूं, मां भारती के कल्याण के लिए साथ मांग रहा हूं। मैं विश्व के अंदर जो अवसर आया है, उस अवसर को भुनाने के लिए आपका साथ मांग रहा हूं। मैं आपका सहयोग चाहता हूं, 140 करोड़ देशवासियों की जिंदगी को और समृद्ध बनाने के लिए, और सुखी बनाने के लिए। लेकिन अगर आप साथ नहीं दे सकते हैं और अगर आपका हाथ ईंटें फेंकने पर ही तुला हुआ है, तो आप लिख करके रखिए, आपकी हर ईंट को मैं विकसित भारत की नींव मजबूत करने के लिए उठाऊंगा। आपके हर पत्थर को मैं विकसित भारत के जो सपनों को हम ले करके चले हैं, उसकी नींव मजबूत करने के लिए मैं लगा दूंगा और देश को उस समृद्धि की ओर हम लेकर जाएंगे। जितने पत्थर उछालने हैं, उछाल लीजिए, आपका हर पत्थर भारत के, समृद्ध भारत के, विकसित भारत के सपने को विकसित बनाने के लिए हर पत्थर को मैं काम में लूंगा, ये भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।

मैं जानता हूं, साथियों की तकलीफें मैं जानता हूं। लेकिन वो जो कुछ भी बोलते हैं, मैं दुखी नहीं होता हूं और दुखी होना भी नहीं चाहिए। क्योंकि मैं जानता हूं ये नामदार हैं, हम कामदार हैं। और हम कामदारों को तो नामदारों से सुनना ही पड़ता है ये। तो नामदार कुछ भी कहते रहें, कुछ भी कहने का उनको तो जन्मजात अधिकार मिले हुए हैं और हम कामदारों को सुनना होता है, हम सुनते भी रहेंगे और देश को सहजते भी रहेंगे, देश को आगे बढ़ाते रहेंगे। ▪

2047 तक विकसित भारत-अमित शाह

बजट भारत को हर क्षेत्र में अग्रणी बनाने की पिछले 10 वर्षों की यात्रा के दौरान मोदी सरकार द्वारा हासिल की गईं उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है।

अमृतकाल के दौरान इन्हीं उपलब्धियों की नींव पर विकसित भारत का निर्माण किया जा रहा है। इस उत्कृष्ट यात्रा के माध्यम से देश का नेतृत्व करने के लिए मोदी जी और एक व्यावहारिक बजट भाषण के लिए वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण जी का हार्दिक आभार।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने आम बजट की प्रशंसा करते हुए इसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 2047 तक विकसित भारत के विजन को साकार करने के लिए रोडमैप तैयार करने वाला बताया है।

बजट भारत को हर क्षेत्र में अग्रणी बनाने की पिछले 10 वर्षों की यात्रा के दौरान मोदी सरकार द्वारा हासिल की गईं उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है। अमृतकाल के दौरान इन्हीं उपलब्धियों की नींव पर विकसित भारत का निर्माण किया जा रहा है। इस उत्कृष्ट यात्रा के माध्यम से देश का नेतृत्व करने के लिए मोदी जी और एक व्यावहारिक बजट भाषण के लिए वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण जी का हार्दिक आभार। किसानों के लिए समर्पित मोदी सरकार का विकसित भारत बजट देश के किसान भाइयों के लिए खुशहाली व समृद्धि के नए अवसर लेकर आया है। मोदी जी के आत्मनिर्भर भारत से प्रेरित इस बजट में एक तरफ तिलहनों में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया गया है, तो दूसरी तरफ नैनो-डीएपी के प्रयोग व डेयरी विकास पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। मोदी सरकार आज 11.8 करोड़ किसानों को वित्तीय सहायता व 4 करोड़ किसानों को फसल बीमा से सुरक्षा दे रही है। बजट में मॉडर्न स्टोरेज और प्रभावकारी सप्लाई चेन स्थापित करने पर लिए गए अहम फैसलों से हमारे अन्नदाता आर्थिक तौर पर सशक्त एवं समृद्ध बन सकेंगे। इस बजट में लखपति दीदी के लक्ष्य को बढ़ाकर 3 करोड़ करने के लिए मोदी जी का आभार।

मोदी सरकार का यह बजट पर्यटन के क्षेत्र को नई ऊर्जा देने का काम करेगा। बजट में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्थलों के विकास के लिए राज्यों को प्रोत्साहन और लंबे समय तक ब्याज मुक्त लोन दिया जाएगा, जिससे पर्यटन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। लक्षद्वीप सहित अन्य द्वीपों में एयर कनेक्टिविटी शुरू कर इन्हें मुख्यधारा से जोड़ने जैसे ऐतिहासिक फैसलों के लिए मोदी जी का आभार।

अंतरिम बजट 2024 के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हमारे देश में चल रही तकनीकी क्रांति में एक बड़े बदलाव का मंच तैयार किया है। प्रौद्योगिकी के लिए एक लाख करोड़ के कॉर्पस फंड का लाभ न केवल हमारे अनुसंधान और विकास कौशल को मिलेगा, बल्कि सामान्य पृष्ठभूमि वाले युवाओं को प्रौद्योगिकी को एक माध्यम के रूप में उपयोग कर समाज में सार्थक बदलाव लाने की चुनौती लेने के लिए भी प्रोत्साहित करेगा।

बजट-2024 एक ऐसा दस्तावेज है जो एक उत्कृष्ट राजनेता के रूप में प्रधानमंत्री मोदी की भूमिका को सामने लाता है, जो सहकारी संघवाद के मूल्यों को मजबूत करते हुए देश को महानता के रास्ते पर ले जा रहे हैं।

अगले पांच दशकों के लिए राज्यों को कुल 75,000 करोड़ रूपए का ब्याज-मुक्त ऋण देने का निर्णय केंद्र-राज्य संबंधों को मजबूत करने में गेम चेंजर साबित होगा। इससे यह भी सुनिश्चित होगा कि मोदी जी ने जिस महान भारत की कल्पना की है, उसमें कोई भी क्षेत्र पीछे न रह जाये।

मोदी सरकार ने देश के इंफ्रास्ट्रक्चर को विश्वस्तरीय बनाने के लिए जहाँ बजट में एक तरफ 11.1 प्रतिशत बढ़ोत्तरी कर इसे रिकॉर्ड 11.11 लाख करोड़ रुपए किया है, वहीं लॉजिस्टिक कार्यकुशलता व लागत को कम करने के लिए पीएम गति शक्ति के अंतर्गत तीन बड़े रेलवे कॉरिडोर की घोषणा ने भविष्य के भारत की नई रूपरेखा भी देशवासियों के सामने रखी है। मोदी जी के नेतृत्व में आज देश में हाईवे निर्माण की गति तीन गुनी बढ़ चुकी है और एयरपोर्ट की संख्या भी दोगुनी से अधिक हुई है। आज आधुनिक वंदेभारत और नमो भारत ट्रेन भी नए भारत की शान बनी हैं

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की दूरदर्शिता को दर्शाती 'सूर्योदय योजना' से 1 करोड़ परिवार अपने घरों पर सौर ऊर्जा सिस्टम लगाकर बिजली उत्पन्न कर पाएंगे। उन्हें प्रति माह 300 यूनिट बिजली फ्री मिलेगी और इससे उनकी सालाना 15 से 18 हजार रुपये की बचत भी होगी। मोदी जी ने आयुष्मान भारत योजना से अभी तक 30 करोड़ से अधिक लोगों को 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज देने का काम किया है।

आज बजट में आयुष्मान योजना से आशा व आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को जोड़ने का महत्वपूर्ण फैसला लिया गया, जिससे ये लोग भी मुफ्त इलाज का लाभ ले पायेंगे। साथ ही, इस बजट में 'सर्वाइकल कैंसर' से बचाव के लिए 9 से 14 साल की बच्चियों के टीकाकरण को बढ़ावा देने का अहम फैसला भी लिया गया है। वर्ष 2013-14 में आयकर में जो छूट 2.2 लाख रुपये थी, उसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 10 वर्षों में बढ़ाकर 7 लाख रुपये करने का काम किया है। इससे आयकर भरने वालों का सरकार पर विश्वास भी बढ़ा है और उनकी संख्या में 2.4 गुना वृद्धि हुई है। साथ ही, प्रत्यक्ष कर संग्रह में भी तीन गुना बढ़ोत्तरी हुई है। ▪

भारत एक अभूतपूर्व इकोनॉमिक सक्सेस स्टोरी

किसी भी देश की Development Journey में एक समय ऐसा आता है, जब सारी परिस्थितियां उसके favour में होती हैं। जब वो देश अपने आपको, आने वाली कई-कई सदियों के लिए मजबूत बना लेता है।

मैं भारत के लिए आज वही समय देख रहा हूं। और जब मैं हजार साल की बात करता हूँ, तो बहुत ही समझदारी पूर्वक करता हूँ।

This is India's Time और पूरे विश्व का भारत पर ये विश्वास लगातार बढ़ रहा है। भारत एक अभूतपूर्व इकोनॉमिक सक्सेस स्टोरी है। आज दुनिया के हर डवलपमेंट एक्सपर्ट ग्रुप में चर्चा है कि भारत 10 साल में ट्रांसफॉर्म हो चुका है। ये बातें, दिखाती हैं कि आज दुनिया का भारत पर भरोसा कितना ज्यादा है। भारत के सामर्थ्य को लेकर दुनिया में ऐसा Positive Sentiment पहले कभी नहीं था। भारत की सफलता को लेकर दुनिया में ऐसा Positive Sentiment शायद ही कभी किसी ने अनुभव किया हो। इसलिए ही - यही समय है, सही समय है।

किसी भी देश की Development Journey में एक समय ऐसा आता है, जब सारी परिस्थितियां उसके favour में होती हैं। जब वो देश अपने आपको, आने वाली कई-कई सदियों के लिए मजबूत बना लेता है। मैं भारत के लिए आज वही समय देख रहा हूं। और जब मैं हजार साल की बात करता हूँ, तो बहुत ही समझदारी पूर्वक करता हूँ। ये ठीक है कि किसी ने हजार शब्द कभी सुना नहीं, हजार दिन का नहीं सुना तो उसके लिए तो हजार साल बहुत बड़ी लगती है लेकिन कुछ लोग होते हैं जो देख पाते हैं। ये Time Period-ये कालखंड, वाकई अभूतपूर्व है। ये वो समय है जब हमारी ग्रोथ रेट लगातार बढ़ रही है और हमारा Fiscal Deficit घट रहा है। ये वो समय है जब हमारा Export बढ़ रहा है और Current Account Deficit कम होती जा रही है। ये वो समय है जब हमारा Productive Investment रिकॉर्ड ऊंचाई पर है और महंगाई नियंत्रण में है। ये वो समय है जब Opportunities और Income, दोनों बढ़ रही है और गरीबी कम हो रही है। ये वो समय है जब Consumption और Corporate Profitability दोनों बढ़ रही हैं और बैंक NPA में रिकॉर्ड कमी आई है। ये वो समय है जब Production और Productivity दोनों में वृद्धि हो रही हो। और... ये वो समय है जब हमारे आलोचक All time low हैं।

कई Analysts ने अंतरिम बजट की प्रशंसा करते हुए कहा है कि ये लोकलुभावन बजट नहीं है, लेकिन मैं कुछ मूल बातों की तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। अगर हमारे बजट या ओवरऑल पॉलिसी मेकिंग की चर्चा करेंगे, तो आपको उसमें कुछ first principles नजर आएंगे। और वो फर्स्ट प्रिंसिपल्स हैं- stability, consistency, continuity, ये बजट भी उसी का extension है।

जब किसी को परखना हो तो उसे किसी मुश्किल या चुनौती के समय में ही परखा जा सकता है। कोरोना महामारी और उसके बाद का पूरा कालखंड भी, पूरे विश्व में सरकारों के लिए एक बड़ी परीक्षा बनकर आया था। किसी को कोई अंदाजा नहीं था कि health और economy की इस दोहरी चुनौती से निपटा कैसे जाए। इस दौरान भारत ने सबसे... जीवन बचाने वाले संसाधन जुटाने में, लोगों को जागरूक करने में पूरी शक्ति लगा दी। सरकार ने गरीबों के लिए राशन मुफ्त कर दिया। मेड इन इंडिया वैक्सीन पर फोकस किया। ये भी सुनिश्चित किया कि तेजी से हर भारतीय तक ये वैक्सीन पहुंचे। जैसे ही इस अभियान ने गति पकड़ी...हमने कहा जान भी है, जहान भी है।

स्वास्थ्य और आजीविका, दोनों ही डिमांड को एड्रेस किया। सरकार ने महिलाओं के बैंक खातों में सीधे पैसे भेजे... रेहड़ी-पटरी वालों, छोटे उद्योगपतियों को आर्थिक मदद दी, खेती-किसानी में दिक्कत ना आए, इसके लिए सारे उपाय किए। आपदा को अवसर में बदलने का संकल्प लिया। हमारी जिन नीतियों पर सवाल उठाए जा रहे थे, वो हमारी नीतियां साबित हुईं। और आज इसलिए भारत की अर्थव्यवस्था इतनी मजबूत स्थिति में है। हम एक वेलफेयर स्टेट हैं। देश के सामान्य मानवी का जीवन आसान हो, उसकी क्वालिटी ऑफ लाइफ सुधरे, ये हमारी प्राथमिकता है। हमने नई योजनाएं बनाईं वो तो स्वाभाविक है, बल्कि हमने ये भी सुनिश्चित किया कि हर पात्र लाभार्थी तक ये योजना का लाभ पहुंचना चाहिए।

हमने सिर्फ वर्तमान पर ही नहीं बल्कि देश के भविष्य पर भी Invest किया। आप ध्यान देंगे तो हमारे हर बजट में आपको चार प्रमुख फैक्टर्स नजर आएंगे। **पहला**- Capital Expenditure के रूप में Record Productive खर्च, **दूसरा**- welfare schemes पर unprecedented निवेश, **तीसरा**- Wasteful Expenditure पर कंट्रोल और **चौथा**- Financial Discipline. हमने इन चारों विषयों में संतुलन बिठाया और चारों विषयों में ही तय लक्ष्य प्राप्त करके दिखाए। आज कुछ लोग हमसे पूछते हैं कि ये काम हमने किया कैसे? इसके कई तरीके से मैं जवाब दे सकता हूँ। और उनमें से एक अहम तरीका रहा है- money saved is money earned का मंत्र. जैसे हमने प्रोजेक्ट तेजी से पूरा करके, उन्हें समय पर खत्म करके भी देश के काफी पैसे बचाए। टाइम-बाउंड तरीके से प्रोजेक्ट पूरे करना हमारी सरकार की पहचान बनी है। उदाहरणार्थ ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, 2008 में शुरू हुआ था। अगर पहले की सरकार ने तेजी से काम किया होता तो उसकी लागत 16 हजार 500 करोड़ रुपए होती। लेकिन ये पूरा हुआ पिछले साल, तब तक इसकी लागत बढ़कर 50 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा हो गई। इसी तरह, आप असम के बोगीबील ब्रिज को भी जानते हैं। इसे साल 1998 में शुरू हुआ था और इसे 1100 करोड़ रुपए के खर्च से पूरा होना था। आपको जानकर के हैरानी होगी क्या हुआ उधर, कई बाद में हम आए हमने इसको जरा तेज गति लगाई। 1998 से चल रहा था मामला। हमने 2018 में उसका पूरा किया। फिर भी जो 1100 करोड़ का मामला था वो 5 हजार करोड़ पर पहुंच गया। मैं आपको ऐसे कितने ही प्रोजेक्ट गिना सकता हूं। पहले जो पैसा बर्बाद हो रहा था, वो पैसा किसका था? वो पैसे किसी नेता की जेब से नहीं आ रहा था, वो पैसा देश का था, देश के टैक्सपेयर का पैसा था, आप लोगों का पैसा था। हमने Taxpayers Money का सम्मान किया, हमने परियोजनाओं को तय समय पर पूरा करने के लिए पूरी ताकत लगा दी। आप देखिए, नए संसद भवन का निर्माण कितनी तेजी से हुआ। कर्तव्य पथ हो... मुंबई का अटल सेतु हो... इनके निर्माण की गति देश ने देखी है। **इसलिए ही आज देश कहता है- जिस योजना का शिलान्यास मोदी करता है, उसका लोकार्पण भी मोदी करता है।**

हमारी सरकार ने व्यवस्था में पारदर्शिता लाकर, टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके भी देश के पैसे बचाए हैं। आप कल्पना कर सकते हैं... हमारे यहां कांग्रेस सरकार के समय से, कागजों में... आप ये सुनकर के हैरान हो जाओगे, कागजों में 10 करोड़ ऐसे नाम चले आ रहे थे, जो फर्जी लाभार्थी थे... ऐसे लाभार्थी जिनका जन्म नहीं हुआ था। ऐसे ही विधवाएं थीं जो बेटी कभी पैदा ही नहीं हुई थी, 10 करोड़। हमने ऐसे 10 करोड़ फर्जी नामों को कागजों से हटाया। हमने Direct Benefit Transfer Scheme शुरू की। हमने पैसे की लीकेज रोकी। एक प्रधानमंत्री कह कर गए थे, 1 रुपये निकलता है तो 15 पैसा पहुंचता है। हमने Direct Transfer किए, 1 रुपये निकलता है, 100 पैसे पहुंचते हैं, 99 भी नहीं। एक Direct Benefit Transfer Scheme का परिणाम ये हुआ है कि देश के करीब 3 लाख करोड़ रुपए गलत हाथों में जाने से बचे हैं। हमारी सरकार ने सरकार को जो चीजें purchase करनी होती हैं, उसमें transparency लाने के लिए GeM एक पोर्टल शुरू किया, GeM उससे हमने समय तो बचाया है, quality improve हुई है। बहुत सारे लोग supplier बन चुके हैं। और उसमें सरकार की करीब 65 हजार करोड़ रुपये की बचत हुई है, 65 हजार करोड़ का सेविंग... Oil Procurement का Diversification भी हमने किया और उसके कारण 25 हजार करोड़ रुपये बचे हैं। पिछले 1 साल में सिर्फ Petrol में Ethanol Blending करके भी हमने 24 हजार करोड़ रुपये बचाए हैं। और इतना ही नहीं, जिस स्वच्छता अभियान का कुछ लोग मजाक उड़ाते हैं... ये देश का Prime Minister स्वच्छता की ही बातें करता रहता है। स्वच्छता अभियान के तहत हमने सरकारी इमारतों में जो सफाई का काम करवाया, उसमें से जो कबाड़ निकला, वो बेचकर मैं 1100 करोड़ रुपये कमाया हूँ।

हमने अपनी योजनाओं को भी ऐसे बनाया कि देश के नागरिकों के पैसे बचें। आज जल जीवन मिशन की वजह से गरीबों को पीने का शुद्ध पानी मिलना संभव हुआ। इस वजह से बीमारी पर होने वाला उनका खर्च कम हुआ है। आयुष्मान भारत ने देश के गरीब के 1 लाख करोड़ रुपए खर्च होने से बचाए हैं और उसका उपचार हुआ है। पीएम जन औषधि केंद्रों पर 80 परसेंट discount, 80 परसेंट discount से हम देश के मध्यम वर्ग और गरीब परिवार को दवाई देते हैं, जन औषधि केंद्र में और उससे जिन्होंने वहां से दवाई खरीदी है उनके 30 हजार करोड़ रुपये बचे हैं।

मैं वर्तमान पीढ़ी के साथ ही आने वाली अनेकों पीढ़ियों के प्रति भी जवाबदेह हूं। मैं सिर्फ रोजमर्रा की जिंदगी पूरी करके जाना नहीं चाहता हूँ। मैं आपकी आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित करके जाना चाहता हूँ।

खजाना खाली करके चार वोट ज्यादा पा लेने की राजनीति से मैं कोसों दूर रहता हूं। और इसलिए हमने नीतियों में, निर्णयों में वित्तीय प्रबंधन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। मैं आपको एक छोटा सा उदाहरण दूंगा। बिजली को लेकर कुछ दलों की अप्रोच आपको पता है। वो अप्रोच, देश की बिजली व्यवस्था को बर्बादी की तरफ ले जाने वाली है। मेरा तरीका उनसे भिन्न है। आपको पता ही है कि हमारी सरकार एक करोड़ घरों के लिए रूफटॉप सोलर स्कीम लेकर आई है। इस स्कीम से लोग बिजली पैदा करके अपना बिजली बिल जीरो कर सकेंगे और ज्यादा बिजली बेचकर पैसा भी कमाएंगे। हमने सस्ते LED बल्ब देने वाली उजाला योजना चलाकर... हमारी पहले की सरकार थी तब LED बल्ब 400 रूपये में मिलता था। हम यहां आए तो स्थिति बन गई 40-50 रुपये में मिलने लगा और quality same, company same. LED के कारण बिजली बिल में लोगों के करीब-करीब 20 हजार करोड़ रुपए बचे हैं।

सात दशक पहले से हमारे यहां गरीबी हटाओ के नारे दिन-रात दिए जाते रहे हैं। इन नारों के बीच गरीबी तो हटी नहीं लेकिन तब की सरकारों ने गरीबी हटाने का सुझाव देने वाली एक इंडस्ट्री तैयार जरूर कर दी। उनको उसी से कमाई होती थी। Consultancy services देने निकल पड़े थे। इस इंडस्ट्री के लोग, गरीबी दूर करने का हर बार नया-नया फॉर्मूला बताते जाते थे और खुद करोड़पति बन जाते थे, लेकिन देश गरीबी कम नहीं कर पाया। सालों तक, एसी कमरों में बैठकर... wine and cheese के साथ गरीबी हटाने के फॉर्मूले पर डिबेट होती रही और गरीब गरीब ही बना रहा। लेकिन 2014 के बाद जब वो गरीब का बेटा प्रधानमंत्री हुआ, तो गरीबी के नाम पर चल रही ये इंडस्ट्री ठप हो गई। मैं गरीबी से निकलकर यहां पहुंचा हूं इसलिए मुझे पता है कि गरीबी से लड़ाई कैसे लड़ी जाती है। हमारी सरकार ने गरीबी के खिलाफ लड़ाई अभियान शुरू किया। हर दिशा में काम शुरू किया, तो परिणाम ये आया कि पिछले 10 वर्षों में 25 करोड़ लोग, गरीबी से बाहर आ गए। ये दिखाता है कि हमारी सरकार की नीतियां सही है, हमारी सरकार की दिशा सही है। इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए हम देश की गरीबी कम करेंगे, अपने देश को विकसित बनाएंगे।

हमारा गवर्नेंस मॉडल दो धाराओं पर एक साथ आगे बढ़ रहा है। एक तरफ हम 20वीं सदी की चुनौतियों को एड्रेस कर रहे हैं। जो हमें विरासत में मिली है। और दूसरी तरफ, 21वीं सदी की aspirations को पूरा करने में हम जुटे हुए हैं। हमने कोई काम छोटा नहीं माना। दूसरी

तरफ, हम बड़ी से बड़ी चुनौती से टकराए, हमने बड़े लक्ष्यों को हासिल किया। हमारी सरकार ने अगर 11 करोड़ शौचालय बनाए हैं, तो स्पेस सेक्टर में भी नई संभावनाएं बनाई हैं। हमारी सरकार ने अगर गरीबों को 4 करोड़ घर दिए हैं तो 10 हजार से ज्यादा अटल टिंकरिंग लैब्स भी बनाई हैं। हमारी सरकार ने अगर 300 से ज्यादा मेडिकल कॉलेज बनाए हैं तो फ्रेट कॉरिडोर, डिफेंस कॉरिडोर का काम भी बहुत तेजी से चल रहा है। हमारी सरकार ने वंदे भारत ट्रेनें चलाई हैं तो दिल्ली समेत देश के कई शहरों में करीब 10 हजार इलेक्ट्रिक बसें भी चलवाई हैं। हमारी सरकार ने करोड़ों भारतीयों को बैंकिंग से जोड़ा है, तो वहीं डिजिटल इंडिया से, फिनटेक से सुविधाओं का सेतु भी बनाया है।

Target कैसे बनाते हैं, आपके लिए सफलता की परिभाषा क्या है? बहुत से लोग कहेंगे कि हम पिछले साल जहां थे, वहां से अपना टारगेट तय करते हैं कि पहले 10 पर थे तो अब 12 पर जाएंगे, 13 पर जाएंगे, 15 पर जाएंगे। अगर 5-10 परसेंट की ग्रोथ है तो इसको अच्छा मान लिया जाता है। मैं कहूंगा कि यही 'कर्स ऑफ इंक्रीमेन्टल थिंकिंग' है। ये इसलिए गलत है क्योंकि आप खुद को दायरे में बांध रहे हैं। क्योंकि आप खुद पर भरोसा करके अपनी गति से आगे नहीं बढ़ रहे हैं। मुझे याद है, मैं सरकार में आया था तो हमारी ब्यूरोक्रेसी भी इसी सोच में फंसी हुई थी। मैंने तय किया कि ब्यूरोक्रेसी को भी इस सोच से बाहर निकालूंगा तभी देश उस सोच से निकल पाएगा। मैंने पिछली सरकारों से कहीं ज्यादा Speed से, कहीं बड़े Scale पर काम करना तय किया। और आज इसका परिणाम दुनिया देख रही है। कई ऐसे सेक्टर हैं, जिनमें बीते 10 सालों में इतना काम हुआ है जितना पिछले 70 साल में, 7 दशक में नहीं हुआ है। यानि 7 दशक और 1 दशक की तुलना कीजिए आप... 2014 तक 7 दशक में करीब 20 हजार किलोमीटर रेलवे लाइन का Electrification हुआ था, 7 दशक में 20 thousand kilometre. हमने अपनी सरकार के 10 साल में 40 हजार किलोमीटर से ज्यादा रेलवे लाइन का Electrification किया है। अब मुझे बताइए कोई मुकाबला है? 2014 तक 7 दशक में 4 लेन या उससे अधिक के करीब 18 हजार किलोमीटर National Highways बने, 18 हजार किलोमीटर। हमने अपनी सरकार के 10 सालों में ऐसे करीब 30 हजार किलोमीटर हाइवे बनाए हैं। 70 साल में 18 हजार किलोमीटर... 10 साल में 30 हजार किलोमीटर... अगर incremental सोच के साथ मैं काम करता तो कहां पहुंचता भाई?

2014 तक 7 दशक में भारत में 250 किलोमीटर से भी कम मेट्रो रेल नेटवर्क बना था। बीते 10 सालों में हमने 650 किलोमीटर से ज्यादा का नया मेट्रो रेल नेटवर्क बनाया है। 2014 तक 7 दशक में भारत में साढ़े 3 करोड़ परिवारों तक नल से जल के कनेक्शन था, साढ़े 3 करोड़... 2019 में हमने जल जीवन मिशन शुरू किया था। बीते 5 साल में ही हमने ग्रामीण इलाकों में 10 करोड़ से अधिक घरों तक नल से जल पहुंचा दिया हैं।

2014 के पहले के 10 साल में देश जिन नीतियों पर चला, वो वाकई देश को कंगाली की राह पर लेकर जा रही थीं। इस बारे में संसद के इसी सेशन में हमने भारत की आर्थिक स्थिति को लेकर के एक White Paper भी रखा है। ये White Paper जो मैं आज लाया हूँ ना, वो मैं 2014 में ला सकता था। राजनीतिक स्वार्थ अगर मुझे साधना होता तो वो आंकड़े मैं 10 साल पहले देश के सामने रख देता। लेकिन 2014 में जो चीजें जब मेरे सामने आई, मैं चौंक गया था। अर्थव्यवस्था हर प्रकार से बहुत गंभीर स्थिति में थी। घोटालों और पॉलिसी पैरालिसिस को लेकर पहले ही दुनियाभर के निवेशकों में घोर निराशा व्यापी थी। अगर मैं उन चीजों को उस समय खोल देता, जरा भी एक नया गलत सिग्नल जाता, तो शायद देश का विश्वास टूट जाता, लोग मानते डूब गए, अब नहीं बच सकते। जैसे किसी मरीज को पता चलें ना कि भई तुम्हें ये गंभीर बीमारी है, तो आधा तो वहीं खत्म हो जाता है, देश का वही हाल हो जाता। पॉलिटिकली मुझे वो सूट करता था, वो सारी चीजें बाहर लाना। राजनीति तो मुझे कहती है वो करो लेकिन राष्ट्रहित मुझे वो नहीं करने देती और इसलिए मैंने राजनीति का रास्ता छोड़ा, राष्ट्रनीति का रास्ता चुना। और पिछले 10 साल में जब सारी स्थितियां मजबूत हुई हैं। कोई भी हमला झेलने की हमारी ताकत बन चुकी है, तो मुझे लगा कि देश के सामने सत्य मुझे बता देनी चाहिए। और इसलिए मैंने parliament में मैंने White Paper पेश किया है। उसको देखोगे तो पता चलेगा, हम कहां थे और कितनी बुरी स्थितियों से निकलकर के आज हम यहां पहुंचे हैं।

दुनिया की तीसरी इकोनॉमी, हम तीसरे नंबर पर पहुंच जाएंगे, और आपको गारंटी देता हूँ, हमारे तीसरे टर्म में देश इकॉनोमी में दुनिया में नंबर 3 तक पहुंच जाएगा। तीसरे टर्म में... और भी बड़े फैसले होने जा रहे हैं। भारत की गरीबी दूर करने, भारत के विकास को नई गति देने के लिए हमने नई योजनाओं की तैयारी पिछले डेढ़ साल से मैं कर रहा हूँ। और बहुत एक-एक दिशा में कैसे काम करूँगा, कहां ले जाऊंगा। इसका पूरा रोड मैप मैं बना रहा हूँ। और करीब-करीब 15 लाख से ज्यादा लोगों से मैंने सुझाव लिए हैं, अलग-अलग तरीके से। 15 लाख से ज्यादा लोगों से, उस पर काम करता रहा हूँ। काम चल रहा है और आने वाले कुछ दिनों तक 20-30 दिन के अंदर वो फाइनल रूप भी ले लेगा। नया भारत, अब ऐसे ही सुपर स्पीड से काम करेगा... और ये मोदी की गारंटी है। ▪

चुनाव सनातन पर गर्व के नाम पर- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

वर्ष 2014 में कांग्रेस सरकार की नकारात्मकता और गुजरात मॉडल पर देश के विकास के नाम पर वोट मांगे थे। भारत की जनता ने लोकतंत्र के प्रति परिक्वता दिखाते हुए 2014 में भाजपा की स्पष्ट बहुमत की सरकार बनाई थी। इसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में हमने सुशासन व विकास के नाम पर वोट मांगे। श्री नरेंद्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री के अपने पहले कार्यकाल में सुशासन स्थापित करके दिखा दिया।

इसके साथ ही सम्राट विक्रमादित्य की तरह दुश्मनों के घर जाकर उन्हें सबक सिखा सकते हैं यह बताया। अब इस बार सनातन पर गर्व है, अतीत पर गर्व है, ज्ञान-विज्ञान, अपनी क्षमताओं और दुनिया भर में अच्छाई बांटने के नाम पर जनता के बीच जा रहे हैं। ▪

स्वामी नारायण मंदिर भारत-यूएई के रिश्तों का आध्यात्मिक प्रतिबिंब

यूनाटेड अरब अमीरात की धरती ने मानवीय इतिहास का एक नया स्वर्णिम अध्याय लिखा है। आबूधाबी में भव्य और दिव्य मंदिर है। इसमें वर्षों पुराना सपना जुड़ा हुआ है। और इसमें भगवान स्वामी नारायण का आशीर्वाद जुड़ा है। प्रमुख स्वामी जिस दिव्य लोक में होंगे, उनकी आत्मा जहां होगी वहां प्रसन्नता का अनुभव कर रही होगी। पूज्य शास्त्री जी महाराज की जन्मजयंती भी है। ये बसंत पंचमी ये पर्व मां सरस्वती का पर्व है। मां सरस्वती यानि बुद्धि और विवेक की मानवीय प्रज्ञा और चेतना की देवी। ये मानवीय प्रज्ञा ही है, जिसने हमें सहयोग, सामंजस्य, समन्वय और सौहार्द जैसे आदर्शों को जीवन में उतारने की समझ दी है। ये मंदिर भी मानवता के लिए, बेहतर भविष्य के लिए बसंत का स्वागत करेगा। ये मंदिर पूरी दुनिया के लिए सांप्रदायिक सौहार्द और वैश्विक एकता का प्रतीक बनेगा।

इस मंदिर के निर्माण में यूएई की सरकार की जो भूमिका रही है, उसकी जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है। लेकिन इस भव्य मंदिर का स्वप्न साकार करने में अगर सबसे बड़ा सहयोग किसी का है तो His Highness Sheikh Mohammed bin Zayed का है। President of UAE की पूरी गवर्मेंट ने कितने बड़े दिल से करोड़ों भारतवासियों की इच्छा को पूरा किया है। और इन्होंने सिर्फ यहां नहीं 140 करोड़ हिन्दुस्तानियों के दिल को जीत लिया है। इस मंदिर के विचार से लेकर एक प्रकार से प्रमुख स्वामी जी के स्वप्न से लेकर के स्वप्न बाद में विचार में परिवर्तित हुआ। His Highness Sheikh Mohammed bin Zayed की उदारता के लिए धन्यवाद ये शब्द भी बहुत छोटा लगता है, इतना बड़ा उन्होंने काम किया। उनके इस व्यक्तित्व को, भारत यूएई रिश्तों की गहराई को केवल यूएई और भारत के लोग ही नहीं बल्कि पूरा विश्व भी जाने। 2015 में यूएई में मैंने His Highness Sheikh Mohammed से इस मंदिर के विचार पर चर्चा की थी। मैंने भारत के लोगों की इच्छा उनके सामने रखी तो उन्होंने पलक झपकते ही उसी पल मेरे प्रस्ताव के लिए हां कर दिया। उन्होंने मंदिर के लिए बहुत कम समय में ही इतनी बड़ी जमीन भी उपलब्ध करवाई। यही नहीं, मंदिर से जुड़े एक और विषय का समाधान किया। मैं साल 2018 में जब दोबारा यूएई आया तो यहां संतों ने मंदिर के दो मॉडल दिखाए। एक मॉडल भारत की प्राचीन वैदिक शैली पर आधारित भव्य मंदिर का था, जो हम देख रहे हैं। दूसरा एक सामान्य सा मॉडल था, जिसमें बाहर से कोई हिंदू धार्मिक चिन्ह नहीं थे। संतों ने मुझे कहा कि यूएई की सरकार जिस मॉडल को स्वीकार करेगी उसी पर आगे काम होगा। जब ये सवाल His Highness Sheikh Mohammed के पास गया, तो उनकी सोच साफ एकदम साफ थी। उनका कहना था कि अबुधाबी में जो मंदिर बने वो अपने पूरे वैभव और गौरव के साथ बने। वे चाहते थे कि यहां सिर्फ यहां मंदिर बने ही नहीं बल्कि वो मंदिर जैसा दिखे भी।

भारत और यूएई की दोस्ती को आज पूरी दुनिया में आपसी विश्वास और सहयोग के एक उदाहरण के रूप में देखा जाता है। खासकर बीते वर्षों में संबंधों ने एक नई ऊंचाई हासिल की है।

लेकिन भारत अपने इन रिश्तों को केवल वर्तमान संदर्भ में ही नहीं देखता। हमारे लिए इन रिश्तों की जड़ें हजारों साल पुरानी है। अरब जगत सैंकड़ों वर्ष पहले भारत और यूरोप के बीच व्यापार में एक ब्रिज की भूमिका निभाता था।

भारत और यूएई की दोस्ती को आज पूरी दुनिया में आपसी विश्वास और सहयोग के एक उदाहरण के रूप में देखा जाता है। खासकर बीते वर्षों में संबंधों ने एक नई ऊंचाई हासिल की है। लेकिन भारत अपने इन रिश्तों को केवल वर्तमान संदर्भ में ही नहीं देखता। हमारे लिए इन रिश्तों की जड़ें हजारों साल पुरानी है। अरब जगत सैंकड़ों वर्ष पहले भारत और यूरोप के

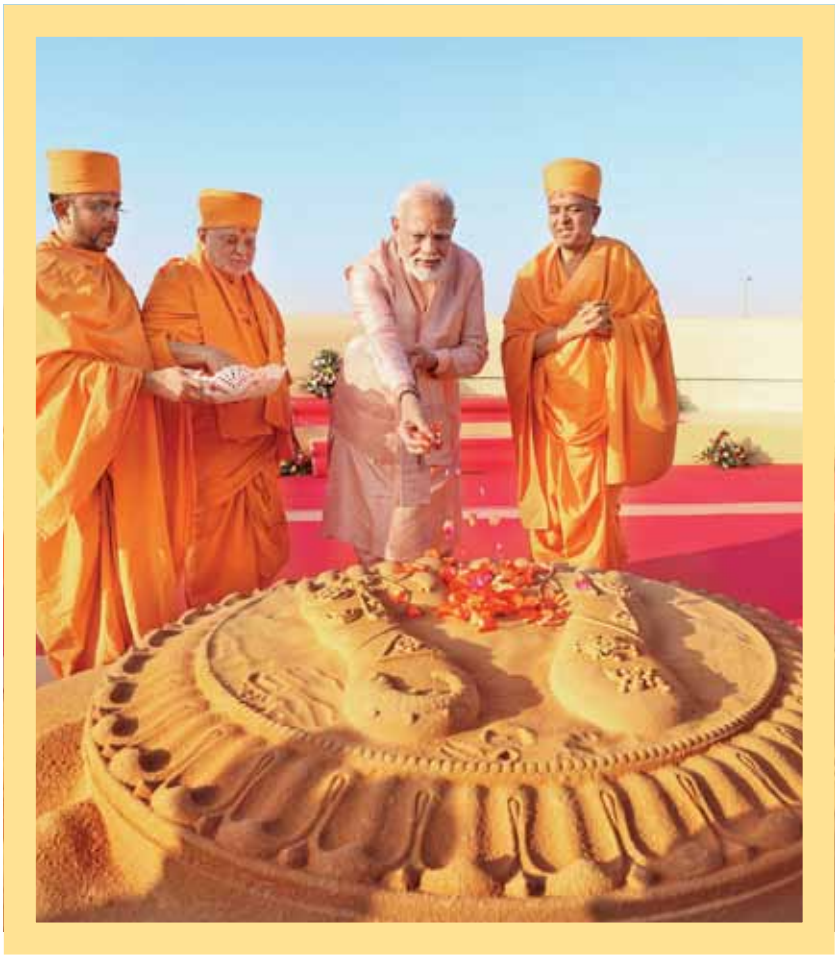

बीच व्यापार में एक ब्रिज की भूमिका निभाता था। गुजरात के व्यापारियों के लिए हमारे पूर्वजों के लिए तो अरब जगत व्यापारिक रिश्तों का प्रमुख केंद्र होता था। सभ्यताओं के इस समागम से ही नई संभावनाओं का जन्म होता है। इसी संगम से कला साहित्य और संस्कृति की नई धाराएं निकलती हैं। इसलिए अबूधाबी में बना ये मंदिर इसलिए इतना महत्वपूर्ण है। इस मंदिर ने हमारे प्राचीन रिश्तों में नई सांस्कृतिक ऊर्जा भर दी है।

अबूधाबी का विशाल मंदिर केवल एक उपासना स्थली नहीं है। ये मानवता की सांझी विरासत का shared हैरिटेज का प्रतीक है। ये भारत और अरब के लोगों के आपसी प्रेम का भी प्रतीक है। इसमें भारत यूएई के रिश्तों का एक आध्यात्मिक प्रतिबिंब भी है।

ये समय भारत के अमृतकाल का समय है, ये हमारी आस्था और संस्कृति के लिए भी अमृतकाल का समय है। अयोध्या में भव्य राम मंदिर का सदियों पुराना सपना पूरा हुआ है। रामलला अपने भवन में विराजमान हुए हैं। पूरा भारत और हर भारतीय उस प्रेम में, उस भाव में अभी तक डुबा हुआ है। और ब्रह्मविहारी स्वामी कह रहे थे कि मोदी जी तो सबसे बड़े पुजारी हैं। मैं जानता नहीं हूँ, मैं मंदिरों की पूजारी की योग्यता रखता हूं या नहीं रखता हूं। लेकिन मैं इस बात का गर्व अनुभव करता हूं कि मैं मां भारती का पूजारी हूं। परमात्मा ने मुझे जितना समय दिया है, उसका हर पल और परमात्मा ने जो शरीर दिया है, उसका कण-कण सिर्फ और सिर्फ मां भारती के लिए है। 140 करोड़ देशवासी मेरे आराध्य देव हैं।

अयोध्या के परम आनंद को आज अबूधाबी में मिली खुशी की लहर ने और बढ़ा दिया है।

वेदों ने कहा है 'एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात एक ही ईश्वर को, एक ही सत्य को विद्वान लोग अलग-अलग तरह से बताते हैं। ये दर्शन भारत की मूल चेतना का हिस्सा है। इसलिए हम स्वभाव से ही न केवल सबको स्वीकार करते हैं, बल्कि सबका स्वागत भी करते हैं। हमें विविधता में बैर नहीं दिखता, हमें विविधता ही विशेषता लगती है। आज वैश्विक संघर्षों और चुनौतियों के सामने ये विचार हमें एक विश्वास देता है। मानवता में हमारे विश्वास को मजबूत करता है। मंदिर की दीवारों पर हिन्दू धर्म के साथ-साथ Egypt की hieroglyph और बाइबल की, कुरान की कहानियां भी उकेरी गई हैं। मंदिर में प्रवेश करते ही वॉल ऑफ हारमनी के दर्शन होते हैं। इसे हमारे बोहरा मुस्लिम समाज के भाइयों ने बनवाया है। इसके बाद इस बिल्डिंग का इम्प्रेसिव थ्री डी एक्सपीरियंस होता है। इसे पारसी समाज ने शुरू करवाया है। यहां लंगर की जिम्मेदारी के लिए हमारे सिख भाई-बहन सामने आए हैं। मंदिर के निर्माण में हर धर्म संप्रदाय के लोगों ने काम किया है। मंदिर के सात स्तंभ या मीनारें यूएई के सात अमीरात के प्रतीक हैं। यही भारत के लोगों का स्वभाव भी है। हम जहां जाते हैं, वहां की संस्कृति को, वहां के मूल्यों को सम्मान भी देते हैं और उन्हें आत्मसात भी करते हैं,

हमारे वेद हमें सिखाते हैं कि समानो मंत्रः समितिः समानी, समानम् मनः सह चित्तम् एषाम्। अर्थात हमारे विचार एकजुट हों, हमारे मन एक दूसरे से जुड़े, हमारे संकल्प एकजुट हों, मानवीय एकता का ये आह्वान ही हमारे आध्यात्म का मूलभाव रहा है। हमारे मंदिर इन शिक्षाओं के, इन संकल्पों के केंद्र रहे हैं। इन मंदिरों में हम एक स्वर में ये घोष करते हैं कि प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, मंदिरों में वेद की जिन ऋचाओं का पाठ होता है। वो हमें सिखाती हैं- वसुधैव कुटुम्बकम - अर्थात पूरी पृथ्वी ही हमारा परिवार है। इस विचार को लेकर आज भारत विश्व शांति के अपने मिशन के लिए प्रयास कर रहा है।

भारत की प्रेसिडेंसी में इस बार जी-20 देशों ने One Earth, One Family, One Future के संकल्प को और मजबूत बनाया है, आगे बढ़ाया है। हमारे ये प्रयास One sun, One World, One Grid जैसे अभियानों को दिशा दे रहे हैं। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया का भाव लेकर भारत One Earth, One Health इस मिशन के लिए भी काम कर रहा है।

हमारी संस्कृति, हमारी आस्था, हमें विश्व कल्याण के इन संकल्पों का हौसला देती है। भारत इस दिशा में सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र पर काम कर रहा है। अबूधाबी के मंदिर की मानवीय प्रेरणा हमारे इन संकल्पों को ऊर्जा देगी, उन्हें साकार करेगी। ▪

आने वाला चुनाव भारत को महान बनाने का चुनाव है- अमित शाह

विधानसभा चुनाव में मिली जीत भी आपके परिश्रम, पसीने और पुरुषार्थ से मिली है। इस बार मोदी जी ने 400 पार का लक्ष्य दिया है और यह लक्ष्य बूथ के कार्यकर्ताओं के बिना हासिल नहीं हो सकता।

मध्यप्रदेश राजमाता विजयाराजे सिंधिया की भूमि है, कुशाभाऊ ठाकरे की भूमि है, कमल की भूमि है। बूथ के कार्यकर्ता हर लाभार्थी से, हर युवा से, हर माता बहन, हर किसान से संपर्क करें और हर बूथ पर नरेंद्र मोदी बनकर खड़े रहें।

बूथ समिति कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि 23 हजार बूथ कार्यकर्ताओं से बातचीत करने के लिए आया हूं। यह विजय का संकल्प लेने का सम्मेलन है, मोदी जी के नेतृत्व में 400 से ज्यादा सीटें लेकर सरकार बनाने का संकल्प लेने का सम्मेलन है। अन्य पार्टियां कई कारणों से चुनाव जीत सकती हैं, लेकिन भारतीय जनता पार्टी अपने बूथ के कार्यकर्ताओं के दम पर ही चुनाव जीतती है। विधानसभा चुनाव में मिली जीत भी आपके परिश्रम, पसीने और पुरुषार्थ से मिली है। इस बार मोदी जी ने 400 पार का लक्ष्य दिया है और यह लक्ष्य बूथ के कार्यकर्ताओं के बिना हासिल नहीं हो सकता। मध्यप्रदेश राजमाता विजयाराजे सिंधिया की भूमि है, कुशाभाऊ ठाकरे की भूमि है, कमल की भूमि है। बूथ के कार्यकर्ता हर लाभार्थी से, हर युवा से, हर माता बहन, हर किसान से संपर्क करें और हर बूथ पर नरेंद्र मोदी बनकर खड़े रहें। हर कार्यकर्ता चट्टान की तरह अपने बूथ पर खड़े रहकर कमल खिलाने का संकल्प लें।

भाजपा की सरकार ने पूरा किया हर वादा

बीते 10 सालों में हमारी सरकार ने हर वादा पूरा किया है। 2019 में राहुल बाबा ताना मारते थे- मंदिर वहीं बनाएंगे पर तारीख नहीं बताएंगे। 22 जनवरी 2024 को रामलला 500 सालों के बाद भव्य मंदिर में विराजमान हो गए हैं। जिस राम मंदिर के मुद्दे को कांग्रेस ने सालों तक अटकाकर, भटकाकर और लटकाकर रखा, उसका मोदी जी ने भूमिपूजन किया और प्राण प्रतिष्ठा कर करोड़ों रामभक्तों की इच्छा को पूरा किया। धारा 370 को हटाकर रहेंगे, इस देश के अंदर दो निशान, दो विधान, दो प्रधान नहीं रह सकते। हमारा नारा था 'जहां हुए बलिदान मुखर्जी वह कश्मीर हमारा है'। मोदी जी के नेतृत्व में 5 अगस्त, 2019 को धारा 370 को समाप्त कर दिया और आज कश्मीर भारत का मुकुटमणि बनकर हमारे सामने है। हमने सेना के रिटायर्ड जवानों को 'वन रैंक, वन पेंशन' का वादा किया था और मोदी जी ने ये वादा भी पूरा कर दिया।

हमने वादा किया था कि तीन तलाक को समाप्त कर देंगे, मोदी जी ने मुस्लिम माता-बहनों के कल्याण के लिए ट्रिपल तलाक की प्रथा को भी समाप्त कर दिया। हमने वादा किया था कि विधानसभा और लोकसभा में 33 प्रतिशत आरक्षण माता-बहनों को देंगे, हमारी सरकार ने ये वादा भी पूरा कर दिया। मोदी जी के शासन में नई संसद बनी, कर्तव्य पथ बना, महाकाल महालोक बना, केदारनाथ धाम, बद्रीनाथ धाम और सोमनाथ का मंदिर बना। काशी विश्वनाथ का गलियारा बना और राम मंदिर पर भी ध्वजा फहरा दी गई।

मोदी सरकार ने बदला गरीबों का जीवन

हमने कहा था कि हम गरीबों के कल्याण के लिए काम करेंगे। जब मोदी जी प्रधानमंत्री बने तब उन्होंने कहा था कि भाजपा की सरकार

गरीबों, दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों को समर्पित रहेगी। हमने 80 करोड़ से ज्यादा गरीबों को प्रतिमाह, प्रति व्यक्ति 5 किलो मुफ्त अनाज देने का काम किया। 12 करोड़ से ज्यादा शौचालय बनाकर माता और बहनों को सम्मान देने का काम किया। चार करोड़ लोगों को घर दिया,10 करोड़ माताओं को गैस का सिलेंडर दिया, 14 करोड़ परिवारों को नल से जल और 11 करोड़ किसानों को 6 हजार रूपए प्रति वर्ष देने का काम किया। हमारी सरकार 60 करोड़ लोगों को 5 लाख रुपये तक मुफ्त इलाज की सुविधा दे रही है।

कांग्रेस करती है देश और सनातन का अपमान

सोनिया-मनमोहन की सरकार के 10 सालों में आए दिन पाकिस्तान से आलिया, मालिया, जमालिया आते थे और हमला करके भाग जाते थे। उन्हें याद नहीं रहा कि अब मोदी जी की सरकार है। जब उन्होंने उरी और पुलवामा में हमला किया, तो मोदी जी की सरकार ने 10 दिनों में सर्जिकल और एयर स्ट्राइक करके आतंकवादियों को उनके घर में घुसकर मारने का काम किया।

कांग्रेस ने हमेशा सनातन धर्म का अपमान किया। उनके साथी सनातन धर्म को गालियां देते हैं। कांग्रेस ने राजा भोज के नाम पर मेट्रो का विरोध किया, रविदास मंदिर का विरोध किया, मां नर्मदा के जयकारे का विरोध किया और भारतीय संस्कृति को हमेशा अपमानित करने का काम किया। लेकिन मोदी जी भारत तो छोड़िए, यूएई में भी भव्य मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा करके आए हैं।

कांग्रेस और भ्रष्टाचार एक-दूसरे के पर्याय

कांग्रेस और भ्रष्टाचार पर्यायवाची शब्द हैं। कांग्रेस का मतलब भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार का मतलब है कांग्रेस पार्टी। कांग्रेस ने अपने शासन के 10 सालों में 12 लाख करोड़ के घपले-घोटाले किये। कोल घोटाला, कॉमनवेल्थ घोटाला, टूजी, आईमेक्स मीडिया, एयरसेल मैक्सिस, जम्मू क्रिकेट एसोसिएशन, एम्ब्रेयर एयर और अगस्ता वेस्टलैंड जैसे कई घोटाले किए।

अब मोदी सरकार के 10 साल पूरे होने जा रहे हैं, लेकिन हमारे विरोधी भी मोदी जी पर एक कानी-पाई का आरोप नहीं लगा सके हैं। मोदी जी ने पारदर्शी शासन देने का काम किया है।

कांग्रेस ने मध्यप्रदेश को क्या दिया?

अब लोकसभा चुनाव आ रहे हैं और मैं कांग्रेस पार्टी से पूछना चाहता हूं कि आपने मध्यप्रदेश को क्या दिया? सोनिया-मनमोहन की सरकार ने अपने 10 सालों में मध्यप्रदेश को 1.99 लाख करोड़ दिये थे, मोदी जी की सरकार 9 सालों में 7.44 लाख करोड़ दे चुकी है। 5.5 लाख करोड़ के प्रोजेक्ट अलग से हैं। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने बंटाधार और बीमारू मध्यप्रदेश को एक विकसित राज्य में कन्वर्ट करने का प्रयास किया है।

मोदी सरकार ने किसानों के लिए कई काम किए हैं। समर्थन मूल्य पर धान और गेहूं की खरीदी का रिकॉर्ड बनाया है। 150 प्रतिशत एमएसपी दी। यही कारण है कि कांग्रेस पार्टी कहीं दिखाई नहीं पड़ती। एक के बाद एक, हर राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार आ रही है। ▪

कांग्रेस ने मैदान छोड़ा: डॉ. मोहन यादव

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी जिस भाव से काम को हाथ में लेते हैं, उसी अंदाज से उसे अंजाम तक पहुंचाते हैं। उन्होंने असंभव कार्य को भी अपनी कार्य दक्षता से सफल किया है। श्री अमित शाह जी के खजुराहो आगमन की धमक से ही कांग्रेस पार्टी ने खजुराहो लोकसभा का मैदान छोड़ दिया है। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का पूरे प्रदेश में यही हश्र होने वाला है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की दुनिया में एक विशिष्ट पहचान बनी है। कांग्रेस के शासनकाल में देश में दंगे होते थे। लेकिन अब देश में आतंकवाद और दंगे की घटनाएं समाप्त हो गई हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जब जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाई गई, उसके बाद से देश में पूरी तरह से शांति है। कांग्रेस पिछली बार खजुराहो लोकसभा करीब पांच लाख वोट से हारी थी, उसके ठिकाने नहीं लगे थे। आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा खजुराहो ही नहीं, प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज करेगी और देश में श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में ऐतिहासिक बहुमत से भाजपा की सरकार बनेगी। ▪

29 लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज करेगी भाजपा: विष्णुदत्त शर्मा

वर्ष 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में खजुराहो लोकसभा की आठ में से छह सीटें भाजपा को मिली थीं। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी की कुशल रणनीति से 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने ऐतिहासिक जीत के साथ खजुराहो लोकसभा की सभी आठ विधानसभा सीटें जीती हैं। खजुराहो में बूथ समिति सम्मेलन से मध्यप्रदेश में लोकसभा चुनाव का बिगुल फूंक दिया है और श्री शाह की कुशल रणनीति से भाजपा प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीट जीतेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में बुंदेलखंड को कई सौगातें मिली हैं। खजुराहो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की आईकॉनिक सिटी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने खजुराहो को विश्व का सबसे आधुनिकतम रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट और दो-दो पायलट ट्रेनिंग सेंटर की सैगात दी है। बुंदेलखंड अब न गरीब रहेगा और न ही सूखा, क्योंकि प्रधानमंत्री जी ने 44605 करोड़ की केन-बेतवा लिंक परियोजना की सौगात दी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने हर बूथ पर 370 वोट बढ़ाने का मंत्र दिया है। आधुनिक राजनीति के चाणक्य व कुशल रणनीतिकार केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के साथ हर बूथ पर दस प्रतिशत वोट बढ़ाने के लक्ष्य को पूरा करने का संकल्प लेकर भाजपा कार्यकर्ता चुनाव मैदान में जुटे जाएं। भारतीय जनता पार्टी इस लोकसभा चुनाव में प्रदेश के सभी 29 लोकसभा सीटों के साथ खजुराहो लोकसभा क्षेत्र के सभी 2293 बूथों पर जीत दर्ज करेगी। ▪

अधूरे सपने 17वीं लोकसभा के माध्यम से पूरे हुए

सत्रहवीं लोकसभा ने पांच वर्ष देश सेवा में जिस प्रकार से अनेक विविध महत्वपूर्ण निर्णय किए। अनेक चुनौतियों को सबने अपने सामर्थ्य से देश को उचित दिशा देने का प्रयास, एक प्रकार से पांच वर्ष की वैचारिक यात्रा का, राष्ट्र को समर्पित उस समय का, देश को फिर से एक बार अपने संकल्पों को राष्ट्र के चरणों में समर्पित करने का ये अवसर है। ये पांच वर्ष देश में रिफॉर्म, परफॉर्म एंड ट्रांसफॉर्म, ये बहुत rare होता है, कि रिफार्म भी हो, परफॉर्म भी हो और हम ट्रांसफॉर्म होता अपनी आंखों के सामने देख पाते हों, एक नया विश्वास भरता हो। ये अपने आप में सत्रहवीं लोकसभा से देश अनुभव कर रहा है।

इस पांच वर्ष में इस सदी का सबसे बड़ा संकट पूरी मानव जाति ने झेला। कौन बचेगा? कौन बच पाएगा? कोई किसी को बचा सकता है कि नहीं बचा सकता? ऐसी वो अवस्था थी। ऐसे में सदन में आना ये भी, अपना घर छोड़कर के निकलना ये भी संकट का काल था। उसके बाद भी जो भी नई व्यवस्थाएं करनी पड़ी, उसको किया, देश के काम को रुकने नहीं दिया। सदन की गरिमा भी बनी रहे और देश के आवश्यक कामों को जो गति देनी चाहिए, वो गति भी बनी रहे और उस काम में सदन की जो भूमिका है, वो रत्ती भर भी पीछे न रही।

ये बात सही है कि लोकसभा के चाहे सत्रहवीं हो, सोलहवीं हो, पंद्रहवीं हो, संसद का नया भवन होना चाहिए। इसकी चर्चा सबने की, सामूहिक रूप से की, एक स्वर से की, लेकिन निर्णय नहीं होता था। ये आपका नेतृत्व है जिसने निर्णय किया, चीजों को आगे बढ़ाया, सरकार के साथ विविध मीटिंगे की, और उसी का परिणाम है कि आज देश को ये नया संसद भवन प्राप्त हुआ है।

संसद के नए भवन में एक विरासत का अंश और जो आजादी का पहला पल था उसको जीवंत रखने का हमेशा-हमेशा हमारे मार्गदर्शक रूप में ये सेंगोल को यहां स्थापित करने का काम और अब प्रति वर्ष उसको सेरेमोनियल इवेंट के रूप में उसको हिस्सा बनाने का एक बहुत बड़ा काम हुआ है जो भारत की आने वाली पीढ़ियों को हमेशा-हमेशा हमें आजादी के उस प्रथम पल के साथ जोड़ कर रखेगा। और आजादी का वो पल क्यों था, हमें वो याद रहेगा तो देश को आगे ले जाने की वो प्रेरणा भी बनी रहेगी, उस पवित्र काम को किया है।

ये भी सही है, इस कालखंड में जी- 20 की अध्यक्षता का भार तो मिला, भारत को बहुत सम्मान मिला, देश के हर राज्य ने विश्व के सामने भारत का सामर्थ्य और अपने राज्य की पहचान बखूबी प्रस्तुत की, जिसका प्रभाव विश्व के मंच पर है। उसके साथ जी-20 की तरह पी-20 का जो सम्मेलन हुआ और विश्व के अनेक देशों के स्पीकर्स यहां आए और Mother of democracy, भारत की इस महान परंपरा को ले करके, इस democratic values को ले करके सदियों से हम आगे बढ़े हैं। व्यवस्थाएं बदली होंगी लेकिन democratic मन भारत का हमेशा बना रहा है, उस बात को विश्व के स्पीकर्स के सामने बखूबी प्रस्तुत किया और भारत को लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में भी एक प्रतिष्ठा प्राप्त कराने का काम हुआ।

हम संविधान सदन जिसको कहते हैं, जो पुरानी संसद, जिसमें महापुरुषों के जन्म जयंती के निमित्त उनकी प्रतिमा को पुष्प चढ़ाने के निमित्त हम लोग एकत्र होते हैं। लेकिन वो एक 10 मिनट का ईवेंट होता था और हम लोग चले जाते थे। देशभर में इन महापुरुषों के लिए वक्तव्य स्पर्धा, निबंध स्पर्धा का एक अभियान चलाया है। उसमें से जो बेस्ट ऑरेटर होते थे और बेस्ट Essays होते थे और राज्य से दो-दो बालक उस दिन दिल्ली आते थे और उस महापुरुष की जन्म-जयंती के समय पुष्प वर्षा में वो मौजूद रहते थे, देश के नेता भी, और बाद में पूरा दिन रह करके उस पर अपना व्याख्यान देते थे। वे दिल्ली के अन्य स्थान पर जाते थे, वो सांसद की गतिविधियों को समझते थे यानी आपने जो निरंतर प्रक्रिया चला करके देश के लाखों विद्यार्थियों को भारत की संसदीय परम्परा से जोड़ने का बहुत बड़ा काम किया है।

संसद की लाइब्रेरी, जिसको उपयोग करना चाहिए वो कितना कर पाते थे, वो तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन उसके दरवाजे सामान्य व्यक्ति के लिए खोल दिए।

डिजिटलाइजेशन, आधुनिक टेक्नोलॉजी हमारी व्यवस्था में कैसे बने, शुरू में कुछ साथियों को दिक्कत रही लेकिन अब सब इसके आदी हो गए हैं।

17वीं लोकसभा की productivity करीब-करीब 97 परसेंट रही है। 97 परसेंट productivity अपने-आप में प्रसन्नता का विषय है लेकिन मुझे विश्वास है कि आज जब हम 17वीं लोकसभा की समाप्ति की तरफ हम बढ़ रहे हैं तब एक संकल्प ले करके 18वीं लोकसभा प्रारंभ होगी कि हम हमेशा शत-प्रतिशत से ज्यादा productivity वाली हमारी कार्यवाही रहेगी। और इसमें भी सात सत्र 100 प्रतिशत से भी ज्यादा productivity वाले रहे।

17वीं लोकसभा के पहले सत्र में दोनों सदन ने 30 विधेयक पारित किए थे, ये अपने-आप में रिकॉर्ड है। और नए-नए बेंचमार्क 17वीं लोकसभा में बनाए हैं।

आजादी के 75 वर्ष पूरा होने का उत्सव, हम सबको कितना बड़ा सौभाग्य मिला है कि ऐसे अवसर पर हमारे सदन ने अत्यंत महत्वपूर्ण

कामों का नेतृत्व किया है, हर स्थान पर हुआ। शायद ही कोई सांसद ऐसा होगा कि जिसने आजादी के 75 वर्ष को लोकोत्सव बनाने में अपने-अपने क्षेत्र में भूमिका अदा न की हो। यानी सचमुच में आजादी के 75 वर्ष को देश ने जी भर करके उत्सव से मनाया और उसमें हमारे माननीय सांसदों की और इस सदन की बहुत बड़ी भूमिका रही है। हमारे संविधान लागू होने के 75 वर्ष, ये भी अवसर इसी समय इसी सदन को मिला है, और संविधान की जो भी जिम्मेदारियां हैं उनकी शुरुआत यहां से होती है और उनके साथ ही जुड़ना, ये अपने-आप में बहुत बड़ी प्रेरक है।

इस कार्यकाल में बहुत ही Reforms हुए हैं और game-changer है। 21वीं सदी के भारत की मजबूत नींव उन सारी बातों में नजर आती है। एक बड़े बदलाव की तरफ तेज गति से देश आगे बढ़ा है और देश... हम संतोष से कह सकते हैं कि हमारी अनेक पीढ़ियां जिन बातों का इंतजार करती थीं, ऐसे बहुत से काम इस 17 वीं लोकसभा के माध्यम से पूरे हुए, पीढ़ियों का इंतजार खत्म हुआ। अनेक पीढ़ियों ने एक संविधान, इसके लिए सपना देखा था। लेकिन हर पल वो संविधान में एक दरार दिखाई देती थी, एक खाई नजर आती थी। एक रुकावट चुभती थी। लेकिन इसी सदन ने धारा 370 हटा करके संविधान के पूर्ण रूप को इसके पूर्ण प्रकाश के साथ उसका प्रकटीकरण हुआ। और मैं मानता हूं जब संविधान के 75 वर्ष हुए हैं... जिन-जिन महापुरुषों ने संविधान को बनाया है उनकी आत्मा जहां भी होगी, जरूर हमें आशीर्वाद देते होंगे, ये काम हमने पूरा किया है। कश्मीर के भी जम्मू-कश्मीर के लोगों को सामाजिक न्याय से वंचित रखा गया था। हमें संतोष है कि सामाजिक न्याय का हमारा जो कमिटमेंट है, वो हमारे जम्मू-कश्मीर के भाई-बहनों को भी पहुंचा करके हम संतोष की अनुभूति कर रहे हैं।

आतंकवाद नासूर बनकर देश के सीने पर गोलियां चलाता रहता था। मां भारती की धरा आए दिन रक्त रंजित हो जाती थी। देश के अनेक वीर होनहार लोग, आतंकवाद के कारण बलि चढ़ जाते थे। हमने आतंकवाद के विरुद्ध सख्त कानून बनाए। उसके कारण, जो लोग ऐसी समस्याओं के लिए जूझते हैं उनको एक बल मिला है। मानसिक रूप के अनुसार Confidence बढ़ा है। और भारत को पूर्ण रूप से आतंकवाद से मुक्ति का उसमें एक एहसास हो रहा है। और वो सपना भी सिद्ध हो कर रहेगा। हम 75 साल तक अंग्रेजों की दी हुई दंड संहिता में जीते रहे हैं। हम गर्व से कहेंगे देश को, नई पीढ़ी को कहेंगे, आप अपने पोता-पोती को कह सकेंगे गर्व से कि देश 75 साल भले ही दंड संहिता में जिया है लेकिन अब आने वाले पीढ़ी न्याय संहिता में जियेगी। और यही सच्चा लोकतंत्र है।

नया सदन, इसकी भव्यता वगैरह तो है ही लेकिन उसका प्रारंभ एक ऐसे काम से हुआ है जो भारत को मूलभूत मान्यताओं को बल देता है और वो नारी शक्ति वंदन अधिनियम है। जब भी इस नए सदन की चर्चा होगी तो नारी शक्ति वंदन अधिनियम इसका जिक्र, यानि एक और भले ही वो छोटा सत्र था लेकिन दूरगामी निर्णय करने वाला सत्र था। इस नए सदन की पवित्रता का एहसास उसी पल शुरू हो गया था जो हम लोगों को एक नई शक्ति देने वाला है और उसी का परिणाम है कि आने वाले समय जब बहुत बड़ी मात्रा में यहां हमारी माताएं-बहनें बैठी होंगी, देश गौरव की अनुभूति करेगा। तीन तलाक कितने उतार-चढ़ाव से हमारी मुस्लिम बहनें इंतजार कर रही थीं। अदालत ने उनके पक्ष में निर्णय किए थे, लेकिन वो हक उनको प्राप्त नहीं हो रहा था। मजबूरियों से गुजारा करना पड़ रहा था। कोई प्रकट रूप से कहे, कोई अप्रकट रूप से कहे। लेकिन तीन तलाक से मुक्ति का बहुत महत्वपूर्ण और नारी शक्ति के सम्मान का काम 17वीं लोकसभा ने किया है।

आने वाले 25 वर्ष हमारे देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। राजनीति की गहमा-गहमी अपनी जगह पर है। राजनीति क्षेत्र के लोगों की आशा-आकांक्षा अपनी जगह पर है। लेकिन देश की अपेक्षा, देश की आशंका, देश की सपना, देश का संकल्प, ये बन चुका है... 25 साल हो गए हैं तो देश इच्छित परिणाम प्राप्त करके रहेगा। 1930 में जब महात्मा गांधी जी ने दांडी की यात्रा की थी, जब नमक का सत्याग्रह था। घोषणा होने के पहले लोगों को सामर्थ्य नजर नहीं आया था। चाहे स्वदेशी आंदोलन हो, चाहे सत्याग्रह की परंपरा हो, चाहे नमक का सत्याग्रह हो। उस समय तो घटनाएं छोटी लगती थी लेकिन 1947, वो 25 साल का कालखण्ड, उसने देश के अंदर वो जज्बा पैदा कर दिया था। हर व्यक्ति के दिल में वो जज्बा पैदा कर दिया था कि अब तो आजाद होकर रहना है। देश में वो जज्बा पैदा हो रहा है। हर गली-मोहल्ले में हर बच्चे के मुंह से निकला है कि 25 साल में हम विकसित भारत बना के रहेंगे। इसलिए ये 25 साल देश की युवा शक्ति के अत्यंत महत्वपूर्ण कालखंड हैं। और हम में से कोई ऐसा नहीं होगा जो नहीं चाहता होगा कि 25 साल में देश विकसित भारत न बने। हर किसी का सपना है, कुछ लोगों ने सपने को संकल्प बना लिया है, कुछ लोगों को शायद संकल्प बनाते देर हो जाएगी, लेकिन जुड़ना तो हरेक को होगा और जो जुड़ भी नहीं पाएंगे और जीवित होंगे तो फल तो जरूर खाएंगे।

ये 5 वर्ष युवाओं के लिए बहुत ही ऐतिहासिक कानून के भी बने हैं। व्यवस्था में पारदर्शिता लाकर युवाओं को नए मौके दिए गए हैं। पेपर लीक जैसी समस्या जो हमारे युवाओं को चिंतित करती थी। हमने बहुत ही कठोर बनाया है ताकि उनके मन में जो सवाल या निशान है और उनको व्यवस्था के प्रति उनका गुस्सा था उसको एड्रेस करने का सभी माननीय सांसदों ने देश के युवाओं के मन के भाव को समझ करके बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय किया है।

ये बात सही है कि कोई भी मानव जाति अनुसंधान के बिना आगे नहीं बढ़ सकती है। उसको नित्य परिवर्तन के लिए अनुसंधान अनिवार्य होते हैं। और मानव जाति का लाखों साल का इतिहास गवाह है कि हर कालखंड में अनुसंधान होते रहे हैं, जीवन बढ़ता चला गया है, जीवन का विस्तार होता गया है। इस सदन ने विधिवत रूप से कानूनी व्यवस्था खड़ी करके अनुसंधान को प्रोत्साहन देने का बहुत बड़ा कार्य किया है। National Research Foundation, ये कानून आम तौर पर रोजमर्रा की राजनीति की चर्चा का विषय बन नही पाता, लेकिन इसके परिणाम बहुत दूरगामी होने वाले हैं और इतना बड़ा महत्वपूर्ण काम इस 17वीं लोकसभा ने किया है। देश की युवा शक्ति में... इस व्यवस्था के कारण दुनिया का रिसर्च का एक हब हमारा देश बन सकता है। हमारे देश के युवा के talent ऐसी है, आज भी दुनिया की बहुत कंपनियां ऐसी हैं जिनकी innovation के काम आज भी भारत में हो रहे हैं। लेकिन ये बहुत बड़ा हब बनेगा।

21वी सदी में हमारी basic needs पूरी तरह बदल रही हैं। कल तक जिसका कोई मूल्य नहीं था, कोई ध्यान नहीं था वो आने वाले समय में बहुत अमूल्य बन चुका है जैसे डेटा... पूरी दुनिया में चर्चा है डेटा का सामर्थ्य क्या होता है। हमने Data Protection Bill लाकर के पूरी भावी पीढ़ी को सुरक्षित कर दिया है। पूरी भावी पीढ़ी को एक नया शस्त्र हमने उसके हाथ में दिया है जिसके आधार पर वो अपने भविष्य को बनाने के लिए इसका सही इस्तेमाल भी करेंगे। और Digital Personal Data Protection Act, ये हमारी 21वीं सदी की पीढ़ी को और दुनिया के लोगों को भी भारत के इस एक्ट के प्रति रुचि बनी हुई है। दुनिया के देश उसका अध्ययन करते हैं। अपने-अपने नई-नई व्यवस्था अनुकूल करने के लिए प्रयास कर रहे हैं। और डेटा का उपयोग कैसे हो, उसकी भी उसमें गाइडलाइंस

हैं। यानि एक प्रकार से प्रोटेक्शन का पूरा प्रबंध करते हुए इसका सामर्थ्य कैसे आए, जिस डेटा को लोग गोल्ड माइन कहते हैं, new oil कहते हैं। वो सामर्थ्य भारत को प्राप्त है और भारत इस शक्ति का इसलिए विशेष है, क्योंकि विविधताओं से भरा हुआ देश है। हमारे पास जिस प्रकार की जानकारियां और हमारे साथ जुड़ा हुआ डेटा जो जनरेट होता है, सिर्फ हमारे रेलवे पेसेंजर्स का डेटा कोई देख लें, दुनिया के लिए बहुत बड़ा शोध का विषय बन सकता है। उसकी ताकत को हमनें पहचान करके इस कानूनी व्यवस्था को दिया है।

जल-थल-नभ ये सदियों से इन क्षेत्रों की चर्चा चली है। लेकिन अब समुद्री शक्ति और स्पेस की शक्ति और साइबर की शक्ति, ये ऐसी त्रिविध शक्तियों का मुकाबला करने की आवश्यकता खड़ी हुई है, और विश्व जिस प्रकार के संकटों से गुजर रहा है। और विश्व जिस प्रकार की विचारीय प्रभाव पैदा करने का प्रयास कर रहे है तब इन क्षेत्रों में हमें सकारात्मक सामर्थ्य भी पैदा करना है और नकारात्मक शक्तियों से अपने आप को हर चुनौतियों से चुनौती लेने का सामर्थ्य भी बनाना है। और उसके लिए आवश्यक स्पेस से जुड़े रिफॉर्म्स बहुत अनिवार्य थे और बहुत दूरगामी दृष्टि के साथ स्पेस के रिफार्म का काम हमारे यहां हुआ है।

बीते वर्षों में हजारों compliances ने बेवजह जनता जनार्दन को ऐसी चीजों में उलझाए रखा। ये गर्वनेंस की ऐसी विकृत व्यवस्थाएं विकसित हो गई उसमें से मुक्ति दिलाने का बहुत बड़ा काम हुआ है। यानी इस प्रकार के compliances के बोझ में सामान्य व्यक्ति तो दब जाता है। और मैंने तो एक बार लाल किले से भी कहा था। हम जब minimum government, maximum governance कहते हैं। मैं दिल से मानता हूं कि लोगों की जिंदगी में से जितना जल्द सरकार निकल जाए, उतना ही लोकतंत्र का सामर्थ्य बढ़ेगा। रोजमर्रा की जिंदगी में हर डगर पर सरकार टांग क्यों अड़ा रही है? हां जो अभाव में है उसके लिए सरकार हर पल मौजूद होगी। लेकिन सरकार का प्रभाव उसकी जिंदगी को ही रुकावट बना दे ऐसी लोकतंत्र नहीं हो सकता है। और इसलिए हमारा मकसद है सामान्य मानवीय की जिंदगी से सरकार जितनी हट जाए, कम से कम उसकी जिंदगी में सरकार का नाता रहे वैसा समृद्ध लोकतंत्र दुनिया के सामने हमने आगे बढ़ाना चाहिए। उस सपने को पूरा करेंगे।

Companies Act, Limited Liability Partnership Act, साठ से अधिक गैर जरूरी कानूनों को हमनें हटाया है। Ease of doing business इसके लिए ये बहुत बड़ी आवश्यकता थी क्योंकि अब देश को आगे बढ़ना है तो बहुत सारी रूकावटों से बाहर आना पड़ेगा। हमारे कई कानून तो ऐसे थे छोटे-छोटे कारणों से जेल में भर दो बस। यहां तक की फैक्ट्री है और उसके शौचालय को छह महीने में एक बार अगर व्हाइट पोस्ट नहीं किया तो उसके लिए जेल थी। वो कितनी बड़ी कंपनी का मालिक क्यों न हो। अब ये जो एक प्रकार की जो अपने आप को बड़े लेफ्ट लिबरल कहते हैं उन लोगों की ideology और देश में ये कुमार शाही का जमाना, उन सारों से मुक्ति दिलाने का हमें भरोसा होना चाहिए। वो करेगा लोगों के घरो में लीप पोत के। वो सोसाइयटी फ्लैट वाले लोग अपनी लिफ्ट नीचे ऊपर करते ही हैं। हर चीज कर लेते हैं। तो ये जो समाज पर नागरिक पर भरोसा करने का काम, बहुत तेजी से बढ़ाने का काम सत्रहवीं लोकसभा ने किया है। और भी चलिए- जन विश्वास एक्ट। मैं समझता हूं 180 से ज्यादा प्रावधान decriminalize करने का काम किया है। जो मैंने कहा छोटी-छोटी बात के लिए जेल में डाल देना। ये decriminalize करके हमनें नागरिक को ताकत दी है। वो इसी सदन ने किया है। कोर्ट के चक्कर से जिंदगी बचाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण काम कोर्ट के बाहर विवादों से मुक्ति उस दिशा में महत्वपूर्ण काम मध्यस्थता का कानून उस दिशा में भी बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। जो हमेशा हाशिये पर थे, किनारे पर थे, जिनको कोई पूछता नहीं था। सरकार होने का उनको एहसास हुआ है। हां सरकार अहम है जब कोविड में मुफ्त इंजेक्शन मिलता था ना, उसको भरोसा होता था चलिए जान बच गई। सरकार होने का उसको एहसास होता था और यही तो सामान्य मानवीय की जिंदगी में बहुत आवश्यक है। वो असहायता का अनुभव अब क्या होगा, ये स्थिति पैदा नहीं होनी चाहिए।

ट्रांसजेंडर समुदाय अपमानित महसूस करता था। और जब बार-बार वो अपमानित होता था तो उसके अंदर भी विकृतियों की संभावना बढ़ती रहती थी... और ऐसे विषयों से हम लोग दूर भागते थे। 17वीं लोकसभा के सभी माननीय सांसदों ने ट्रांसजेंडर्स के प्रति भी संवेदना जताई और उनके जीवन में भी बेहतरीन जिंदगी बने। और आज दुनिया के अंदर जब भारत ने ट्रांसजेंडर के लिए किए हुए काम और जो निर्णय किए हैं, इनकी चर्चा है। दुनिया को बड़ा, जब हम कहते हैं ना हमारे यहां... ईवन हमारी माता-बहनों के लिए प्रेगनेंसी के लिए 26 वीक की डिलीवरी के समय की छुट्टी... दुनिया के समृद्ध देशों को भी आश्चर्य होता है, अच्छा ! यानी ये progressive निर्णय यहीं पर हुए हैं, इसी 17वीं लोकसभा में हुए हैं। हमने ट्रांसजेंडर को एक पहचान दी है। अब तक करीब 16-17 हजार ट्रांसजेंडर को उनका identity card दिया गया है ताकि उनके जीवन को, और मैंने देखा है अब तो मुद्रा योजना से पैसे ले करके छोटा-मोटा वो बिजनेस करने लगी हैं, कमाने लगी हैं। पदमा अवार्ड हमने ट्रांसजेंडर्स को दिया है, एक सम्मान की जिंदगी जीने के लिए। सरकार से जुड़ी अनेक योजनाओं का लाभ उन्हें जब तक मिलता रहेगा, मिलना प्रारंभ हुआ है वो सम्मान की जिंदगी जीने लगे हैं।

बहुत विकट काल में हमारा समय गया क्योंकि डेढ़-दो साल कोविड ने हमारे ऊपर बहुत बड़ा दबाव किया था, लेकिन उसके बावजूद भी 17वीं लोकसभा देश के लिए बहुत उपकारक रही है, बहुत अच्छे काम किए हैं।

लोकतंत्र और भारत की यात्रा अनंत है। अनेक और ये देश किसी purpose के लिए है, उसका कोई लक्ष्य है वो पूरी मानव जाति के लिए है। ऐसे ही अरविंद ने देखा हो, चाहे स्वामी विवेकानंद जी ने देखा हो। लेकिन आज उन शब्दों में, उस विजन में सामर्थ्य था वो हम आंखों के सामने देख पा रहे हैं। दुनिया जिस प्रकार से भारत के महात्मय को स्वीकार कर रही है, भारत के सामर्थ्य को स्वीकारनें लगी है, और इसको, इस यात्रा को हमें और शक्ति के साथ आगे बढ़ाना है।

चुनाव बहुत दूर नहीं हैं। कुछ लोगों को थोड़ी घबराहट रहती होगी, लेकिन ये लोकतंत्र का सहज, आवश्यक पहलू है। हम सब उसको गर्व से स्वीकार करते हैं। हमारे चुनाव भी देश की शान बढ़ाने वाले, लोकतंत्र की हमारी जो परंपरा है, पूरे विश्व को अचंभित करने वाले अवश्य रहेंगे।

जब चुनौती आती है तो जरा और आनंद आता है। हर चुनौती का हम सामना कर पाए हैं, बड़े आत्मविश्वास और विश्वास के साथ हम चले हैं। राम मंदिर को ले करके इस सदन ने जो प्रस्ताव पारित किया है, वो देश की भावी पीढ़ी को, इस देश की मूल्य पर गर्व करने की संवैधानिक शक्ति देगा। भविष्य के रिकॉर्ड को देखेंगे तो जो व्याख्यान हुए हैं, जो बातें रखी गई हैं, उसमें संवेदना भी है, संकल्प भी है, सहानुभूति भी है और सबका साथ-सबका विकास के मंत्र को आगे बढ़ाने का उसमें तत्व भी है। ये देश, बुरे दिन कितने ही क्यों न गए हों, हम भावी पीढ़ी के लिए कुछ न कुछ अच्छा करते रहेंगे। ये सदन वो प्रेरणा देता रहेगा और सामूहिक संकल्प से, सामूहिक शक्ति से उत्तम से उत्तम परिणाम, भारत की नौजवान पीढ़ी की आशा-आकांक्षा के अनुसार करते रहेंगे। ▪

देश की विकास यात्रा में नारी-शक्ति के योगदान को नमन

8 मार्च 'महिला दिवस' विशेष दिन देश की विकास यात्रा में नारी-शक्ति के योगदान को नमन करने का अवसर होता है। महाकवि भरतियार जी ने कहा है कि विश्व तभी समृद्ध होगा, जब महिलाओं को समान अवसर मिलेंगे।

आज भारत की नारी-शक्ति हर क्षेत्र में प्रगति की नई ऊँचाइयों को छू रही है। कुछ वर्ष पहले तक किसने सोचा था कि हमारे देश में, गाँव में रहने वाली महिलायें भी ड्रोन उड़ाएंगी! लेकिन आज ये संभव हो रहा है।

हमेशा की तरह, इस बार भी हमें आपके ढेर सारे सुझाव, Inputs और comments मिले हैं। और हमेशा की तरह इस बार भी ये चुनौती है कि Episode में किन-किन विषयों को शामिल किया जाए। मुझे, Positivity से भरे एक से बढ़कर एक Inputs मिले हैं। इनमें बहुत सारे ऐसे देशवासियों का जिक्र है, जो दूसरों के लिए उम्मीद की किरण बनकर उनके जीवन में बेहतरी लाने में जुटे हुए हैं।

8 मार्च 'महिला दिवस' विशेष दिन देश की विकास यात्रा में नारी-शक्ति के योगदान को नमन करने का अवसर होता है। महाकवि भरतियार जी ने कहा है कि विश्व तभी समृद्ध होगा, जब महिलाओं को समान अवसर मिलेंगे। आज भारत की नारी-शक्ति हर क्षेत्र में प्रगति की नई ऊँचाइयों को छू रही है। कुछ वर्ष पहले तक किसने सोचा था कि हमारे देश में, गाँव में रहने वाली महिलायें भी ड्रोन उड़ाएंगी! लेकिन आज ये संभव हो रहा है। आज तो गाँव-गाँव में ड्रोन दीदी की इतनी चर्चा हो रही है, हर किसी की जुबान पर नमो ड्रोन दीदी, नमो ड्रोन दीदी ये चल पड़ा है। हर कोई इनके विषय में चर्चा कर रहा है। एक बहुत बड़ी जिज्ञासा पैदा हुई है और इसीलिए, मैंने भी सोचा कि क्यों ना इस बार 'मन की बात' में, एक नमो ड्रोन दीदी से बात की जाए। हमारे साथ इस वक्त नमो ड्रोन दीदी सुनीता जी जुड़ी हुई हैं, जो उत्तर प्रदेश के सीतापुर से है। आइए उनसे बात करते हैं।

मोदी जी : सुनीता देवी जी, आपको नमस्कार।

सुनीता देवी : नमस्ते सर।

मोदी जी : अच्छा सुनीता जी पहले मैं आपके विषय में जानना चाहता हूँ, आपके परिवार के विषय में जानना चाहता हूँ। थोड़ा कुछ बता दीजिये।

सुनीता देवी : सर, हमारे परिवार में दो बच्चे हैं, हम हैं, husband हैं, माता जी हैं मेरी।

मोदी जी : आपकी पढ़ाई क्या हुई सुनीता जी।

सुनीता देवी : सर, BA (Final) है।

मोदी जी : और वैसे घर में कारोबार वगैरह क्या है?

सुनीता देवी : कारोबार वगैरह खेती-बाड़ी सम्बंधित करते हैं, खेती वगैरह।

मोदी जी : अच्छा सुनीता जी, ये drone दीदी बनने का आपका सफर कैसे शुरू हुआ। आपको training कहाँ मिली, कैसे-कैसे बदलाव, क्या आया, मुझे, पहले से जानना है।

सुनीता देवी : जी सर, training हमारी फूलपुर IFFCO company में हुआ था इलाहाबाद में और वहीं से हमको training मिली है।

मोदी जी : तो तब तक आपने drone के विषय में सुना था कभी!

सुनीता देवी : सर, सुना नहीं था एक बार ऐसे देखे थे, कृषि विज्ञान केंद्र, जो सीतापुर का है, वहां पे हमने देखा था, पहली बार वहाँ देखा था हमने drone।

मोदी जी : सुनीता जी, मुझे ये समझना है कि मानो आप पहले दिन गए।

सुनीता देवी : जी।

मोदी जी : पहले दिन आपको drone दिखाया होगा, फिर कुछ board पर पढ़ाया गया होगा, कागज पर पढ़ाया गया होगा, फिर मैदान में ले जाकर practice, क्या-क्या हुआ होगा। आप मुझे समझा सकती हैं पूरा वर्णन।

सुनीता देवी : जी-जी सर, पहले दिन सर हम लोग जब गए हैं तब उसके दूसरे दिन से

हम लोगों की training शुरू हुई थी। पहले तो theory पढ़ाई गई थी फिर class चले थे दो दिन। class में drone में क्या क्या पार्ट हैं, कैसे-कैसे आपको क्या-क्या करना है - ये सारी चीजें theory में पढ़ाई गई थी। तीसरे दिन, सर, हम लोगों का पेपर हुआ था उसके बाद में फिर सर एक computer पे भी पेपर हुआ था मतलब पहले class चला उसके बाद में test लिया गया। फिर practical करवाया गया था हम लोगों का मतलब drone कैसे उड़ाना है कैसे-कैसे मतलब आपको control कैसे संभालना है हर चीज सिखाई गई थी practical के तौर में।

मोदी जी : फिर drone काम क्या करेगा, वो कैसे सिखाया?

सुनीता देवी : सर drone काम करेगा कि जैसे अभी फसल बड़ी हो रही है। बरसात का मौसम या कुछ भी ऐसे, बरसात में दिक्कत होती खेत में फसल में हम लोग घुस नहीं पा रहे हैं तो कैसे मजदूर अन्दर जाएगा, तो इसके माध्यम से बहुत फायदा किसानों को होगा और वहाँ खेत में घुसना भी नहीं पड़ेगा। हमारा drone जो हम मजदूर लगाकर अपना काम करते हैं वो हमारा drone से मेढ़ पे खड़े होके, हम अपना वो कर सकते हैं, कोई कीड़ा-मकोड़ा अगर खेत के अन्दर है उससे हमें सावधानी भी बरतनी रहेगी, कोई दिक्कत नहीं हो सकती है और किसानों को भी बहुत अच्छा लग रहा है। सर, हमने 35 एकड़ spray कर चुके हैं अभी तक।

मोदी जी : तो किसानों को भी समझ है कि इसका फायदा है?

सुनीता देवी : जी सर, किसानों को बहुत संतुष्ट होते हैं कह रहे हैं बहुत अच्छा लग रहा। समय का भी बचत होता है,सारी सुविधा आप खुद देखती हैं, पानी, दवा सब कुछ साथ-साथ में रखती है और हम लोगों को सिर्फ आकर खेत बताना पड़ता है कि कहां से कहां तक मेरा खेत है और सारा काम आधे घंटे में ही निपटा देती हूँ।

मोदी जी : तो ये drone देखने के लिए और लोग भी आते होंगे फिर तो?

सुनीता देवी : सर, बहुत भीड़ लग जाती है, ड्रोन देखने के लिए बहुत सारे लोग आ जाते हैं। जो बड़े बड़े farmers लोग हैं वो लोग नंबर भी ले जाते हैं कि हम भी आपको बुलाएँगे spray के लिए।

मोदी जी : अच्छा। क्योंकि मेरा एक मिशन है लखपति दीदी बनाने का, अगर आज देश भर की बहनें सुन रही हैं तो एक drone दीदी आज पहली बार मेरे साथ बात कर रही है, तो, क्या कहना चाहेंगी आप?

सुनीता देवी : जैसे आज मैं अकेले drone दीदी हूँ तो ऐसी ही हजारों बहनें आगे आएं कि मेरे जैसे drone दीदी वो भी बने और मुझे बहुत खुशी होगी कि जब मैं अकेली हूँ, मेरे साथ में और हजारों लोग खड़े होंगे, तो बहुत अच्छा लगेगा कि हम अकेले नहीं बहुत सारे लोग हमारे साथ में drone दीदी के नाम से पहचानी जाती हैं।

मोदी जी : चलिए सुनीता जी मेरी तरफ से आपको बहुत-बहुत बधाई। ये नमो drone दीदी, ये देश में कृषि को आधुनिक बनाने का एक बहुत बड़ा माध्यम बन रही है। मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

सुनीता देवी : Thank you, Thank you Sir.

मोदी जी :Thank You!

आज देश में कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिसमें देश की नारी-शक्ति पीछे रह गई हो। एक और क्षेत्र, जहाँ महिलाओं ने, अपनी नेतृत्व क्षमता का बेहतरीन प्रदर्शन किया है, वो है - प्राकृतिक खेती, जल संरक्षण और स्वच्छता। chemical से हमारी धरती माँ को जो कष्ट हो रहा है, जो पीड़ा हो रही है, जो दर्द हो रहा है - हमारी धरती माँ को बचाने में देश की मातृ-शक्ति बड़ी भूमिका निभा रही है। देश के कोने-कोने में महिलायें अब प्राकृतिक खेती को विस्तार दे रही हैं। आज अगर देश में 'जल जीवन मिशन' के तहत इतना काम हो रहा है तो इसके पीछे पानी समितियों की बहुत बड़ी भूमिका है। इस पानी समिति का नेतृत्व महिलाओं के ही पास है। इसके अलावा भी बहनें-बेटियाँ, जल संरक्षण के लिए चौतरफा प्रयास कर रही हैं। मेरे साथ Phone line पर ऐसी ही महिला है कल्याणी प्रफुल्ल पाटिल जी। ये महाराष्ट्र की रहने वाली हैं। आइए, कल्याणी प्रफुल्ल पाटिल जी से बात कर, उनका अनुभव जानते हैं।

प्रधानमंत्री जी – कल्याणी जी नमस्ते।

कल्याणी जी – नमस्ते सर जी, नमस्ते।

प्रधानमंत्री जी – कल्याणी जी, पहले तो आप अपने विषय में, अपने परिवार के विषय में, अपने कामकाज विषय में जरा बताइए।

कल्याणी जी – सर, मैं M.Sc. Microbiology हूँ और मेरे घर में मेरे पतिदेव, मेरी सास है और मेरे दो बच्चे हैं और तीन साल से मैं अपने ग्राम पंचायत में कार्यरत हूँ।

प्रधानमंत्री जी : और फिर गाँव में खेती के काम में लग गई? क्योंकि आपके पास basic knowledge भी है, आपकी पढ़ाई भी इस क्षेत्र में हुई है और अब आप खेती में जुड़ गई है, तो क्या-क्या नए प्रयोग किये हैं आपने?

कल्याणी जी : सर, हमने जो दस प्रकार के हमारी वनस्पति है उसको एकत्रित करके उससे हमने organic फवारणी (spray) बनाया जैसे कि जो हम pesticide वगैहरा spray करते तो उससे pest वगैरह जो हमारी मित्र कीट (pest) रहती है वो भी नष्ट हो रहे, और हमारी soil का pollution होता है जो तो तब chemical चीजे जो पानी में घुल-मिल रही हैं उसकी वजह से हमारी body पर भी हानिकारक परिणाम दिख रहे हैं उस हिसाब से हमने कम से कम pesticide का use कर के।

प्रधानमंत्री जी : तो एक प्रकार से आप पूरी तरह प्राकृतिक खेती की तरफ जा रही हैं।

कल्याणी जी : हाँ, जो अपनी पारंपरिक खेती है सर वैसे हमने की पिछले साल।

प्रधानमंत्री जी : क्या अनुभव आया

प्राकृतिक खेती में?

कल्याणी जी : सर, जो हमारी महिलाएं हैं, उनको जो खर्च है, वो, कम लगा और जो product हैं, सर, तो वो समाधान पाकर, हमने, without pest वो किया क्योंकि अब cancer के प्रमाण जो बढ़ रहे हैं जैसे शहरी भागों में तो है ही लेकिन गाँव में भी हमारी उसका प्रमाण बढ़ रहा है तो उस हिसाब से अगर आप अपने आगे के परिवार को अपने सुरक्षित करना है तो ये मार्ग अपनाना जरूरी है इस हिसाब से वो महिलाएं भी सक्रिय सहभाग इसके अन्दर दिखा रही हैं।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा कल्याणी जी आपने कुछ जल संरक्षण में भी काम किया है? उसमें क्या किया है आपने?

कल्याणी जी : सर rainwater harvesting जो हमारे शासकीय जितने भी इमारतें हैं जैसे कि प्राथमिक शाला हुई, आँगनबाड़ी हुआ, हमारी ग्राम पंचायत की जो building है, वहां के जो पानी है, बारिश का, वो, सब इकट्ठा करके हमने एक जगह पर collect किया हुआ है और जो recharge shaft है, सर, कि बारिश का पानी जो गिरता है, वो, जमीन के अन्दर percolate होना चाहिए, तो उस हिसाब से हमने 20 recharge shaft हमारे गाँव के अन्दर किये हुए हैं और 50 recharge shaft का sanction हो गया है। अब जल्दी ही उसका भी काम चालू होने वाला है।

प्रधानमंत्री जी : चलिए कल्याणी जी, आपसे बात करके बहुत खुशी हुई। आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

कल्याणी जी : सर धन्यवाद, सर धन्यवाद। मुझे भी आपसे बात करके बहुत खुशी हुई। मतलब मेरा जीवन सम्पूर्ण रूप से सार्थक हुआ, ऐसा मैं मानती हूँ।

प्रधानमंत्री जी : बस, सेवा कीजिए।

प्रधानमंत्री जी : चलिए, आप का नाम ही कल्याणी है, तो, आपको तो कल्याण करना ही करना है। धन्यवाद जी। नमस्कार।

कल्याणी जी : धन्यवाद सर। धन्यवाद।

चाहे सुनीता जी हो या कल्याणी जी, अलग-अलग क्षेत्रों में नारी-शक्ति की सफलता बहुत प्रेरक है। मैं एक बार फिर हमारी नारी-शक्ति की इस spirit की हृदय से सराहना करता हूँ।

हम सबके जीवन में technology का महत्व बहुत बढ़ गया है। Mobile Phone, Digital Gadgets हम सबकी जिन्दगी का अहम् हिस्सा बन गए हैं। लेकिन क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि Digital Gadgets की मदद से अब वन्य जीवों के साथ तालमेल बिठाने में भी मदद मिल रही है। 3 मार्च को 'विश्व वन्य जीव दिवस' है। इस दिन को वन्य जीवों के संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इस वर्ष World Wild Life Day की theme में Digital Innovation को सर्वोपरि रखा गया है। आपको ये जानकर खुशी होगी कि हमारे देश के अलग-अलग हिस्सों में वन्य-जीवों के संरक्षण के लिए technology का खूब उपयोग हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में सरकार के प्रयासों से देश में बाघों की संख्या बढ़ी है। महाराष्ट्र के चंद्रपुर के Tiger Reserve में बाघों की संख्या ढाई-सौ से ज्यादा हो गयी है। चंद्रपुर जिले में इंसान और बाघों के संघर्ष को कम करने के लिए Artificial Intelligence की मदद ली जा रही है। यहाँ गांव और जंगल की सीमा पर कैमरे लगाए गए हैं। जब भी कोई बाघ गांव के करीब आता है तब AI की मदद से स्थानीय लोगों को मोबाईल पर अलर्ट मिल जाता है। आज इस Tiger Reserve के आस-पास के 13 गांवों में इस व्यवस्था से लोगों को बहुत सुविधा हो गयी है और बाघों को भी सुरक्षा मिली है।

आज युवा entrepreneurs भी वन्य जीव संरक्षण और eco-tourism के लिए नए-नए innovation सामने ला रहे हैं। उत्तराखंड के रूड़की में Rotor Precision Groups ने Wildlife Institute of India के सहयोग से ऐसा drone तैयार किया है, जिससे केन नदी में घड़ियालों पर नजर रखने में मदद मिल रही है। इसी तरह बेंगलुरु की एक कंपनी ने 'बघीरा' और 'गरुड़' नाम का App तैयार किया है। बघीरा App से जंगल सफारी (SAFARI) के दौरान वाहन की speed और दूसरी गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती है। देश के कई Tiger Reserve में इसका उपयोग हो रहा है। Artificial Intelligence और Internet of things पर आधारित गरुड़ App को किसी CCTV से connect करने पर real time alert मिलने लगता है। वन्य-जीवों के संरक्षण की दिशा में इस तरह के हर प्रयास से हमारे देश की जैव विविधता और समृद्ध हो रही है।

भारत में तो प्रकृति के साथ तालमेल हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। हम हजारों वर्षों से प्रकृति और वन्य जीवों के साथ सह-अस्तित्व की भावना से रहते आये हैं। अगर आप कभी महाराष्ट्र के मेलघाट Tiger Reserve जाएंगे तो वहाँ स्वयं इसे अनुभव कर सकेंगे। इस Tiger Reserve के पास खटकली गांव में रहने वाले आदिवासी परिवारों ने सरकार की मदद से अपने घर को home

stay में बदल दिया है। ये उनकी कमाई का बहुत बड़ा साधन बन रहा है। इसी गांव में रहने वाले कोरकू जनजाति के प्रकाश जामकर जी ने अपनी दो हेक्टेयर जमीन पर सात कमरों वाला home stay तैयार किया है। उनके यहाँ रुकने वाले पर्यटकों के खाने-पीने का इंतजाम उनका परिवार ही करता है। अपने घर के आस-पास उन्होंने औषधीय पौधों के साथ आम और कॉफी के पेड़ भी लगाए हैं। इससे पर्यटकों का आकर्षण तो बढ़ा ही है, दूसरे लोगों के लिए भी रोजगार के नए अवसर बने हैं।

जब पशु-पालन की बात करते हैं, तो अक्सर गाय-भैंस तक ही रुक जाते हैं। लेकिन बकरी भी तो एक अहम् पशु-धन है, जिसकी उतनी चर्चा नहीं होती है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों में अनेकों लोग बकरी पालन से भी जुड़े हुए हैं। ओडिशा के कालाहांडी में बकरी पालन, गाँव के लोगों की आजीविका के साथ-साथ उनके जीवन स्तर को ऊपर लाने का भी एक बड़ा माध्यम बन रहा है। इस प्रयास के पीछे जयंती महापात्रा जी और उनके पति बीरेन साहू जी का एक बड़ा फैसला है। ये दोनों बेंगलुरु में Management Professionals थे, लेकिन इन्होंने break लेकर कालाहांडी के सालेभाटा गाँव आने का फैसला लिया। ये लोग कुछ ऐसा करना चाहते थे जिससे यहाँ के ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान भी हो, साथ ही वो सशक्त भी बनें। सेवा और समर्पण से भरी अपनी इसी सोच के साथ इन्होंने माणिकास्तु एग्रो की स्थापना की और किसानों के साथ काम

शुरू किया। जयंती जी और बीरेन जी ने यहाँ एक दिलचस्प माणिकास्तु Goat Bank भी खोला है। वे सामुदायिक स्तर पर बकरी पालन को बढ़ावा दे रहे हैं। उनके Goat Farm में करीब दर्जनों बकरियां हैं। माणिकास्तु Goat Bank, इसने, किसानों के लिए एक पूरा System तैयार किया है। इसके जरिए किसानों को 24 महीने के लिए 2 बकरियां दी जाती हैं। 2 वर्षों में बकरियां 9 से 10 बच्चों को जन्म देती हैं, इनमें से 6 बच्चों को बैंक रखता है, बाकी उसी परिवार को दे दी जाती है जो बकरी पालन करता है। इतना ही नहीं, बकरियों की देख-भाल के लिए जरूरी सेवाएँ भी प्रदान की जाती हैं। आज 50 गाँव के 1000 से अधिक किसान इस दंपत्ति के साथ जुड़े हैं। उनकी मदद से गाँव के लोग पशु-पालन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं। मुझे ये देखकर बहुत अच्छा लगता है कि विभिन्न क्षेत्रों में सफल Professionals छोटे किसानों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए नए-नए तरीके अपना रहे हैं। उनका यह प्रयास हर किसी को प्रेरित करने वाला है।

हमारी संस्कृति की सीख है -

'परमार्थ परमो धर्मः'

यानि दूसरों की मदद करना ही सबसे बड़ा कर्तव्य है। इसी भावना पर चलते हुए हमारे देश में अनगिनत लोग निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा करने में अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। ऐसे ही एक व्यक्ति हैं - बिहार में भोजपुर के भीम सिंह भवेश जी। अपने क्षेत्र के मुसहर जाति के लोगों के बीच इनके कार्यों की खूब चर्चा है। इसलिए मुझे लगा कि क्यों ना आज इनके बारे में भी आपसे बात की जाय। बिहार में मुसहर एक अत्यंत वंचित समुदाय रहा है, बहुत गरीब समुदाय रहा है। भीम सिंह भवेश जी ने इस समुदाय के बच्चों की शिक्षा पर अपना focus किया है, ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल हो सके। उन्होंने मुसहर जाति के करीब 8 हजार बच्चों का स्कूल में दाखिला कराया है। उन्होंने एक बड़ी Library भी बनवाई है, जिससे बच्चों को पढ़ाई-लिखाई की बेहतर सुविधा मिल रही है। भीम सिंह जी, अपने समुदाय के सदस्यों के जरूरी Documents बनवाने में, उनके Form भरने में भी मदद करते हैं। इससे जरुरी संसाधनों तक गाँव के लोगों की पहुँच और बेहतर हुई है। लोगों का स्वास्थ्य बेहतर हो, इसके लिए उन्होंने 100 से अधिक Medical Camp लगवाए हैं। जब कोरोना का महासंकट सिर पर था, तब, भीम सिंह जी ने अपने क्षेत्र के लोगों को Vaccine लगवाने के लिए भी बहुत प्रोत्साहित किया। देश के अलग-अलग हिस्सों में भीम सिंह भवेश जी जैसे कई लोग हैं, जो समाज में ऐसे अनेक नेक कार्यों में जुटे हैं। एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर हम इसी प्रकार अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे, तो यह, एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में बहुत ही मददगार साबित होगा।

भारत की सुन्दरता यहाँ की विविधता और हमारी संस्कृति के अलग-अलग रंगों में भी समाहित है। मुझे ये देखकर अच्छा लगता है कि कितने ही लोग निःस्वार्थ भाव से भारतीय संस्कृति के संरक्षण और इसे सजाने-सँवारने के प्रयासों में जुटे हैं। आपको ऐसे लोग भारत के हर हिस्से में मिल जाएंगे। इनमें से बड़ी संख्या उनकी भी है, जो, भाषा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में गान्दरबल के मोहम्मद मानशाह जी पिछले तीन दशकों से गोजरी भाषा को संरक्षित करने के प्रयासों में जुटे रहे हैं। वे गुज्जर बकरवाल समुदाय से आते हैं जो कि एक जनजातीय समुदाय है। उन्हें बचपन में पढ़ाई के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ा था, वो रोजाना 20 किलोमीटर की दूरी पैदल तय करते थे। इस तरह की चुनौतियों के बीच उन्होंने Masters की Degree हासिल की और ऐसे में ही उनका अपनी भाषा को संरक्षित करने का संकल्प दृढ़ हुआ।

साहित्य के क्षेत्र में मानशाह जी के कार्यों का दायरा इतना बड़ा है कि इसे करीब 50 संस्करणों में सहेजा गया है। इनमें कविताएं और लोकगीत भी शामिल हैं। उन्होंने कई किताबों का अनुवाद गोजरी भाषा में किया है।

अरुणाचल प्रदेश में तिरप के बनवंग लोसू जी एक टीचर हैं। उन्होंने वांचो भाषा के प्रसार में अपना अहम योगदान दिया है। यह भाषा अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और असम के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। उन्होंने एक Language school बनवाने का काम किया है। इसके वांचो भाषा की एक लिपि भी तैयार की है। वो आने वाली पीढ़ियों को भी वांचो भाषा सिखा रहे हैं ताकि इसे लुप्त होने से बचाया जा सके।

हमारे देश में बहुत सारे ऐसे लोग भी हैं, जो गीतों और नृत्यों के माध्यम से अपनी संस्कृति और भाषा को संरक्षित करने में जुटे हैं। कर्नाटका के वेंकप्पा अम्बाजी सुगेतकर उनका जीवन भी इस मामले में बहुत प्रेरणादायी है। यहां के बागलकोट के रहने वाले सुगेतकर जी एक लोक गायक हैं। इन्होनें 1000 से अधिक गोंधली गाने गाए हैं, साथ ही, इस भाषा में, कहानियों का भी खूब प्रचार- प्रसार किया है। उन्होंने बिना फीस लिए, सैकड़ों विद्यार्थियों, को Training भी दी है। भारत में उमंग और उत्साह से भरे ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो, हमारी संस्कृति को, निरंतर समृद्ध बना रहे हैं। आप भी इनसे प्रेरणा लीजिये, कुछ अपना करने का प्रयास करिए। आपको बहुत संतोष का अनुभव होगा।

वाराणसी में मैंने एक बहुत ही शानदार फोटो प्रदर्शनी देखी। काशी और आसपास के युवाओं ने कैमरे पर जो Moment capture किए हैं, वो, अद्भुत हैं। इसमें काफी फोटोग्राफ ऐसी हैं, जो मोबाईल कैमरे से खींची गई थी।

वाकई, आज जिसके पास मोबाईल है, वो एक content creator बन गया है। लोगों को अपना हुनर और प्रतिभा दिखाने में social media ने भी बहुत मदद की है। भारत के हमारे युवा-साथी content creation के क्षेत्र में कमाल कर रहे है। चाहे कोई भी social media platform हो, आपको अलग-अलग विषयों पर अलग-अलग content share करते हमारे युवा साथी मिल ही जाएंगे। Tourism हो, social cause हो, Public participation हो या फिर प्रेरक जीवन यात्रा, इनसे जुड़े तरह-तरह के contents social media पर मौजूद हैं। Content create कर रहे देश के युवाओं की आवाज आज बहुत प्रभावी बन चुकी है। उनकी प्रतिभा को सम्मान देने के लिए देश में National Creators Award शुरू किया गया है। इसके तहत अलग-अलग categories में उन change makers को सम्मानित करने की तैयारी है, जो सामाजिक परिवर्तन की प्रभावी आवाज बनने के लिए Technology का उपयोग कर रहे हैं। यह contest MyGov पर चल रहा है और मैं content creators को इससे जुड़ने के लिए आग्रह करूँगा। आप भी अगर ऐसे interesting content creators को जानते हैं, तो उन्हें National Creators Award के लिए जरुर nominate करें।

कुछ दिन पहले ही चुनाव आयोग ने एक और अभियान की शुरुआत की है -

'मेरा पहला वोट - देश के लिए'।

इसके जरिए विशेष रूप से first time voters से अधिक-से-अधिक संख्या में मतदान करने का आग्रह किया गया है। भारत को, जोश और ऊर्जा से भरी अपनी युवा शक्ति पर गर्व है। हमारे युवा-साथी चुनावी प्रक्रिया में जितनी अधिक भागीदारी करेंगे, इसके नतीजे देश के लिए उतने ही लाभकारी होंगे। मैं भी First time voters से आग्रह करूंगा कि वे record संख्या में वोट करें। 18 का होने के बाद आपको 18वीं लोकसभा के लिए सदस्य चुनने का मौका मिल रहा है। यानि ये 18वीं लोकसभा भी युवा आकांक्षा का प्रतीक होगी। इसलिए आपके वोट का महत्व और बढ़ गया है। आम चुनावों की इस हलचल के बीच, आप, युवा, ना केवल, राजनीतिक गतिविधियों का हिस्सा बनिए, बल्कि, इस दौरान चर्चा और बहस को लेकर भी जागरूक बने रहिए। और याद रखिएगा -

'मेरा पहला वोट-देश के लिए'।

मैं देश के influencers को भी आग्रह करूँगा, चाहे वो खेल जगत के हों, फिल्म जगत के हों, साहित्य जगत के हों, दूसरे professionals हों या हमारे instagram और youtube के influencers हों, वो भी इस अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें और हमारे first time voters को motivate करें।

'मन की बात' के इस Episode में मेरे साथ इतना ही। देश में लोकसभा चुनाव का माहौल है और जैसा कि पिछली बार हुआ था, संभावना है कि मार्च के महीने में आचार-संहिता भी लग जाएगी। ये 'मन की बात' की बहुत बड़ी सफलता है कि बीते 110 Episode में हमने इसे सरकार की परछाई से भी दूर रखा है। 'मन की बात' में, देश की सामूहिक शक्ति की बात होती है, देश की उपलब्धि की बात होती है। ये एक तरह से जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा तैयार होने वाला कार्यक्रम है। लेकिन फिर भी राजनीतिक मर्यादा का पालन करते हुए लोकसभा चुनाव के इन दिनों में अब अगले तीन महीने 'मन की बात' का प्रसारण नहीं होगा। अब जब आपसे 'मन की बात' में संवाद होगा तो वो 'मन की बात' का 111वाँ Episode होगा। अगली बार 'मन की बात' की शुरुआत 111 के शुभ अंक से हो तो इससे अच्छा भला क्या होगा। आपको मेरा एक काम करते रहना है।

'मन की बात' भले तीन महीने के लिए रूक रहा है, लेकिन देश की उपलब्धियां थोड़ी रुकेंगी, इसलिए, आप 'मन की बात' hashtag (#) के साथ समाज की उपलब्धियों को, देश की उपलब्धियों को, social media पर डालते रहें। कुछ समय पहले एक युवा ने मुझे एक अच्छा सुझाव दिया था।

सुझाव ये कि 'मन की बात' के अब तक के Episode में से छोटे-छोटे video, YouTube shorts के रूप में share करना चाहिए। इसलिए मैं 'मन की बात' के श्रोताओं से आग्रह करूँगा कि ऐसे Shorts को खूब share करें। ▪

घोषणा

फार्म 4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन का स्थान	:	चरैवेति पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल 462016
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	एम.पी. प्रिन्टर्स, नोएडा
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	भारतीय
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	नोएडा (उ.प्र.)
4.	प्रकाशक का नाम	:	संजय गोविन्द खोचे
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	भारतीय
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	पं. दीनदयाल परिसर,
	पता	:	ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल 462016
5.	संपादक का नाम	:	संजय गोविन्द खोचे (संपादक)
	(क्या भारतीय नागरिक है)		भारतीय
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	पं. दीनदयाल परिसर,
	पता	:	ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल 462016
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचारपत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन, म. प्र. पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल 462016

मैं संजय गोविन्द खोचे एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांकः 01 मार्च 2024

हस्ताक्षर
संजय गोविन्द खोचे
प्रकाशक

समरसता का संदेश देता होली पर्व

भारत की संस्कृति में समरसता का संदेश है। होली के पर्व को रंग-गुलाल का पर्व भी माना जाता है। इस दिन होलिका दहन के बाद रंग-गुलाल की होली में सब समरस हो जाते है। इसमे न कोई छोटा बड़ा है न कोई भेदभाव रहता है। सब रंग-गुलाल की मस्ती में शामिल हो जाते है। धर्म संस्कृति के मूल में प्राणीमात्र के प्रति समभाव और सबको अपना मानने का संदेश है, होली पर्व श्रीकृष्ण भूमि मथुरा में धूम-धाम से मनाया जाता है।

प्रकृति में उल्लास मय वातावरण का प्रारम्भ वसंत के आगमन से शुरू हो जाता है। अब दिन धीर-धीरे बड़े होने लगते है, और पतझड़ भी आने लगता है। जब माघ माह की पूर्णिमा आती है, तभी होली का डंडा लगा देते है। आम पर बौर आने लगते है, वृक्षों में नई पत्तियों का आना शुरू हो जाती है। प्रकृति में नई आभा नजर आने लगती है। होली के आते ही नई रौनक, उत्साह, उमंग, तरंग और ऊर्जा दिखाई देने लगती है। होली सामाजिक, धार्मिक लोगों को जोड़ने का सामाजिक सद्भाव का और रंगों का त्यौहार हैं। इसे बच्चों से बुर्जुग तक बिना भेदभाव के उत्साह से मनाया जाता है। होलिका दहन में कंडे व लकड़ी का ढेर लगाकर होलिका पूजन किया जाता है, फिर उसमें आग लगाई जाती है। पूजा करते समय इसं मंत्र का उच्चारण करते हैं।

असृक्पामयसंत्रस्तै: कृता त्वं होलि बालिशै:।
अतस्त्वां पूजियिश्यामि भूते भूतिप्रदा भव।।

होली यज्ञपर्व है, खेत के उगे अन्न को यज्ञ में हवन करके लिया जाता है। जिसे 'होला' कहा जाता है। इसीलिये इसे होलिकोत्सव कहते है। इस त्यौहार को मनाने के सबंध में कई मत है। कुछ प्रमुख मत निम्न है।

होली सामाजिक, धार्मिक लोगों को जोड़ने का सामाजिक सद्भाव का और रंगों का त्यौहार हैं। इसे बच्चों से बुर्जुग तक बिना भेदभाव के उत्साह से मनाया जाता है।

1. मान्यता है कि होलिकोत्सव का संबंध 'कामदहन' से है। भगवान शिव ने अपनी क्रोधाग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया था। तभी से ये त्यौहार मनाया जाता हैं।
2. यह त्यौहार हिरण्यकश्यप की बहन की याद में भी मनाते है। मान्यता है कि हिरण्यकश्यप की बहन होलिका वरदान के प्रभाव से प्रतिदिन अग्नि स्नान करके भी सुरक्षित बिना जले रहती थी। हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन से प्रहलाद को गोदी में लेकर अग्नि स्नान हेतु कहा, ताकि प्रहलाद मर जाये। होलिका ने ऐसा ही किया, परन्तु प्रहलाद बच गये जबकि होलिका जल गई। तभी से होली मनाने की परम्परा हैं।
3. फाल्गुन शुक्ल की अष्टमी से पूर्णिमा तक आठ दिन होलाष्टक मनाया जाता है। हमारे देश के कई प्रदेशों में होलाष्टक शुरू होने पर एक पेड़ की शाखा काटकर उसमें रंग-बिरंगे कपड़ो के टुकड़े बाँधते है। इस शाखा को जमीन में गाड़ दिया जाता हैं। सभी लोग इसके आस-पास होलिकोत्सव मनाते हैं।
4. होली के समय आम की बौर और चन्दन को मिलाकर खाने का महात्म्य है। मान्यता है कि फाल्गुन पूर्णिमा के दिन हिंडोले में झूलते हुए श्री गोविन्द पुरूषोत्तम के दर्शन करने से बैकुण्ठ लोक में वास होता है।
5. भविष्यपुराण में है कि नारद जी ने महाराज युधिष्ठिर से कहा कि फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन सबको अभयदान देना चाहिये, जिससे सम्पूर्ण प्रजा उल्लासपूर्वक हँसे। बालक गाँव के बाहर लकड़ी कंडे लाकर ढेर लगाये। होलिका का पूर्ण सामग्री सहित विधिवत पूजन करें। होलिका दहन करें। ऐसा करने से अनिष्ट दूर होते है।

होली आनन्द मनाने का उत्सव है। इसमें उत्साह-उमंग है, पर कुछ बुराईयाँ भी आ गई है। लोग अबीर-गुलाल के स्थान पर कीचड़-गोबर-मिट्टी इत्यादि फेंकते हैं। नशा करते है, जिससे मित्रता की जगह शत्रुता पनपती है। इसका त्याग करना ही होली है। ये एकता, मित्रता, मिलन, भाईचारे का पर्व है। यही इसका उद्देश्य और संदेश हैं। ▪

पं. सलिल मालवीय

आत्मिक सुख की आवश्यकता

जब हम आगे देखते हैं, मानसिक सुख का विचार करते हैं तो पता चलता है कि मानसिक सुख भी केवल हमें दूसरों से ही प्राप्त होता है। दूसरों को सुखी देखकर हमें कुछ सुख का अनुभव होता है। यदि हम दूसरों को दुःखी देखते हैं तो हमें दुःख का अनुभव होता है। हंसते हुए देखकर हमें भी हंसी आ जाती है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

व्यक्ति को केवल शारीरिक सुख ही नहीं, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक सुख की भी लालसा रहती है और इस प्रकार सभी सुखों के साथ-साथ समन्वयात्मक ढंग से वह यदि प्राप्त कर सका, तभी वह अपने जीवन में वास्तविक सुख का अनुभव कर सकता है, अन्यथा एक प्रकार का सुख उसे यदि मिला और बाकी के सुखों से वह वंचित रहा तो पहले प्रकार का सुख भी उसको दुखकारक प्रतीत होता है। उस सुख का भी मूल्य समाप्त हो जाता है। अतएव हमारे सुख, हमारे जीवन के विविध पहलुओं को समान रूप से बढ़ाने वाले, समान रूप से आनंद देने वाले होने चाहिए।

कुछ व्यक्तियों की अपनी भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियां हैं, उनके भिन्न-भिन्न अंग हैं, वैसे यदि देखें तो वह किसी भी प्रकार का सुख प्राप्त नहीं कर सकता। सुख को प्राप्त करने के लिए दूसरों पर भी निर्भर रहना पड़ता है। हम बिल्कुल भौतिक दृष्टि से ही देखें- भोजन का प्रश्न आता है। अन्य भौतिक आवश्यकताएं हैं। तो पता चलता है कि अकेला व्यक्ति सभी भौतिक आवश्यकताएं पूरी नहीं कर सकता। स्वयं अन्न पैदा कर ले। स्वयं उसका आटा बनाए, स्वयं उसमें से खाना तैयार कर ले, ईंधन भी स्वयं ही इकट्ठा कर ले, उसके लिए जो बरतन आदि चाहिए, वह भी जुटा ले, तो यह वास्तविक स्थिति नहीं है। रॉबिन्सन क्रूसो का जो कुछ भी स्थान हम सबने पढ़ा होगा, उसने अपने ही प्रयत्न करके सब चीजें तैयार की। वह एक काल्पनिक जगत की बात है और वास्तव में उस व्यक्ति के प्रयत्न हैं कि जिस व्यक्ति ने समाज में अनेक वर्षों तक जीवन व्यतीत करके बहुत सी चीजें सीख ली थीं। अन्न कैसे उगाया जाता है, यह उसे मालूम था। मैदान कैसे बनाया जाता है, यह भी उसने देखा था। नाव कैसे बनाई जाती है, नाव कैसे तैरती है, यह वह अच्छी तरह से जानता था। सबका सब स्वयं उसने अपनी बुद्धि लगाकर अविष्कार किया। ऐसी तो कोई बात नहीं कि वह समाज से दूर हट गया होगा। उसने सब कुछ विचार स्वयं ही कर लिया होगा, ऐसा नहीं है।

वास्तविक जीवन में तो हम यही देखते हैं कि व्यक्ति दूसरों के ऊपर बराबर निर्भर रहता है। हम दूसरों पर निर्भर रहते हैं और जो कुछ दिखाई देता है वह इतना ही है कि एक व्यक्ति दूसरे के ऊपर निर्भर है। किसान जुलाहे के ऊपर निर्भर रहता है। वह उसे खाने के लिए अन्न देता है। डॉक्टर और शिक्षक एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। डॉक्टर के बच्चे को शिक्षक पढ़ाता है। शिक्षक के बच्चे को डॉक्टर बीमार पड़ने पर दवाई देता है। हम चारों ओर देखेंगे तो पता चलेगा कि हम सभी एक-दूसरे के ऊपर निर्भर हैं। एक-दूसरे के द्वारा हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। बिना एक-दूसरे के कोई एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता। कोई ऐसा सोचे कि मैं समाज से बिल्कुल अलग हटकर अपना ही विचार करके चलूंगा तो संभवतः वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकेगा। उसे संपूर्ण का विचार करना ही पड़ेगा। जब विचार करेगा तो प्रत्येक चीज में ढंग से अच्छी तरह से विचार करना ही पड़ेगा और यह विचार करना आना चाहिए।

जब हम आगे देखते हैं, मानसिक सुख का विचार करते हैं तो पता चलता है कि मानसिक सुख भी केवल हमें दूसरों से ही प्राप्त होता है। दूसरों को सुखी देखकर हमें कुछ सुख का अनुभव होता है। यदि हम दूसरों को दुःखी देखते हैं तो हमें दुःख का अनुभव होता है। हंसते हुए देखकर हमें भी हंसी आ जाती है। ऐसा कोई व्यक्ति होगा, जो बहुत बेरहम होगा। उसे किसी को रोते देखकर रोना नहीं आता और दूसरे को हंसता हुआ देखकर उसे हंसी नहीं आती। जबकि बहुत बार तो लोग दूसरे को देखकर रोना शुरू कर देते हैं। दूसरे के अंदर भय का भाव देखकर अपने अंदर भी भय भाव पैदा हो जाता है। दूसरों को पराक्रम करते हुए देखा तो लगता

है, अपने को भी पराक्रम करना चाहिए। अर्थात् ये भावनाएं सभी के अंदर रहती हैं।

कई बार ऐसा होता है कि हम किसी का विचार नहीं कर सकते। यहां तक कि हमारे पास सब प्रकार के सुख रहें। हमारे पास बहुत अच्छा भोजन है। हम भोजन करने के लिए बैठे हैं। बड़ी शांति और आनंद के साथ भोजन कर रहे हैं। कोई मांगने के लिए खड़ा हो जाए तो आपको इस भोजन में फिर आनंद ही नहीं आएगा। गाड़ी में आप भोजन करने के लिए बैठे, कोई भिखारी सामने से आ जाता है। ऐसा चेहरा बनाता है। एक तो गंदे कपड़े, आप उससे दूर हटने को भी कहोगे तो वह नहीं हटता। उस समय आप बिना दिए उससे छुटकारा नहीं पा सकते और जब तक आप दया करके उसे नहीं देंगे तो आपका आनंद ही चला जाएगा। इस प्रकार दूसरे के ऊपर हमारा यह मन का सुख सब प्रकार से अवलंबित रहता है।

कोई कहे कि नहीं हम तो मनमौजी हैं, अपने मन के अंदर हम सुखी रहेंगे, लेकिन इतने से काम नहीं चलेगा। किसी-न-किसी प्रकार सुख प्राप्त करने को दूसरे का सहारा हमें लेना ही पड़ेगा। बहुधा लोग उसी प्रकार का व्यवहार अपने आप करने लगते हैं। जैसे कि एक किस्सा है। एक जुलाहा था। उस जुलाहे की एक लड़की थी। एक बार लड़की झाड़ू लगाते-लगाते कुछ सोचने लगी। जैसे कुछ लोगों को कल्पना-लोक में विचरने की आदत होती है। वह भी कल्पना में खो गई। उसकी शादी पक्की हो चुकी थी, इसलिए वह इसी के बारे में सोचने लगी कि कुछ दिन बाद मेरी शादी हो जाएगी। मैं ससुराल चली जाऊंगी। कुछ दिन बाद मेरा बच्चा होगा। उसे खिलाएंगे, पिलाएंगे, घर में आनंद छा जाएगा। उसे कहीं लेकर जाएंगे तो वहां से रुपया मिलेगा, प्रेम मिलेगा। लेकिन फिर उसके मन में विचार आया कि अचानक कोई बीमारी गांव में फैलेगी। उस बीमारी में उसका बच्चा भी बीमार हो जाएगा। उसका इलाज कराया जाएगा। उसके बाद भी वह बच्चा नहीं बचेगा। बच्चा मर जाएगा। यही सोचकर उसके मन के अंदर से रोना छूटने लगा। वह रोने लगी। जब वह रोने लगी तो उसकी मां जो बाहर पानी भरने के लिए गई थी। उस समय वह लौटकर आई। उसे रोता हुआ देखकर वह भी रोने लगी। उस लड़की का भाई आया। उसे रोता देखकर वह भी रोने लगा। पिता आया सबको रोते देखकर उसे भी रोना आ गया। पड़ोसियों ने जब रोने की आवाज़ सुनी तो वे भी वहां आ पहुंचे। उन सबको रोते देखकर पड़ोसिन औरतें भी रोने लगीं। वहां भीड़ इकट्ठी हो गई। एक व्यक्ति ऐसा आया, जिसे जिज्ञासा हुई रोने का कारण जानने की। उसने पूछा कि ये सब क्यों रो रहे हैं? क्या कोई मर गया है? लेकिन किसी को भी कारण पता नहीं था। अंत में जुलाहे से पूछा कि क्या बात हो गई है? जुलाहे ने कहा कि मेरी पत्नी और बच्चे रो रहे थे तो मैं भी रोने लगा। उसकी पत्नी ने कहा कि यह लड़की रो रही थी। मैंने सोचा कि कहीं से मृत्यु का समाचार आया होगा, इसलिए मैं भी रोने लगी। उसके लड़के ने भी यही बताया। बाद में लड़की से पूछा गया कि तू क्यों रो रही थी? तब उसने कहा कि मेरा लड़का मर गया, मैं इसलिए रो रही थी। सभी ने उससे यही पूछा कि तेरा लड़का कहां है? उसने बताया कि मैं इस तरह सब सोच रही थी। तो यह तो एक किस्सा है। लेकिन वास्तव में भी मनुष्य दूसरे को देखकर स्वयं भी रो पड़ता है। इसीलिए किसी साहित्यकार ने कहा है कि समाज दर्पण के समान है। इस दर्पण के सामने जैसा चेहरा लेकर खड़े हो जाएंगे, वैसा ही उसमें दिखाई देगा। हंसता हुआ चेहरा लेकर खड़े हो जाएंगे तो हंसता हुआ चेहरा दिखेगा। समाज भी उसी प्रकार से उसकी प्रतिक्रिया करता है। आप हंसते हुए खड़े होंगे तो समाज भी आपको हंसता हुआ दिखेगा। रोते हुए खड़े होंगे तो समाज भी आपको रोता हुआ दिखाई देगा। इस प्रकार से मन का सारा सुख समाज के ऊपर निर्भर करता है।

अकेला कोई सोचे कि मैं अकेले ही सुख प्राप्त कर लूंगा तो अकेला मनुष्य कभी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। चार लोगों के साथ मिलकर ही सुख प्राप्त करेगा। कल्पना करें कि किसी के घर में विवाह है। उस विवाह में जितने ज्यादा लोग सम्मिलित होंगे, जितने ज्यादा मित्र आएंगे, उतना ही सुख बढ़ता चला जाएगा। लेकिन किसी का ऐसा विवाह हो कि विवाह में अकेले ही ब्याह करने चले गए, कोई दूसरा आया ही नहीं। न चार स्त्रियां वहां पर गीत गाने के लिए इकट्ठा हुईं और इस तरह यदि किसी का विवाह हुआ तो कोई क्या कहेगा कि यह विवाह काहे का रहा। आनंद तो है वहां, जहां चार लोग इकट्ठा होते हैं।

इसी तरह चार सुखी लोग इकट्ठा होंगे तो समाज का सुख बढ़ जाता है। इसी तरह दुःख के विषय में भी है। किसी के यहां मृत्यु हो जाए। वह अकेला ही बैठकर रोता रहे। कोई उसके यहां दुःख बांटने न आए। तब दुःख बढ़ जाता है। यदि कोई उसके पास आकर उसके दुःख का कारण पूछे या उसके रोने के साथ थोड़ा रो दे तो उसका दुःख कम हो जाता है। मृत्यु होने पर उसकी शमशान-यात्रा में लोग हजारों की संख्या में सम्मिलित हो जाएं तो उसके घर वालों का दुःख उतना ही कम हो जाता है और यदि कहीं पर सुख का मौका है तो वहां भी हजारों लोग इकट्ठा होते हैं। थोड़ी सी परेशानी उनका इंतजाम करने में हो सकती है, लेकिन सुख तो बढ़ जाता है।

इस प्रकार दुःख बांटने से दुःख कम हो जाता है और सुख बांटने से सुख में बढ़ोत्तरी होती है। जो व्यक्ति अकेला रहता है, उसको भय लगता है। अकेलेपन का भय। इस बारे में अपने यहां एक कहावत है कि दो तो मिट्टी के भी भले। वे मिट्टी के होंगे, लेकिन कम-से-कम दो तो होंगे। इसी तरह आप किसी जंगल में जाइए तो आप अकेले जाएंगे तो आपको डर लगेगा। लेकिन आपको कोई दूसरा साथी मिल जाए तो आपको बिल्कुल भी डर नहीं लगेगा। एक तरह का धैर्य मन में बैठ जाता है कि मैं अकेला नहीं हूं। ▪

सत्ता

अटल बिहारी वाजपेयी

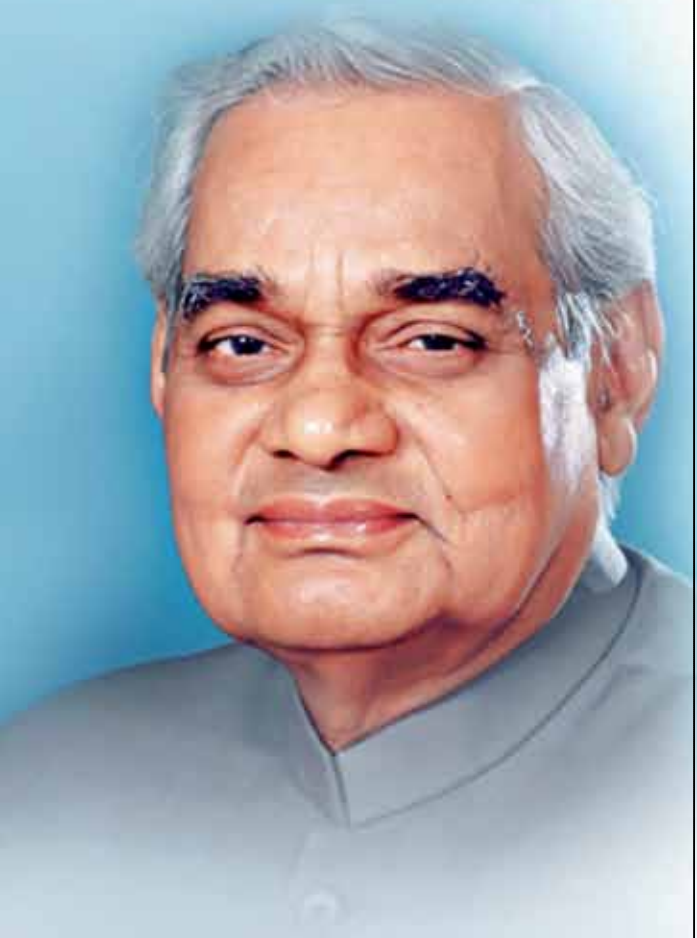

मासूम बच्चों,
बूढ़ी औरतों,
जवान मर्दों,
की लाशों के ढेर पर चढ़ कर
जो सत्ता के सिंहासन तक पहुंचना चाहते हैं
उनसे मेरा एक सवाल है:
क्या मरने वालों के साथ
उनका कोई रिश्ता न था?

न सही धर्म का नाता,
क्या धरती का भी संबंध नहीं था?
'पृथ्वी माँ और हम उसके पुत्र हैं।'
अथर्ववेद का यह मंत्र
क्या सिर्फ जपने के लिए है,
जीने के लिए नहीं?

आग में जले बच्चे,
वासना की शिकार औरतें,
राख में बदले घर
न सभ्यता का प्रमाण पत्र हैं,
न देश-भक्ति का तमगा,
वे यदि घोषणा-पत्र हैं तो पशुता का,
प्रमाण हैं तो पतितावस्था का,
ऐसे कपूतों से
मां का निपूती रहना ही अच्छा था,
निर्दोष रक्त से सनी राजगद्दी,
श्मशान की धूल से भी गिरी है,
सत्ता की अनियंत्रित भूख
रक्त-पिपासा से भी बुरी है।
पांच हजार साल की संस्कृति :
गर्व करें या रोएँ?

स्वार्थ की दौड़ में
कहीं आजादी फिर से न खोएँ।

- प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी, प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने उज्जैन में लोकसभा चुनाव कार्यालय का उद्घाटन किया।

- प्रदेश भाजपा कार्यालय में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने पूजन कर लोकसभा चुनाव प्रबंधन कार्यालय का उद्घाटन किया।

- प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने गांव चलो अभियान के तहत तंबोलिया गांव में दीवार लेखन किया।

- प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने लाभार्थी संपर्क अभियान की कार्यशाला को संबोधित किया।

- प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने ग्राम आवन से गांव चलो अभियान की शुरूआत की।

- प्रदेश कार्यालय में प्रदेश चुनाव समिति की बैठक आयोजित की गई।

- प्रदेश कार्यालय में क्लस्टर प्रभारी एवं लोकसभा विस्तारकों की बैठक आयोजित की गई।